खंड VI अंक 3 व 4

चैतन्य लहरी

हिन्दी आवृत्ति

"शेष सभी इच्छाएं महत्वहीन हैं। उत्थान की इच्छा ही सर्वोपरि है। यह आपके हित के लिए है और आप ही के हित में पूरे विश्व का हित निहित है।"

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी

चैतन्य लहरी

विषय सूची

1.	प्रार्थना	1
2.	सहस्रार आत्मा – दिल्ली 16.2.1985	2
3.	श्री राज राजेश्वरी पूजा – हैदराबाद 21.1.1994	13
4.	श्री गणेश पूजा – दिल्ली 05.12.1993	19
5.	जन्म दिवस पूजा – दिल्ली 30.3.1990	25
6.	हमारे जीवन का लक्ष्य (नवरात्रि पूजा – पुणे 16.10.1988	31

सम्पादक : श्री योगी महाजन

मुद्रक एवं प्रकाशक : श्री विजय नाल गिरकर
162, मुनिरका विहार,
नई दिल्ली-110067

मुद्रित : प्रिन्टेक फोटोटाईपसैटर्स,
35, राजेन्द्र नगर मार्केट,
नई दिल्ली-110060.
फोन : 5710529, 5784866

प्रार्थना

श्री माता जी के चरण कमलो में

प्रेम अपना दो हमें,
करूणा परस्पर जाग जाए।
नम्रता का दान दो,
कटुता न हममें स्थान पाए।।
सम्मान भाव से पूर्ण हों,
न दूसरों को तुच्छ माने।
करें कार्य हृदय पूर्वक,
आत्म विश्वास हममें डालें।।
पूर्ण सन्तोष प्रदान कर दें,
आकांक्षा रहे मात्र उत्थान की।
माँ क्षमा दान दें,
समर्थ आपको समझने की हम में नहीं।।
दें सूक्ष्म को समझने की संवेदनशीलता,
हृदय में सदा आप महसूस हों।
पावन हृदय रखें हम सदा,
हृदय में श्री चरण सदा साथ हों।।

"सहस्रार आत्मा"
दिल्ली – 16.2.1985

सत्य के खोजने वाले सभी साधकों को हमारा प्रणाम।

आज का मधुर संगीत आज के विषय से बहुत सम्बन्धित है जिसके लिए मैं देबू चौधरी को बहुत-बहुत धन्यवाद देती हूँ। सभी सहज व्यवस्था हो जाती है और आज संगीत में जो आपने सात स्वरों का खेल देखा, हमारे अंदर भी ऐसा ही सुन्दर संगीत निर्माण हो सकता है। यह जो कुण्डलिनी के सात चक्र आप देख रहे हैं वे हैं मूलाधार चक्र, मूलाधार, स्वाधिष्ठान, नाभि, हृदय, विशुद्धि, आज्ञा और सहस्रार। इसके अलावा हमारे अन्दर सूर्य और चन्द्र के भी चक्र हैं। ब्रह्मरन्ध्र को छेदने के बाद भी तीन और चक्र हमारे अन्दर हैं और कार्य करते हैं जिन्हें हम अर्धबिन्दु, बिन्दु और वलय कहते हैं। यह सारे हमारे अन्दर स्वर हैं। जैसे "स" से शुरू करें तो "सा रे गा मा पा धा नी" सहस्रार पर "नी" जाकर पहुँचता है। इसी प्रकार इन सब चक्रों को शक्ति देने वाले ऐसे ग्रह भी हैं। जैसे मूलाधार पर मंगल, स्वाधिष्ठान पर बुद्ध, नाभि पर गुरु, हृदय पर शुक्र, विशुद्धि पर शनि, आज्ञा पर सूर्य और सहस्रार पर सोमवार जो कि शिवजी या देवी का स्थान माना जाता है, आदि शक्ति का। इसी प्रकार हमारे नव ग्रह भी इन चक्रों पर वास करते हैं। इसका मतलब यह है कि जो कुछ भी ओंकार श्री गणेश से प्रगट है, वह सारा ही एक ही सुर एक ही ताल में पूर्णतः बद्ध हो कर के एक सुन्दर संगीत का साज परमात्मा ने हमारे अन्दर तैयार रखा है। इसको छेदने के लिए ही कुण्डलिनी कार्यान्वित होती है। जब कुण्डलिनी इन चक्रों को छेदती हुई ब्रह्मरन्ध्र तक पहुँचती है, उसके उत्थान से हर चक्र में न जाने कितनी ही गतिविधियाँ हो जाती हैं। बहुत-से लोग सोचते हैं और कहते भी हैं कि माँ यह इतना सरल कैसे? सरल तो ऐसे है कि जितनी भी जीवन्त क्रियायें हैं, सब बिल्कुल ही सहज हैं। एक बीज में अंकुर भी सहज ही आता है लेकिन जो हम रोज देखते हैं, उसके प्रति कोई भी प्रश्न खड़ा नहीं होता। उसे हम मान लेते हैं। जैसे कि आपके श्वास की क्रिया जो है, यह कितनी सहज है। उसके लिए अगर आपको किसी गुरु के पास जाना पड़े या कुछ ग्रन्थ पढ़ना पड़े या किसी लाइब्रेरी में जाना पड़े तो कितने लोग जीवित रहेंगे? यह हृदय का जो स्पन्दन है– अनहद, हर घड़ी अपने आप ही कार्यान्वित रहता है। उसको चलाने के लिए अगर हमें बाह्य से कोई उपचार करना पड़ता तो कितने लोग इस संसार में जीवित पैदा होते? ऐसी अनेक चीजें जो जीवन्त हैं, हम देखते हैं। फूल खिलते हैं अपने आप और इनके फल भी हो जाते हैं अपने आप। यह ऋतम्भरा प्रज्ञा है जिसने इस पूरी सृष्टि को आशिर्वादित किया है, वह यह सारे जीवन्त कार्य हर क्षण, हर पल करती रहती है। इतना ही नहीं, इसका चयन इतना अद्वितीय है कि उसका अनुमान हम अपनी मानवीय बुद्धि से नहीं लगा सकते हैं। माने एक आम के पेड़ में सिर्फ आम ही लग सकता है। एक हिन्दुस्तानी के घर एक हिन्दुस्तानी ही पैदा होता है। मेरा मतलब यह नहीं है कि हिन्दुस्तानी कोई ब्राण्ड लेकर आता है। लेकिन उसकी शक्ल-सूरत से आप जानते हैं कि यह हिन्दुस्तानी है। यह जो चयन है, यह जो चुनाव है, यह कितने गहन और कितने गणित से बने हैं, इसका अन्दाजा हमारे दिमाग में आ ही नहीं सकता। जैसे कि मैंने पहले कहा था कि यह सिर्फ एक ही हो सकता है कि जो सृष्टि में प्रेम है उसे हम सागर में ढाल सकते हैं। सागर से एकाकार होने पर सारी की सारी शक्तियों को देख सकते हैं, जान सकते हैं और उसका आनन्द भी लूट सकते हैं। यही कार्य यह कुण्डलिनी करती है। लेकिन इसकी साज़ की व्यवस्था इतनी सुन्दर है कि सारे स्वर जा कर अन्त में अपने मस्तिष्क में, मूलाधार से लेकर सहस्रार तक सातों के सातों, जिन्हें हम कहते हैं कि चक्रों के पीठ, पूरी तरह से अपने कार्य में संलग्न हैं। यह सात चक्र जो हम नीचे देखते हैं, इनके पीठ हमारे मस्तिष्क में हैं।

यह सारा कुछ तो आप किताबों से जान सकते हैं। लेकिन जिसने आपको बनाया उसका आप कमाल देखिये। सात स्वर बनाने के बाद उसके जो पीठ हैं, उसके हर एक स्वर का निनाद, इन सात पीठों से बने हुए इस मस्तिष्क में इस तरह से घुमाया जाता है। इसकी जो शक्ति है उसको किस तरह से एक सुन्दर-सुगठित ताल बद्ध स्वर में अलापा जाता है। यह एक कमाल की चीज है जिसे देखते ही बनता है।

इस कमाल को हम इसलिए नहीं देख पाते कि हमारी दृष्टि ही बाहर की ओर है। अगर कहा जाए कि आप अन्दर की ओर दृष्टि ले जायें तो आप कहेंगे कि यह कैसे करें माँ? यह तो मुश्किल काम है। आप इस वक्त मेरी बात सुन रहे हैं। आपका सारा चित्त मेरी ओर है। लेकिन अगर कोई घटना घटित हो जाती है, तो आपका चित्त वहां आकर्षित हो जाता है। इसी प्रकार कुण्डलिनी का जागरण जब होता है, तो जो आपका चित्त बाह्य में फैला हुआ है, वह एकदम अन्दर की तरफ दौड़ता है और जैसे एक कपड़ा बाहर से एक कपड़ा चारों तरफ फैला हुआ है और उसके अन्दर से कोई चीज उसे ढकेलती हुई उसे इस तरफ से उस तरफ ले जाती है, इस प्रकार कुण्डलिनी सहस्रार पर आने पर उसे चाक करती है। लेकिन उसका चाक करना भी इतना सुन्दर है कि जब वह भेदन होता है तो उस कुण्डलिनी का प्रकाश चारों तरफ फैल जाता है। जो कहा है "राम नाम रस भीनी"। वह चदरिया जो कि हमारे चित्त की है, उसमें सत्य का प्रकाश फैल जाता है। अब यह उसकी सुन्दर रचना है कि हृदय चक्र बराबर यहाँ बीचोंबीच हैं, जहाँ पर कि हमारा ब्रह्मरन्ध्र छेदन होता है। **ब्रह्मरन्ध्र का छेदन उस जगह है, जहाँ हमारा हृदय है। इसका मतलब यह है कि हमारे हृदय में जब तक परमात्मा को पाने की इच्छा नहीं होगी, तब तक यह भेदन ठीक नहीं होगा।** सारा काम हृदय का है। यह समझने की बात है। आप लोगों ने बुद्धि से मेरी बात को समझ लिया। बुद्धि से समझने की बात ठीक है। लेकिन जब तक यह हृदय से संचालित नहीं होगी, तब तक यह हृदय से प्लावित नहीं होगी, तब तक हमारे अंग-अंग में यह बसने वाली चीज नहीं है। लेकिन हृदय में है हमारी आत्मा का स्थान। इसीलिए यह समझ लेना चाहिए कि हृदय को छेदने के लिए पहले हम अपने हृदय को खोल लें। इस हृदय में आत्मा का वास है जिसके ऊपर सात रंगों में इन सात पीठों का प्रकाश फैला हुआ है। इतना निकट का सम्बन्ध हमारे इस मस्तिष्क का, हमारे इस ब्रेन का और इस हृदय का है।

लेकिन आज हमारा हृदय एक तरफ काम करता है, शरीर दूसरी तरफ काम करता है और बुद्धि तीसरी तरफ। इसमें कोई समग्रता नहीं है। समग्र माने सब अंगों में से एक ही सूत्र जाना चाहिए। इसमें कोई संघटन नहीं है। इसलिए हम अपने से ही रोज लड़ते हैं। अपने से ही रोज़ झगड़ा रहता है। किसी का एक चक्र अच्छा है तो दूसरा खराब, दूसरा अच्छा है तो तीसरा बिल्कुल कमजोर हो चुका है और चौथा बेकार हो चुका है। इन चक्रों की लड़ाई में ही सब तरह की दुविधा, परेशानियाँ, चिन्ता, बीमारियाँ आ जाती हैं। यह सारे चक्र भी पंच महाभूतों से, एलिमैन्ट से बने हैं। यह सारे के सारे चक्र जिन पीठों से संचालित होते हैं, गवर्न होते हैं, वह पीठ हमारे मस्तिष्क में है और हमारे मस्तिष्क के ही सैन्ट्रल नर्व्स के साथ इन सारे चक्रों का चलन-वलन हो सकता था लेकिन होता नहीं है। पैरासिंथैटिक नर्व्स सिस्टम से ही हम इन चक्रों को संचालित करते हैं। जब तक हम पैरासिम्पैथेटिक पर प्रभुत्व न जमा लें, जब तक हमारा सम्बन्ध आटोनॉमस सिस्टम (स्वचालित प्रणाली) जिसको हम नहीं चला सकते, ऐसी स्वयं चालित के स्वयं पर अपना जोर न जमा लें तब तक न हम बदल सकते हैं न दुनिया बदल सकती है। बाह्य से आप किसी चीज को ठीक कर लें। किसी पेड़ में अगर कोई खराबी हो जाये और आप अगर किसी पत्ते को ट्रीटमैन्ट दे दें तो शायद वह थोड़ी देर के लिए ठीक भी हो जाये। लेकिन असली बीमारी उसके जड़ में हैं और उसके अन्दर जो रस, रिसता है, जब तक उसको आप दवा नहीं देंगे, तब तक वह पेड़ आप बचा नहीं सकते। इतना ही नहीं इन सातों पीठों का यहाँ सम्मेलन है। यहाँ तीन जो शक्तियां हमारे अन्दर प्रवाहित हैं– हमारी इच्छाशक्ति, क्रियाशक्ति और धर्मशक्ति जिनसे हमारा क्रान्ति का पथ बनता है, जिससे हम रिवोल्यूशनरी प्रोसेस में जाते हैं, यह तीनों ही शक्तियां एकत्रित हो जाती हैं। इस प्रकार इस मस्तिष्क में सात चक्रों और तीन शक्तियों का समन्वय होता है। लेकिन उनमें रिलेशनशिप उनकी दोस्ती मात्र होती है, एकीकरण (इन्टीग्रेशन) नहीं होता, समग्रता नहीं होती। जैसे कि एक ही स्वर में, एक ही ताल पर सातों स्वर नाचें, ऐसी स्थिति तब आती है जब एक ही छिद्र से कुण्डलिनी, डोर की तरह पिरोई जाती है। इस तरह से पूरी तरह से भेदन करती हुई सहस्रार को भेद देती है।

सहस्रार के बारे में जितना भी कहा जाए कम है। 'सहस्रार' जो हमारा आखिरी चक्र है, उसमें एक हजार पंखुड़ियां हैं जो कि वास्तव में हमारे अंदर एक हजार नाड़ियां हैं– डॉक्टर लोग जिस पर कभी-कभी बड़ा झगड़ा उठाते हैं कि नहीं ९८२ हैं या कुछ हैं। वह तो बिल्कुल हृदयहीन बातें हैं जिनमें कोई सुर नहीं, माधुर्य नहीं। एक हजार इसमें पंखुड़ियां हैं जो कि इन नाड़ियों को तेजोमय करती हैं। यह ऐसे दिखाई देती हैं जैसे कि किसी कमल पुष्प में एक हजार पंखुड़ियां हैं और वे पंखुड़ियां सजीव हो कर के और बड़ी सुन्दरता से उनका प्रकाश आपस में झिलमिल होता है। अत्यन्त शान्त ऐसी यह तेजोवलय से भरी हैं,

तेजपुन्ज ज्योतियां जैसे कि पंखुड़ियां हों। इस तरह से प्रकाशित हो कर आन्दोलन करती रहती हैं। इस आन्दोलन से जो हमारे अन्दर आनन्द निर्माण होता है, उसे निरानन्द कहते हैं। निरानन्द माने केवल आनन्द। एब्सोल्यूट ज्वायॅ। उसमें कोई दूसरी चीज नहीं होती है। आनन्द में दो चीज सुख और दुख नहीं होते, केवल आनन्द मात्र होता है और वह मौन ही में जाना जा सकता है जैसे कबीरदास जी ने कहा था ''जब मस्त हुए फिर क्या बोलें''। वह जो एक श्रेष्ठों की, योगियों की स्थिति है।

इस निरानन्द स्थिति में उतारने के लिए जब कुडलिनी तत्पर है जो सिर्फ थोड़ी-सी सहायता करने से आपको उस ओर पहुचा सकती है जहाँ उस निरानन्द का सागर आपके सम्मुख लहलहाता है। इतनी काव्यमय कुण्डलिनी की शक्ति है, इतना सुन्दर उसका चलन-चालन है कि देखते ही बनता है। हालांकि कुछ-कुछ लोगों में मैं देखती हूँ कि कुण्डलिनी आहत है, आहत स्थिति में कुण्डलिनी है। कहीं-कहीं देखती हूँ कि जैसे कोई कमजोर माँ छटपटाती हुई किसी तरह से अपने बच्चे को पुनर्जन्म देने के लिए धीरे-धीरे उठती है, गिरती है, उठती है, गिरती है। इस प्रकार यह कुण्डलिनी बेचारी जो हजारों जन्म से आपके साथ थी और आज फिर आपके साथ है, पूर्णतः प्रयत्न करती है कि किसी तरह मेरे बच्चे को उसका जन्म मिल जाय। यह करूणामयी माँ प्रेममयी है। यह आपको किसी तरह से तकलीफ कैसे दे सकती है। जिसने हजारों वर्षों से यही प्रतीक्षा की कि मेरा बेटा किसी न किसी दिन इस शुद्ध इच्छा को पूरी करेगा और इस योग को प्राप्त करेगा। वह आपको किसी प्रकार से भी दुख नहीं देती। लेकिन जैसे मैंने आपको बताया कि दुनिया में इतने कटु लोग हैं कि शुद्ध और उच्च चीजों के प्रति भी उनमें कोई आदर नहीं है। उनको किसी भी चीज के प्रति आदर नहीं है। वास्तव में यह लोग स्वयं का भी आदर नहीं करते। इसलिए यह समझ ही नहीं सकते कि संसार में कोई चीज उच्च हो सकती है या ऐसी कोई विशाल या महान चीज हो सकती है जो पूर्णतः पवित्र हो।

हमारे सामने इतने सन्तों का उदाहरण होते हुए भी हम लोग भूल जाते हैं कि जब वे इस संसार में आये तो वे अपने लिये नहीं आये क्योंकि उनको क्या करना था? वह सब कुछ पाये हुए थे। वे कुछ देने के लिए हमारे पास आये और जो कुछ उन्होंने देना था, वह हमारे अन्दर, हमारे शरीर के अन्तर्गत कर दिया। सिर्फ उसकी जानकारी हमें नहीं है। बाह्य से जरूर हम उनके गुण गाते हैं, उनके गाने गाते हैं, उनकी प्रशंसा करते हैं। लेकिन हम अभी भी उससे अनभिज्ञ हैं। अभी तक हमने यह जाना ही नहीं कि वे हमारे अन्दर बसे हुए इस कार्य के लिए तत्पर हैं। कुण्डलिनी का जागरण होने के पश्चात ही यह ज्ञान हमें होता है।

सहस्रार की सुन्दर व्यवस्था ऐसी है कि अगर आप अपने ब्रेन को काट दें और ट्रान्स सैक्शन में उसे देखें तो ऐसे दिखाई देगा जैसे कि कमल की पंखुड़ियां इस तरह से चारों तरफ लगी हुई हैं। सहस्रार का दूसरा कमाल। आप देखिये कि श्रीफल माना जाता है देवी का फल जिसे हम लोग नारियल कहते हैं। इसकी तुलना हर बार ब्रेन से होती है। आपको आश्चर्य होगा कि ऋतम्भरा प्रज्ञा ऐसी है कि आप नारियल के पेड़ के नीचे या हजारों पेड़ों के नीचे सो जाइये। आज तक कहीं भी ऐसी वारदात नहीं हुई कि नारियल का पेड़ किसी पशु पर या किसी मनुष्य पर गिरा हो। क्या आप इस कमाल से परिचित हैं? जब तक आप समुद्र के किनारे नहीं जाते तब तक आप इस कमाल को नहीं जान सकते और समुद्र में भी एक कमाल देखिये कि नारियल के पेड़ समुद्र के किनारे होते हैं। इतनी जोर की हवा, बरसात और मानसून का थपेड़ा होते हुए भी सारे नारियल के पेड़ समुद्र की ओर झुक जाते हैं क्योंकि वह हमारा गुरू तत्व है। क्योंकि वह हमारा गुरू है, इसलिए उसके आगे झुके रहते हैं, नतमस्तक हैं। उनकी समझ सहज और नैसर्गिक है और हमारी समझ अभी बहुत ऊँची होने के कारण इतनी नैसर्गिक नहीं है। हम जरूरत से ज्यादा कुछ लम्बे हो गये हैं। अगर आप जरूरत से ज्यादा लम्बे हो जाइयेगा तो बहुत-सी चीजें जो पाने की हैं, कभी-कभी खो जाती हैं। या अगर जरूरत से ज्यादा नाटे हो जाइयेगा तो भी वह चीज खो ही जाती है। इसका मतलब यह है कि जब तक आप मध्य मार्ग में नहीं होते तब तक आपकी कुण्डलिनी का जागरण बड़ा कठिन कार्य है। लेकिन फिर भी आजकल परमात्मा की कृपा इतनी जबरदस्त है, इतनी अनुकम्पा इस वक्त उनकी बह रही है, मैं स्वयं आश्चर्य करती हूँ कि हजारों लोग एक साथ पार हो जाते हैं। हालांकि इसके बारे में भृगु मुनि ने अपने नाड़ी ग्रन्थ में लिखा था कि ऐसा होगा और सब की बीमारियाँ अपने आप ठीक हो जायेंगी। सब की तकलीफें दूर हो जायेंगी और कुण्डलिनी सहज में ही जागृत हो जायेगी। आप सोचिये कि भृगु मुनि का देश के इतिहास में कौन सा स्थान है? कहते हैं कि हजारो वर्ष पूर्ण भृगु मुनि हो गये और उन्होंने भी कुण्डलिनी के बारे में बताया था कि

सहज में ही कुण्डलिनी जागृत होगी। लेकिन हम, हमारे देश के जो लेखक हैं, प्रवक्ता हैं, दृष्टा हैं, बड़े-बड़े ऊँचे सन्त साधू हैं और यहाँ के जो अवतरण हो गये, उनके बारे में कितना जानते हैं? आज ही किसी ने पूछा कि माँ शिवरात्रि का क्या महत्व है? क्या शिवजी का जन्म हुआ था? शिवजी का जन्म तो होता नहीं। क्योंकि जो सदाशिव हैं, उनका जन्म होने का कोई मतलब ही नहीं है। लेकिन शिवरात्रि का मतलब यह है कि यह महारात्रि, जिस वक्त सारा संसार परब्रह्म स्थिति में सो रहा था, यह महारात्रि है परब्रहम। जैसे हम सो जाते हैं तो हमारी सृष्टि सारी हमारे साथ सो जाती है। उसी प्रकार यह सारी सृष्टि सो गई थी। वह महारात्रि थी और तब जब सदाशिव जागृत हुए, सदाशिव माने जो कभी भी नहीं बदलते, जो सिर्फ एक साक्षी स्वरूप होकर सारे संसार को देखते हैं, वह सदाशिव जब जागृत हुए तब उन्होंने जो अपनी शक्ति जो आदिशक्ति जिसे कि होलीघोस्ट कहते हैं, जिसे वेदों में ई कहा गया, जिसे अचीन्हा कहते हैं। इस शक्ति को अपने से अलग करके और कहा कि तुम सृष्टि की रचना करो। इसलिए शिवरात्रि आज मनाई जाती है कि आज महारात्रि के बाद शिवजी आज जागृत हुए, सदाशिव जागृत हुए। वही सदाशिव जब हमारे हृदय में आत्मास्वरूप प्रकाशित होते हैं तो इसे शिव कहा जाता है। इस वक्त बहुत से लोग अज्ञान में उपवास करते हैं। शिवरात्रि के दिन उपवास करने का कोई तुक समझ में नहीं आता। क्योंकि जिनको यह ही मालूम नहीं कि शिवरात्रि के दिन क्या हुआ। यहां तक लोगों ने पूछा कि क्या उस दिन शिवजी की मृत्यु हुई? शिव अनन्त हैं उनकी मृत्यु कैसे हो सकती है? इतने लोग अज्ञानी हैं कि उस दिन हम उपवास करते हैं, जिस दिन वे जागृत हुए थे। **आज हमारे अन्दर वह आत्मा जागृत होने का समय है। हम लोग भी एक महारात्रि में डूबे हुए हैं। एक महारात्रि जिसमें यह घोर कलयुग छाया हुआ है।** एक महारात्रि और इस महारात्रि में जागृत होने के लिए आज आप सम्मुख बैठे हैं। आपके अन्दर बसी हुई आत्मा आज जागृत होगी। यह आत्मा सचिदानन्द है। सत् चित्त और आनन्द। सत् माने यह कि आप सत्य को जानते हैं। अभी तक आपने सत्य को नहीं जाना है। अभी तक जो जाना है,वह सब भ्रम है। जैसे कि एक आदमी आपके सामने आकर खड़ा होता है और आप उसे देखते ही सोचते हैं कि कितना अच्छा आदमी है। जब उसने आपके सामने गिड़गिड़ाना शुरू कर दिया कि साहब देखिये मैं इतना अच्छा आदमी हूँ। मैंने इतनी अच्छाई की और इस आदमी ने मेरे साथ इतना जुर्म किया। आप उस पर बह पड़े। हो सकता है कि वह किसी जेल से छूटा हुआ चोर हो। हो सकता है कि वह आपको लूटने के लिए आया हो या आपको मर्डर करने के लिए आया हो। आप जान नहीं सकते कि वह आदमी कौन है। क्योंकि आप सत्य तो जानते नहीं है। सत्य को जानने का मतलब यह होता है कि आप उस चीज को जानें जो सब चीजों का सार और तत्व है। **जैसे कि मनुष्य का सार और तत्व क्या है? उसका सार और तत्व उसकी आत्मा है। उस आत्मा को जानते ही आपका जो ज्ञान है, वह अज्ञान-सा लगता है और ज्ञान को आप अपनी नसों, पर अपने सैन्ट्रल नर्वस सिस्टम पर जानते हैं।** जैसे कि एक साहब मेरे पास आये और कहने लगे कि माँ मुझे एन्जाइना की बीमारी है, मुझे ठीक कर दीजिए। मैंने कहा कि अच्छा ठीक है, आप बैठिए। मैंने उनकी कुण्डलिनी जागृत की। उनको दर्द उठा थोड़ा सा। मैंने कहा अच्छा अब आप ठीक हो गये, अब हम जा रहे हैं। उसने कहा, "माँ, आप क्या कर रही हैं, मेरा तो अभी हार्ट अटैक आ गया।" "मैंने कहा, बेटे तुम ठीक हो गये, हम जा रहे हैं।" वह उदास हो कर बैठ गये। मैं मोटर में बैठ गई थी। मैं उतर कर आई और मैंने कहा कि मेरी बात आप सुनिये। आप अभी जाकर अपना एन्जाइनॉग्राफी लीजिए और इस प्रकार आप विश्वास कर लीजिएगा कि मैंने जो कहा है, वही सही कहा है। वह डाक्टर के पास गए और डाक्टर ने कहा कि अरे भई तुमको तो एन्जाइना लीजिएगा कि मैंने जो कहा कि अरे भई तुमको तो एन्जाइना था, तुमको तो हो क्या गया? तुम ठीक कैसे हो गये? तो आपको जो जानना है, वह जानना क्योंकि डॉक्टर ने आपको बताया है, इसलिए जानना हुआ और हमारा जानना इसलिए है कि आपकी जो वायब्रेशन्स हैं, आपका जो चैतन्य है, उसको हमारी आत्मा ने बता दिया। जब आत्मा बोलती है तब यह चैतन्य चलता है और यह आपको बता देता है। कोई-सी भी बात जिसके बारे में आपको जानना हो कि इस आदमी की तकलीफ क्या है, जब आप योगी हो जाते हैं, आप उसकी ओर हाथ कीजिए। आपकी ऊंगलियों के इशारे पर आप बता सकते हैं कि इस आदमी को क्या बीमारी है। और जब बीमारी आपको पता है और आप जानते हैं बीमारी के कारण जिसे कॉज एण्ड इफेक्ट कहते हैं, उससे परे उठना आपको आ गया तो आपने बीमारी ठीक कर दी और उससे परे उठना बहुत ही आसान है। उसे कुण्डलिनी पर डाल दीजिए। कुण्डलिनी जो है यह काज और इफैक्ट से परे है। आपने उसको कुण्डलिनी पर डाल कर उसकी कुण्डलिनी उठा दी तो काम खत्म। तबीयत ठीक हो गई उसकी।

कुण्डलिनी का जागरण और उसका बिठाना बहुत मुश्किल काम है। किन्तु जब यह हो गया तो आगे फिर काम खत्म। आपको आगे फिर कुछ करने की जरूरत नहीं है। जो इतनी बड़ी-कठिन समस्यायें हैं, वह सोचते हैं कि इसका कारण यह है कि इस वजह से परिणाम यह है और इस कारण परिणाम को ठीक करने से सब ठीक हो जाएगा। तो कभी-भी वह चीज नहीं ठीक होने वाली। मैंने आपको पहले बताया कि एक चीज ठीक करिएगा तो दूसरी खराब हो जाएगी। उससे परे जो परमात्मा का साम्राज्य है, जो सहस्रार में विराजता है, उस साम्राज्य में आप आइये, आपका आगमन हो, आपका स्वागत है। नमस्कार करके आप अन्दर आइये और जब आप वहाँ बैठे हैं तो किसकी मजाल है जो आपकी ओर आँख टेढ़ी करके देख सके। मराठी में रामदास स्वामी ने कहा है, "समर्थांचिया वक्र पाहे असा सर्व भूमण्डली को नाहि।" जिसने समर्थ की ओर आँख तिरछी करके देखी, ऐसा सारे भू-मण्डल में कोई नहीं। लेकिन पहली चीज यह है कि आप परमात्मा के साम्राज्य में आये हैं या नहीं। फिर आने के बाद वहाँ जमे हैं या नहीं। जमने की बात बहुत बड़ी सोचने की है। तत्सत् जो है जिसे हम सत् कहते हैं वह अपने सैन्ट्रल नर्व्स सिस्टम से जाना जाता है। कोई कहेगा कि माँ यहाँ पर यह फूल बिछे हुए हैं। यह हम अपनी आँख से देख रहे हैं न? यह आँख हमारी जो है, यह हमारी सैण्ट्रल नर्व्स सिस्टम बता रहा है कि यहाँ यह फूल रखे हैं। फिर जब हम महसूस भी करें तो हम कह सकते हैं कि यहाँ फूल हैं क्योंकि हम इसे महसूस करते हैं। इसको जानना है। यही ज्ञान, यही वेद जिससे विद होता है, जिससे बोध होता है। जो हमारे सैण्ट्रल नर्व्स सिस्टम में जाना जाता है, यही हमारी उत्क्रान्ति का लक्षण है और बाकी सब कुछ दिमागी जमा खर्च है या तो भावना की फिक्र।

जब कुण्डलिनी जा कर सहस्रार को प्रकाशित करती है तो हम सब ज्ञान के अधिकारी हो जाते हैं। आप सोचिये कि जब हमारे यहाँ से सन्त साधु हुए थे, तब न यहाँ यूनिवर्सिटी थी, न कॉलेज था, लेकिन ज्ञान के भण्डार थे, दृष्टा थे। एक से एक योगी इस संसार में हो गये। इंग्लैण्ड में एक विलियम ब्लेक नाम के कवि हुए हैं। अगर आप उनका भविष्य पढ़ें तो आश्चर्यचकित हो जायेंगे कि एक एक चीज, सहजयोग के बारे में उन्होंने इतने साफ तरीके से लिखा है कि बड़ा आश्चर्य होता है। ऐसे दृष्टा मार्कण्डेय जैसे लोग हो गये तो आप लोग क्यों नहीं हो सकते। आरम्भ में जरूर एक ही मछली पानी से बाहर निकली थी, उसके बाद दस-बारह निकली होंगी। फिर एक-आध हजार निकली हों। उसके बाद न जाने कितनी मछलियां ऊपर निकलकर आज मानव स्थिति में बैठी हुई हैं। इसी प्रकार अनेक वर्षों से हम लोगों ने तपस्या की है। परमात्मा से योग मांगा है, मेहनत की है और आज सर्व-साधारण मनुष्य बनकर संसार में आये हैं और आज उसको प्राप्त करने का जो आपका हक, आपकी इच्छा है पूरी होगी। जो साधु-सन्तों ने कहा है, जो इन अवतरणों ने कहा है, सब सच करके दिखाना है। उसके लिए एक ही बस शर्त है कि कुण्डलिनी का जागरण हो कर के आपके अन्दर वह प्रकाश जागृत हो जो कि आपकी नस-नस में बहे और आप जाने कि आप योगी जन हो गये। योगी जन हुए बगैर कोई-सी भी बात समझाई नहीं जा सकती।

तो आप सब जो हमारे मुँह से सुन रहे हैं, वह सत्य है या नहीं, यह जानने के लिए भी आपको योगी जन होना चाहिए। क्योंकि हम जो कह रहे हैं, हो सकता है कि झूठ कह रहे हों। लेकन अगर आप योगी जन हैं तो आप हाथ फैलाकर के जान सकते हैं कि आपके अन्दर चैतन्य की लहरियाँ बह रही हैं और आप समझ सकते हैं कि यह सच बात है। आप यह सवाल पूछें कि संसार में परमात्मा है या नहीं। परमात्मा है, इसलिए आपके अन्दर चैतन्यकी लहरियाँ बहनी शुरू हो जायेंगी। पर गलती से दुष्ट आदमी के लिए आप पूछें कि यह आदमी अच्छा है या बुरा तो हो सकता है कि या तो पूरे चैतन्य बन्द हो जायें, शायद आपको गर्मी आ जाय, शायद एक-आध छाला भी आ जाय। लेकिन राक्षस को और सन्तों को पहचानने के और भी बहुत से तरीके हैं। बुद्धि से भी लोग समझ सकते हैं कि जिस आदमी की दृष्टि आपके पैसे पर है, आपकी सत्ता पर है। आपके घर के बच्चे-बीबियों पर है, वह आदमी कभी-भी सन्त नहीं हो सकता। सन्तों के लक्षण बार-बार कहे गये तो भी हम गलती कर जाते हैं। इसलिए सत्य को जानने के लिए कुण्डलिनी को पहले हमारे सहस्त्रार में प्रवेश करके उसको प्रकाशित करना चाहिए। जहाँ यह हजार पंखुड़ियाँ जागृत हो कर के सुन्दर कलियों के जैसे, पंखुड़ियों के जैसे सुन्दर नित्य रहे। जिसे आप अभी नहीं देख सकते बाद में आप देख सकते हैं। जब आप स्वयं ही प्रकाशित होते हैं तो आप प्रकाश कैसे देखेंगे। जब आप प्रकाश हो गये तब लोग पूछते हैं कि माँ अब क्या करें? जब दीप जला दिया तो अब प्रकाश दीजिए। जब तक आपकी बुद्धि में यह प्रकाश नहीं

आता तब तक आपकी शक्ति एक हजार गुना कम है। मैं तो कहूँ कि इसका कोई अन्त ही नहीं, अनन्त है यह शक्ति। उससे पहले जो इतनी सी शक्ति है। जैसे कि एक बरगद का पेड़ एक छोटा-सा बीज जो अंकुरित हो कर इतना बड़ा पेड़ हो जाता है। उसी प्रकार मनुष्य की बुद्धि जो इतनी छोटी और सीमित लगती है, वह इतनी बढ़ जाती है कि उसकी शाखायें भी चारों तरफ उतर-उतर कर के उसे और भी स्थापित करती जाती है। यह परमात्मा का सत्य स्वरूप है। आत्मा का सत्य स्वरूप है। आत्मा सत्य के लिए भटकती है। **लेकिन सहजयोग में जरूरी है कि आपकी बैठक होनी चाहिए। अब आपने म्यूजिक सुना। हिन्दुस्तानियों को तो यह बात समझनी चाहिए कि म्यूजिक जो है बैठक के बगैर नहीं है। बैठक चाहिए। पार तो हो जायेंगे आप। ठीक है, पर उसके बाद जब बैठक नहीं होगी तो आप समर्थ नहीं हो सकते, आप पूरी तरह से इसमें प्रभुत्व नहीं पा सकते। इसके लिए बैठक चाहिए, अभ्यास चाहिए और जब तक वह अभ्यास नहीं होगा, आपके अन्दर उसकी संवेदना, इस कदर नाजुक संवेदना, गहन संवेदना जागृत नहीं हो सकती। क्योंकि यह नसों से जाना जाएगा। ये नसें आज तक जड़ रही हैं। और जब तक ये नसें जागृति के नये आयाम में, डॉयमेन्शन में जब तक नहीं जागृत होती तब तक आप नहीं जान सकते।**

बहुत से लोग कई बार यह सोचते हैं कि इनको क्या पता होगा? यह तो बहुत सीधी लगती है। एक बार एक साहब आये और कहने लगे कि माँ, देखिये, यह आपका फोटो कैसे है? मैंने कहा कि बिल्कुल गलत। मैं बता दूं कि यह किसने निकाला। उन्होंने कहा, "अच्छा, बताइये।" मैंने उस आदमी का नाम बता दिया जिसने वह फोटो निकाला था। मैंने कभी देखा भी नहीं था, किसी ने भी नहीं देखा था। वह चक्कर में आ गये कि माँ तुमने कैसे जाना। मैंने कहा, "हम सबके चक्रों को जानते हैं। उस चक्र को इस चक्र में जान गये कि उसी के जरिये यह काम हो रहा है, इसका मतलब उसी आदमी ने यह फोटो खींचा है। एक साहब हमें समझाने आये कि माँ आप जानती नहीं हैं। आप बड़ी सीधी हैं। यह बड़ा राजकामी आदमी है, इससे संभल कर रहिए। यह कुछ गड़बड़ कर सकता है। मैंने कहा कि अच्छा इतना ही बताना है आपको? कहने लगे, "हाँ।" अच्छा अब सुनिये आप इसके बारे में मैं क्या जानती हूँ कि इसकी बीबी अपनी नहीं है, किसी ब्राह्मण की बीबी भगाकर लाया है। इसका बच्चा तो इसका है लेकिन बीबी दूसरे की है। जो मैंने उसका कच्चा चिट्ठा खोलना शुरू किया तो वह आंखें फाड़-फाड़ कर देखने लगा कि माँ ने तो इस आदमी को तो एक ही बार देखा और इतना कैसे बता गई। पर यह बताना कोई बड़ी भारी बात नहीं है। इसकी कोई जरूरत भी नहीं है आपको। लेकिन आप यह बता सकते हैं कि आपमें कौन सा दोष है। तो जब आप सत्य हो जाते हैं तो असत्य से आप अलग हो जाते हैं। जैसे कि इस कपड़े पर अगर कोई दाग लगा है और इस वक्त कोई प्रकाश आ जाये तो मैं इससे अलग सोचती हूँ कि इसको कैसे साफ किया जाये। इसी प्रकार आप अपने से अलग हटकर जानते हैं कि यह असत्य है, यह हम नहीं ले सकते। जैसे एक साहब आये और कहने लगे कि माँ मेरा आज्ञा चक्र ठीक कर दीजिए। मतलब क्या? कि मुझे अहंकार हो गया है, इसे आप निकाल दीजिए। अगर किसी आदमी को कह दीजिए कि आपको अहंकार हो गया है तो वह मार बैठेगा आपको। लेकिन जिस वक्त आज्ञा में दर्द होने लग जाता है तो वह खुद ही कहता है कि माँ मेरा आज्ञा जरा आप ठीक कर दीजिए। इस आज्ञा से मैं परेशान हूँ। यदि एक चीज आपकी दूषित है तो वह इशारा ही नहीं करती, कभी-कभी दुखती भी है, कभी-कभी बताती भी है, जताती भी है और ऊँगलियों पर आप जानते हैं कि आपको क्या शिकायत है और आप उस शिकायत से एकाकार नहीं है। हम लोग यह प्राप्त करने से पहले एकाकार हों। आप बहुत सीरियस हैं। इतना सीरियस होने की कोई जरूरत नहीं है। हल्के तरह से रहिए। प्रसन्नचित रहिए। परमात्मा का विषय सीरियस नहीं है, गंभीर जरूर है। आप प्रसन्नचित रहिए।

एक साहब गये मिनिस्टर साहब से मिले। तो वहाँ एक साहब बैठे हुए थे। वह खूब कूद रहे थे। उनकी समझ में नहीं आया तो उन्होंने कहा, "साहब, मतलब क्या है? आपको हो क्या गया?" तो कहने लगे कि आपको पता नहीं है कि मैं पिए हूँ। उन्होंने कहा कि अच्छा मुझे नहीं पता था कि आप पिए हुए हैं। माफ करना। यह जो हम अपने ऊपर चढ़ा लेते हैं कि किसी नौकरी में हो गये, किसी पोजीशन में हो गये, दो-चार पैसे इकट्ठे हो गये। उसका जो अभिमान, अभिमान नहीं, दुराभिमान- यह जो हमारी खोपड़ी में लग जाता है जिससे हम अजीब से हो कर पिए हुए घूमते हैं, यह छूट कर मनुष्य देखता है कि यह जो है, यह बाह्य है। जैसे अपनी बुद्धि का गुमान, अपने पढ़ने लिखने का गुमान, हर तरह के गुमान मनुष्य में चढ़ जाते हैं। वह तो बात-बात पर घोड़े पर बैठ जाता है। घोड़ा है नहीं घोड़े पर बैठा है। यह

सब इस तरह से छूट जाता है जैसे कि प्रकाश में अगर आपने हाथ में साँप पकड़ा है, उसे आप छोड़ देते हैं, उसी तरह से सब कुछ छूट जाता है। कहना नहीं पड़ता। लेकिन उसने किया क्या? किया यह कि आज्ञा चक्र को, जब कुण्डलिनी चढ़ती है और वहाँ का देवता जब जागृत होता है तो यह देवता हमारे दोनों ही इगो और सुपर इगो जिसे कि मनस और अहंकार कहते हैं, दोनों को ही आपस में खींच लेता है, शोषित कर देता है और ब्रह्मरन्ध्र में ऐसी जगह बन जाती है कि कुण्डलिनी खट् से बाहर चली जाती है। उस वक्त हमारे हाथ बोलते हैं। हाथ बोलते हैं कि हाँ कुण्डलिनी पार हो गई है। जो लोग पार हो जाते हैं, वही महसूस कर सकते हैं यहाँ की ठण्डी हवा और जो नहीं होते हैं, उनको मुश्किल होता है ठण्डी हवा महसूस करना।

उसके बाद जब आपके किसी चक्र में दोष हो, अगर आपके विशुद्धि चक्र में दोष हो या अगर आपके नाभि चक्र में दोष हो तो इन ऊँगलियों पर आप जान सकते हैं कि कहाँ पर दोष है, उसके बारे में आप सब कुछ जान सकते हैं। आप संसार की सारी बातों को जान सकते हैं। यहाँ बैठे-बैठे, आपके कोई रिश्तेदार हों, कोई और हों, उनके बारे में आप जान सकते हैं। देश के बारे में जान सकते हैं। देश के नेताओं के बारे में जान सकते हैं। इलैक्शन के बारे में जान सकते हैं। चाहे जो भी जानना चाहें, आप सब कुछ जान सकते हैं। लेकिन योग होने के बाद मनुष्य का मन इन सब चीजों से हट कर परमात्मा की ओर लग जाता है। इन चीजों में उनको मजा नहीं आता है। जब आपने सबसे ऊँचा अमृत पी लिया फिर किसी गन्दगी का पानी पीना आप पसन्द नहीं करते। जो चीज अच्छी नहीं, उसमें कोई मजा नहीं आता। सारी चीजें, जिसे कहते हैं कि प्राथमिकताएं आपकी बदल कर आप दूसरे ही आदमी हो जाते हैं। क्योंकि जिस चीज में मजा आता है, वही होता है। एक शराबी को लें। मैं तो ज्यादा नहीं जानती शराबियों के बारे में। लेकिन मैंने देखा है कि जब वह शराब पीता है तो शाम होते ही उसको याद आ जाता है और फिर दुनिया में कुछ भी हो रहा हो, सब छोड़-छोड़ कर बैठ जाते हैं अपना मसनद लगाकर। यही हाल एक योगीजन का होता है। मस्ती में आ गये तो उसी मस्ती में डूबे रहते हैं, उसी शान्ति में समाये रहते हैं जो आत्मा की देन है। महाराष्ट्र के एक बड़े भारी कवि नामदेव हैं, उनकी कविता है ग्रन्थ साहिब में। उसमें एक कविता बहुत सुन्दर है जिसमें लिखा है कि एक छोटा बच्चा पतंग उड़ा रहा है। पतंग आकाश में उड़ रही है, लड़का जो है, खेल रहा है और सबसे बातचीत कर रहा है, हँस रहा है लेकिन उसका चित्त पूरा उस पतंग पर है। यही योगीजन का किस्सा होता है कि सबसे बोलते रहे किन्तु चित्त उसका आत्मा की ओर है। दूसरी जो कविता की पंक्ति है, उसमें लिखा है कि कुछ औरतें हैं, पानी घड़े में लेकर जा रही हैं। चार-चार गगरियाँ सर पर रखी हुई हैं। जल्दी-जल्दी जा रही हैं और आपस में मजाक भी हो रहा है, हँसी भी हो रही है, बातचीत भी हो रही है। लेकिन सारा चित्त उनका गगरी पर है और उदाहरण तीसरा उन्होंने कहा है कि एक माँ है जो अपने बच्चे को लेकर सारा काम कर रही है। घर का सारा काम वह कर रही है लेकिन उसका चित्त पूरी तरह अपने बच्चे पर है। यही कुण्डलिनी जिसका सारा चित्त आप पर लगा हुआ है, सारा विचार इसका आपके ऊपर है और इतनी इच्छुक और उत्कण्ठा से इन्तजार कर रही है कि कब मेरा बेटा इस ओर आयेगा जहाँ वह अपने पुनर्जन्म को प्राप्त करे। उसको दुनिया की कोई और चीज नहीं चाहिए। उसका यह कार्य जब तक पूरा नहीं होता तब तक शुद्ध इच्छा जो आपके अन्दर सुप्तावस्था में है, उसको चैन नहीं है। वह ढूंढती फिरेगी। इधर जा, उधर जा, जंगल में जा, पैसे में खोज, इसमें खोज, उसमें खोज। आप जो-जो गलतियाँ करेंगे, बेचारी उससे आहत होती जाएगी पर अन्त में वह बैठी रहेगी कि एक दिन ऐसा जरूर आयेगा जिस दिन सुबुद्धि से मेरा बच्चा इस योग को प्राप्त करेगा। तो आप आत्मा का जो स्वरूप है, उस सत्य को जानें।

जैसा मैंने आपको बताया कि संसार में तीन तरह के लोग होते हैं– एक तो तामसिक लोग जो कि झूठ को ही सत्य मानकर उसके पीछे अपनी जिन्दगी बर्बाद कर देते हैं। दूसरे राजसिक जो झूठ और सच का फर्क ही नहीं जानते। उनको कोई चीज में गलती ही नजर नहीं आती और तीसरे सात्विक होते हैं जो सत्य को पहचान कर चलते हैं। लेकिन जब आप योगीजन होंते हैं तो सिवाय सत्य के आप कोई चीज को पकड़ ही नहीं सकते। अचूक जैसे रत्न पारखी लोग होते हैं। हीरे को बराबर पहचान लेते हैं। ऐसे ही जो सत्य को एकदम पकड़ लेते हैं। उदाहरण के लिए ईसा मसीह को देखिये कि जब एक वैश्या को लोगों ने पत्थर मारना शुरू किया तब ईसा मसीह वहां जा कर उसके सामने खड़े हो गये और कहा कि भाई तुम में से जिसने कोई पाप नहीं किया हो वह पत्थर मारे, वह भी मुझे और सबके हाथ

रूक गये। क्योंकि वह इस चीज को जानते थे कि इस औरत ने जो भी गलती की है और जो भी इसने अपने जीवन का बुरा किया है, वह सब परमात्मा क्षमा करने वाले हैं, वही शिक्षा देने वाले हैं और हम मनुष्य उसको क्यों दोष लगायें। जिसने सत्य को जाना, वह असत्य के पास कैसे खड़ा रह सकता है? आप ही बताइये। अगर आपने प्रकाश में कोई चीज देख ली, तब भी क्या आप खाई में कूदेंगे? जिस प्रकाश में आपने देख लिया कि इससे मेरा पूरा नुकसान हो रहा है, मुझे पूरी तरह से तकलीफ होने वाली है तो फिर आप क्या ऐसा कहेंगे कि आ बैल मुझे मार?

क्योंकि यह प्रकाश हमारे पास नहीं है, इसीलिए रात-दिन हम अपनी जिन्दगी बरबाद किये जा रहे हैं। कोई कहता है कि आपके देश की हालत ठीक हो जायेगी आप पैसा दे दीजिए। सौ रु० आप किसी को दे दीजिए, वह शराब के ठेके पर सीधे चला जाएगा। आप किसी को पोजीशन दीजिए। जैसे मैंने कल धोबी का किस्सा बताया था। आप किसी भी विद्वान को बड़ी नौकरी दे दीजिए या किसी सत्ता में भेज दीजिए, उसकी खोपड़ी एकदम उल्टी बैठ जाएगी। सत्ता कोई झेल नहीं सकता, सम्पत्ति कोई झेल नहीं सकता और स्वतंत्रता को भी नहीं झेल सकता। यह तो मनुष्य की दशा है तो फिर सोचना चाहिए कि इससे कोई न कोई ऊँची दशा होगी जहाँ से सब चीज का भोग मनुष्य ले सकता है और भोग तभी ले सकता है, जब वह सत्य में खड़ा हो। जिस वक्त इन फूलों की सजावट देखेंगे तो आप कहेंगे कि इतने फूल थे, पता नहीं किसने लगाये, कितना रूपया लगाया, यह किया वह किया... सब दुनिया भर की बातें करेंगे। लेकिन अगर कोई योगी होगा तो उसके सामने बस हठात् खड़ा हो जाएगा। निर्विचार स्थिति में। बनाने वाले ने इसमें जो आनन्द डाला है जिस हृदय से यह बनाया है, उसका सारा आनन्द उसके माथे से ऐसा बहेगा जैसे गंगा की धारा। वह यह नहीं जानता कि किसने बनाया, क्या किया। उसका जो आनन्द उसमें स्थित है, निराकार स्थिति में, वह पूरा का पूरा उसके ऊपर से बहता रहेगा। उसमें विचार नहीं है। वह निर्विचार स्थिति में उसे देखेगा। इस प्रकार हर चीज का जो आनन्द है, वह आप सत्य में ही पा सकते हैं और कहीं नहीं पा सकते। कभी भी आप किसी चीज की ओर दृष्टि करते हैं जब उसके बीच में विचार खड़ा हो जाये तो आप सोचिये कि उसकी आनन्ददायी शक्ति खत्म हो गई। उसमें कोई आह्लाद नहीं रहता। राधा जी को कहा जाता है कि वह परमात्मा की आह्लाददायिनी शक्ति है। वह आह्लाददायिनी शक्ति विचार से एकदम खत्म हो जाती है। जैसे ही सामने विचार आ जाय। आप समझ लीजिए विचार से एकदम अन्धियारा आ जाता है। लेकिन निर्विचार में आप किसी चीज को देखें तो उसमें बसा हुआ आनन्द, उसमें बसा हुआ सत्य जो निराकारस्वरूप है, वह आपके अंदर ऐसा बहेगा कि जैसे पूरी की पूरी शक्ति प्रेम की आपके अन्दर प्लावित होकर, आपको महसूस होगा जिससे ऐसा लगेगा कि सारी दुश्चिन्ता पता नहीं कहा चली गयी। जैसे आपका संगीत था निर्विचार में अगर आप उसको सुन सकते तो इसका क्या असली असर है, उसे आप पा सकते थे। लेकिन जब तब आप विचार करते गये- अब टाइम हो रहा है, अब ऐसा है, वैसा है... घर जाना है। क्योंकि जब आप योगीजन हो जाते हैं जब आप सहस्रार में स्थित होकर जब आप वर्तमान में विराजते हैं। न तो आप भविष्य में और न तो आप भूत काल में। न ही आप फ्यूचर में और न ही आप पास्ट में। आप वर्तमान में होते हैं और हर वर्तमान का क्षण अपना एक आयाम, एक डायमेन्शन एक अपना दर्पण रखता है और उसमें इतनी छटायें हैं फिर उसका मजा देखें। अगर हम चाहें तो उसका मजा उठायें तो ऐसा लगता है कि हजारों जिह्वा होने पर भी जो मजा नहीं आ सकता है वह यह वर्तमान में आते ही पता नहीं कहां से इतना आ रहा है। जब आत्मा हमारे अन्दर जागृत हो जाती है तब आनन्द उसका स्वभाव हमारे अन्दर स्फुरित होता है, इन्सपॉयर होता है। यह नहीं कहना पड़ता कि हाँ अब मैं आनन्दित हूँ। आप शक्ल-सूरत से जान सकते हैं कि हाँ यह इन्सान बहुत मजे में है।

जब मैं पहली मर्तबा पेरिस गई थी तो लोगों ने कहा कि माँ आप तो बहुत खुश नजर आती हैं। मैंने कहा कि फिर। तो कहने लगे कि यह पेरिस में नहीं चल सकता। कहने लगे कि यहाँ तो लोग यह सोचते हैं कि जो आदमी मजे में है, वह अज्ञानी है। उसको मालूम नहीं है कि दुनिया में क्या आफत आ रही है मजे में बैठा है तो आप कुछ लम्बा मुँह करके बात करें। अब मेरे लिये बहुत मुश्किल। तब मैंने उनको कहा कि हर तीसरे घर में शराब की बोतलें खुल रही हैं, चौथे घर में औरतों की गन्दगी चल रही है और पाँचवे घर में यह मसर्रतें हो रही हैं कि किसको मर्डर किया जाय और किस के पैसे खाये जायें। तो ऐसी दशा में क्या वहाँ आनन्द का राज होगा?

जब कभी हम पैदल चलते तो लोग बैठे रहते थे बहुत लम्बा मुँह बनाकर। मैंने कहा कि भई इनको क्या आफत

आ गई? कहने लगे कि ये लोग फ्रेन्च में आपस में बातें कर रहे हैं और कह रहे हैं कि ऐसा करते हैं कि अष्ट ग्रह आने वाले हैं और हो सकता है कि तब हम खत्म हो जायें तो बड़ा अच्छा होगा। उसका इन्तजार हो रहा है कि वह कब आयेंगे और कब हम खत्म हों। मैंने कहा कि उसके लिए अष्ट ग्रह का इन्तजार करने की क्या जरूरत है, ऐसे ही जाकर डूब जायें वहाँ नदी है। इतने अगर यह दुखी जीव हैं, तो तब तक इन्तजार करने की इनको क्या जरूरत है? शायद अष्ट ग्रह के चक्कर से बच ही जायें तो यह जाकर हमने वहाँ देखा। इस तरह की उन्होंने अपनी दशा बना ली है कि हम तो बड़े दुखी जीव हैं और हमारे जैसे दुखी जीव के लिए यही अच्छा है कि हम मर जायें। आपको आश्चर्य होगा कि स्विटजरलैण्ड नार्वे में एक स्पर्धा है, कम्पटीशन है कि कितने लोग वहाँ इस साल आत्महत्या करने से मरे। जवान लड़के १७ साल से २५ साल के वहाँ आपस में स्पर्धा लगाते हैं कि इस साल स्विटजरलैण्ड को अधिक नम्बर मिले। कारण यह है कि आपने पैसा इकट्ठा कर लिया किन्तु आनन्द आपको मिला नहीं, यह बात सही है। सब कुछ मिल गया। मोटरें मिल गई और कया-क्या हम लोग जो ढूँढते रहते हैं हिन्दुस्तान में, वह सब उनके पास होने के बाद अब वह ढूँढ रहे हैं कि अब हम मरेंगे कैसे। उसके इन्तजामात सोचते हैं कि किस तरह से मरना ठीक रहेगा। वे नहीं जानते कि कोई मरता तो है नहीं। वे फिर वापस आ जायेंगे रोने के लिए। कोई परमानैन्टली मरता नहीं है, यह परेशानी और है। ये जो रोनी सूरतें हैं, इनको बदलो, इसके लिए वे तैयार नहीं हैं।

आपका सत्य आपही के अन्दर बसा हुआ है। वह एक क्षण भर में आपको मिल सकता है, आसानी से आपको मिल सकता है। बस थोड़ा सा उन्मुख होने की जरूरत है, उस तरफ नजर करने की जरूरत है। ये चीजें सब आपको मिल सकती हैं। तब आप यह सोच लीजिए कि सिर्फ सहस्रार पर ही कुण्डलिनी को रूकना नहीं चाहिए, उसका भेदन भी होना चाहिए और इसका भेदन भी बहुत सूक्ष्म तरीके से होता है। अब इसकी कितनी नाड़ियाँ हैं? कौन सी नाड़ी कहाँ खुलती है? कौन से चक्र कहाँ होते हैं और कैसे बन्द करते हैं– यह सब बातें बताने की जरूरत नहीं है। अगर आपको कोई बढ़िया मोटर लाकर दे दे तो आप पहले उसके अन्दर घुसकर थोड़ी देखते हैं कि इसका कौन-सा पुर्जा ठीक है या नहीं है। आप तो गाड़ी उठाकर चल दिये मजा उठाने के लिए। इसी प्रकार सहज योग को प्राप्त करने के बाद आप धीरे-धीरे इस चीज को समझने का प्रयत्न करें कि यह चीज है क्या? लेकिन न भी समझें तो कोई हर्ज नहीं पर मौज में रहिये और इस मौज को, आनन्द को सब को बाँटिये। क्योंकि आपका चित्त जो है वह प्रकाशित हो जाता है।

अब चित्त हमारा अटेन्शन है और इस अटेन्शन में हमारे अन्दर जो नई जागृति उत्पन्न होती है, वह है कॅलैक्टिव कॉन्शियस– सामूहिक चेतना। लेकिन मैं कहूँगी "सामूहिक शुभ चेतना"। शुभ-अशुभ विचार तो हमें रहे नहीं। शुभ वह जिससे कि चैतन्य हमारे अन्दर से बहता रहे– वह सारा शुभ है। जिस कार्य से चैतन्य बहता है, जिस गाने से चैतन्य बहता है। जिस भक्ति या संगीत से चैतन्य की लहरियाँ बहें वही शुभ है और वही सौन्दर्य की लहरियाँ भी हैं। तो यह शुभ चेतना हमारे अन्दर जागृत हो जाती है। इसके माने यह नहीं कि हमारी बुद्धि में कोई चीज आ जाती है पर हम जान सकते हैं कि हमारे अन्दर कौन सा दोष है क्यों कि हम आत्म-साक्षात्कार भी पाते हैं और हम जैसे वस्तु में उसे पाते हैं वैसे समिष्टि में भी पाते हैं। माने जैसे हम एक व्यक्ति में पाते हैं, वैसे हम सामूहिकता में भी पाते हैं।

अब कॅलैक्टिव का चमत्कार देखिये। आज तक आप लोगों ने जो सिद्धान्त बनाए वे सब खोखले हैं। जैसे कोई कहता है कि हमारा विश्वास पूँजीवाद में है, कोई कहता है कि हमारा साम्यवाद में है। किसी का इसमें है उसमें है, सब खोखला है। हमें समझ लीजिए कि हम बड़े भारी पूँजीपति हैं क्योंकि अगर सब शक्तियाँ हमारे अन्दर जमा हो गई तो हम तो पूँजीपति हो गये लेकिन हम हैं बड़े भारी साम्यवादी भी। जब तक इसे बाँटेंगे नहीं, हमें चैन नहीं आयेगा। अभी एक साहब ने पूछा कि आप क्यों सहजयोग करते हैं? आप क्यों जागृति करते हैं लोगों की? आप सुखी हैं। आपके पति इतने अच्छे हैं? आप क्यों जागृति करते हैं लोगों की? आप सुखी हैं। आपके पति इतने अच्छे हैं। आपके बाल बच्चे इतने अच्छे हैं। घर में बैठिये जा कर। कहाँ बैठें? चैन नहीं। जब तक इसे बाँटेंगे नहीं मजा नहीं आयेगा। एक शराबी को देखा आपने कि अकेला वह शराब नहीं पी सकता। इसी प्रकार यह भी शराब आप अकेले नहीं पी सकते। इसका मजा नहीं आयेगा। बाँटेंगे तो सामूहिकता में आप जागृत हो जाते हैं। लेकिन इसमें एक अहम् बात कि आपका चित्त वह जो आदि तत्व है, जो विराट है, अकबर है, उसमें जागृत हो जाता है। जैसे इस शरीर के अंग-प्रत्यंग जागृत हो जायें तो उस समय आप उस विराट के अंग प्रत्यंग बनकर उसमें

जागृत होते हैं। उसके बाद दूसरा कौन है? आप किसके ऊपर उपकार कर रहे हैं? आप किसको दे रहे हैं। अरे भई अगर इस ऊँगली में शिकायत हुई तो दूसरी ऊँगली उसको अपने आप ही रगड़ देती है। उसको कुछ कहना पड़ता है? सारे शरीर को पता है कि इस ऊँगली को शिकायत है और सारा शरीर उसकी मदद करता है। कल एक साहब ने बड़े पते की बात कही थी'' कि किसी भी जगह की गरीबी पूरी खुशहाली के लिए खतरा है।

इसी प्रकार जिस वक्त आपकी जागृति हो जाती है आप कॅलैक्टिव में आ जाते हैं तो कहीं भी कोई तकलीफ हो जाये, कहीं भी कोई परेशानी हो जाये आप तुरन्त समझ जाते हैं कि तकलीफ है। उसके लिए आप प्रार्थना मात्र करें तो कार्य हो जाता है। क्योंकि अब आपको परमात्मा का एकाकार हो गया है। आपको कोई सिफारिश नहीं चाहिए कि कोई बाबा जी आपको देंगे या कोई साधु जी आपको देंगे। परमात्मा से कहिए और परमात्मा आपका कार्य कर देंगे और करते हैं। हजारों के ऐसे कार्य हुए हैं। इतने सहजयोगी यहाँ बैठे हैं। एक-एक से पूछिए तो एक-एक इतनी बड़ी किताब आपको लिख देंगे। दो-दो, तीन-तीन साल में उनके ये अनुभव हैं।

अब आप जानते हैं। कुछ लोग बीमार मेरे पास आते हैं। मेरे हाथ टूट जाते हैं। मेरा सिर दुख जाता है, अनेक परेशानियाँ हैं। अभी कुछ देहात के लोग आये थे। बहुत दूर से... शिलाँग से। उस आदमी को बताया गया था कि तुम्हें कैंसर की बीमारी है। यहाँ एक प्रोग्राम उन्होंने अटैण्ड किया। वापस गये तो डॉक्टर हैरान हो गये। कहने लगे कि आपका कैंसर कैसे ठीक हो गया? एक बम्बई के महाशय... बस वह अल्लाह को बहुत मानते थे मुसलमान। मोहम्मद नाम उनका। प्रोग्राम में आये। उनको दस साल से डायबिटीज था। बस एक बार प्रोग्राम में आये। मैंने उनसे बात भी नहीं की, जाना भी नहीं और उनसे मिली भी नहीं, वह ठीक हो गये। कुछ-कुछ लोगों के पीछे तो मेरे हाथ टूट जाते हैं। उनकी कुण्डलिनी उठना तो दूर रहा, मेरे हाथ टूट जाते हैं। पहाड़ जैसी कुण्डलिनी उठाते-उठाते ऐसी तकलीफ हो जाती है कि क्या करूँ। क्योंकि इनके दिमाग ज्यादा हैं। सिर पर अहंकार के पहाड़ के पहाड़ बाँधे हुये हैं। अपने को बहुत समझते हैं। तो कुण्डलिनी भी कहती है कि जरा ठोकरें खाने दो, तब ठीक होयेंगे। कुण्डलिनी उठती नहीं है, मैं क्या करूँ? इसलिए नम्रता के साथ, दृढ़ निश्चय के साथ सहजयोग में उतरना है। ऐसे-वैसे लोगों का यह काम नहीं है। जो वीर हों वह सामने आयें। बेकार लोगों के लिए सहजयोग नहीं है। ऐसे तो हम बड़े वीर बनते हैं। एक तम्बाकू तो छोड़ी नहीं जाती। तम्बाकू के पत्ते से आप डरते हैं। आप क्या वीरता दिखायेंगे? शराब की बातलें दिखी नहीं कि आप ढह गये। यह क्या वीरता दिखलायेंगे आप? वीर हों तो सामने आयें और वीरों के गले में ही कुण्डलिनी की माला पड़ सकती है। ऐसे हमारे देश में ऐसे कुछ वीर निकल आयें तो बाकी जो दूसरे हैं, वे भी ठीक हो जायें। उनको भी खींचना है। लेकिन पहले हिम्मत की जरूरत है कि हम उस पर दृढ़ रहें क्योंकि सहजयोग के बाद मनुष्य एक तरह से इतना अछूता हो जाता है और गन्दगी से इतना भागता है कि लोग कहते हैं कि भई इसको क्या हो गया। पहले अच्छा आता था, शराब पीता था और मजाक करता था। इसके काफी सीक्रेटस भी पता चलते थे। शराब की बोतल के पीछे आप चाहें तो डान्स भी इससे करा लो। अब इसको क्या हुआ। बेकार गया। क्योंकि आप सारे गुणों की खान बन जाते हैं। ऐसा आदमी एक तेजस्वी पुरूष होता है और उस तेजस्विता के पीछे भी अत्यन्त करूणामय, अत्यन्त प्रेममय, अत्यन्त सुखदाई और एक शानदार व्यक्ति आपका चित्त स्वयं ही सामूहिक चेतना से प्लावित एक नये आयाम में आपको डाल देता है और आप आश्चर्यचकित हो जाते हैं कि यह कैसे हो गया। माँ, हमने तो कुछ किया भी नहीं फिर यह कैसे हो गया? ''योगक्षेम वहम्यहम'' योग के बाद क्षेम परमात्मा देखते हैं। यह कृष्ण ने कहा भी है -- वही घटित होता है।

संहस्रार का जो चमत्कार है। सहस्त्रार की जागृति आपको इतने नये-नये आयाम, इतने नये-नये विचार और इतने स्फूर्त कलायें दिखाता है कि आप आश्चर्यचकित हो जाते हैं कि क्या यह मेरा ही ब्रेन है। ऐसे ऐसे लोग जो अपने बच्चों को लाते थे कि माँ यह क्लास में नहीं पढ़ता, बहुत पीछे है। ऐसे ऐसे लोग जो कुछ भी गाना-बजाना नहीं जानते, कुछ भी कला नहीं सीख सकते, वे कलामय हो गये। ऐसे लोग जो कि नौकरी में नहीं थे, जो कुछ करना ही नहीं जानते थे वे लाखोंपति हो गये। यह कैसे हो गया? ये सारी ही शक्तियाँ हमारे अन्दर हैं। लक्ष्मी जी की भी शक्ति हमारे अन्दर है। जिस वक्त मनुष्य किसी भी सृजन को करता है, कार्य को करता है तब उसके अन्दर जो ब्रह्मदेव हैं जो कि रचयिता हैं, जो कि स्वाधिष्ठान चक्र पर अधिष्ठित हैं, वे जब जागरूक हो जाते हैं तो ऐसा आदमी ऐसे-ऐसे

रचना करता है जैसा कि मैंने आपको बताया जितने भी संसार के महान कलाकार हुए हैं, सब के सब आत्म साक्षात्कारी हुए हैं। अगर वे साक्षात्कारी नहीं होते तो वे महान नहीं होते। आजकल हम देखते हैं कि टुटपुंजिए कलाकार लोग हैं, ऐसे टुटपुंजिए लेखक हैं कि एक मिनिस्टर के यहाँ नौकरी छोड़ी, उसके खिलाफ लिख दिया। अभी यहाँ भाषण में कुछ कहा और वहाँ जा कर कुछ लिख दिया। ऐसे टुटपुंजिए लोग तब जब उसके अंदर जागृति हो जाती है तो वे पूर्णता पर आते हैं। तब वे समझते हैं कि यह क्या मैं कौड़ी पर कहां खड़ा था। असल रत्न मेरे अन्दर होते हुए मैं कौड़ी में कहां फंसा था। यह जागृत जब हमारे अन्दर हो जाती है, जब उसके आन्दोलन शुरू हो जाते हैं तो ऐसा संगीत अंदर चलता है कि आप कभी अकेले ही नहीं होते। जो लोग कहते हैं कि मैं बोर हो रहा हूँ। यह शब्द ही मिट जाता है। कभी आदमी बोर ही नहीं होता। जो अपने में मगन हो गया, वह बोर कैसे हो सकता है। आजकल बड़ी बीमारी है। लोग कहते हैं कि मैं बोर होता हूँ। मुझे यह शब्द ही समझ नहीं आता कि यह क्या होती है बला? ऐसे मगन हो जाते हैं, ऐसे मस्त हो जाते हैं चाहें जंगल में बैठे हों, चाहे किसी के साथ बैठे हों, अपनी मस्ती में आप जमे रहिएगा और आपका व्यक्तित्व, आपकी पर्सनैलिटी ऐसे निखर जाएगी कि आप जहाँ कहीं भी खड़े रहें आपके अन्दर से इसकी धारायें बहेंगी। वहीं पर जहाँ पर आप खड़े हैं वहीं पर जो अनेक लोग हैं, उनको भी फायदा होगा।

एक बेचारे हमारे सहजयोगी हैं। वह बस से रोहरी से आ रहे थे। बस उनकी ऊपर से नीचे गिर गई। बस इतने नीचे गिर गई कि तीन-चार बार घूम कर बस फिर चारों पहियों पर खड़ी हो गई। जो ड्राइवर था, वह घबड़ाकर भाग गया। एक साहब ने कहा कि कमाल है, हमें किसी को चोट ही नहीं आई हम लोग सब गोल-गोल घूमते रहे और यहाँ फिर जमीन पर अच्छे से आ गये, गाड़ी ठीक से बैठ गई, यह कैसे हो गया? यहाँ कोई न कोई भगत बैठा है। वे हमारे सहज की अंगूठी पहनते हैं। उनको पकड़ लिया। वे माता जी के शिष्य हैं। चलो अब कोई बात नहीं। एक साहब उठे और कहने लगे कि मुझे आता है गाड़ी चलाना। गाड़ी में चाबी लगी हुई थी उन्होंने शुरू किया और गाड़ी चल दी। ऐसे अनेकोनेक उदाहरण मैं बता सकती हूँ जो घटित हुई हैं। क्योंकि आपको संभालने वाले हैं देवदूत, सब साथ हैं। सारी सृष्टि उनकी बंधी हुई है। हम क्या सोचते हैं कि सिर्फ हमीं लोग इस दुनिया में हैं और इसके अलावा कोई है ही नहीं। आप तो अभी इस स्टेज पर नहीं आये नहीं तो आप जानते कि कितने लोग आपके आगे-पीछे चलते हैं। किस तरह आपकी रक्षा होती है। अभी तो परमात्मा को जाना ही नहीं, उसका सिर्फ नाम ही लेते रहे, उसकी गलतियाँ ही निकालते रहे। उसको दोष ही देते रहे और अगर काम नहीं बना तो कह दिया कि भगवान नहीं है। इससे ज्यादा तो आपने कुछ किया नहीं है आज तक भगवान के लिए। आप चाहे कुछ करें या न करें, वह पिता परमात्मा अत्यन्त प्रेममय, आपके लिए जो कुछ करना है, करता है और करेगा और आपको चाहता है कि आप उसके साम्राज्य में आयें और अपने सिंहासन पर विराजमान हों। यही उसका सिंहासन आपके सहस्रार में है। यहाँ आपको प्रवेश करना है और फिर ब्रह्मरन्ध्र छेदने के बाद उसकी जो कृपा का, आशीर्वाद का अनुभव है, वह आप अपनी नसों पर जान सकेंगे, अपने चरित्र में जान सकेंगे। अपने व्यवहार में जान सकेंगे, अपने दोस्तों में जान सकेंगे, अपने समाज में जान सकेंगे। अपने देश में और विश्व में उसे जान सकेंगे।

यही उसका आशीर्वाद है और आज वह दिन आ गया है कि उसको फिर से प्रस्थापित किया जाए, उसको फिर जाना जाए, उसको भूला न जाये। घबराने की कोई ऐसी बात नहीं है। समय की बात है, यह समय आ गया है समय-समय की बात होती है। आज बहार आ गई है और हजारों लोग, करोड़ों लोग उस पुष्प की स्थिति से अब फल होने जा रहे हैं। परमात्मा आप सब को सुखी रखे। आशा है, **सहजयोग में प्राप्त करने के बाद आप लोग अपनी इज्जत करें आप योगीजन हों, उसके प्रति अग्रसर हों। पूरा चित्त लगायें। बैठक करें। बैठक किये बगैर यह कार्य आगे नहीं हो सकता। जागृति आसान है लेकिन इसका पेड़ बनाना आपके हाथ में है।** जो कुछ मैंने कहा उसको आज तक नहीं रखना। इसके आगे अगले साल मैं चाहती हूँ कि सब लोग एक बड़े-बड़े वृक्ष की तरह इस देहली के शहर में खड़े हो जायें तो देखिये दुनिया बदलने में कुछ टाइम नहीं लगेगा। परमात्मा आप सब को सुबुद्धि दे।

राज राजेश्वरी पूजा
हैदराबाद – 21.1.94

आज हम श्री राज राजेश्वरी की पूजा करने वाले हैं। खासकर दक्षिण में देवी का स्वरूप अनेक तरह से माना जाता है। उसका कारण यहां पर आदिशंकराचार्य जैसे अनेक देवीभक्त हो गए हैं। और उन्होंने शाक्त धर्म की स्थापना की अर्थात शक्ति का धर्म दो तरह के धर्म एक साथ चल पड़े। रामानुजाचार्य ने वैष्णव धर्म की स्थापना की और दो तरह के धर्मों पर लोग बढ़ते-बढ़ते अलग हो गये। असल में जो वैष्णव है उसका कार्य महालक्ष्मी का है और महालक्ष्मी के जो अनेक स्वरूप हैं उनको अपने में आत्मसात करना है। जैसे की धर्म की स्थापना करना और मध्यमार्ग में रहना। न तो बाएं में जाना न दायें में जाना मध्य मार्ग में रहना। इन्हीं को वैष्णव कहते हैं। फिर आगे चलकर वैष्णव धर्म गुजरात आदि सब देशों में सहस्रार। वैष्णव मार्ग से जब आप गुजरते हैं, कुण्डलिनी के द्वार तो आप अन्त में सहस्रार में पहुँच गये। लेकिन सहस्त्रार में ब्रह्मरन्ध्र पर सदाशिव का स्थान है। सो वैष्णव धर्म करने से आप अन्त में पहुंच जाते हैं सदाशिव के पास जो कि शक्ति धर्म का ही अंग है। लेकिन ये समझना चाहिए कि कुण्डलिनी शक्ति है और कुण्डलिी शक्ति मध्य मार्ग से ही गुजरती है। तो दोनों को अलग कैसे किया जा सकता है। शक्ति का जो मार्ग है वो भी मध्य मार्ग है। दोनों एक साथ बंधी हुई चीजों को अलग-अलग कर दिया गया। उसकी वजह ये कि कुण्डलिनी का उत्थान उन दिनों में होता नहीं था। महाराष्ट्र में कोल्हापुर में महालक्ष्मी का मन्दिर है जहां वो जागृत अवस्था में है। वहां बैठकर के लोग गाते हैं– उदय-उदय अम्बे। अम्बा तो शक्ति है। कुण्डलिनी को अम्बा कहते हैं। तो उस महालक्ष्मी मन्दिर में बैठकर के वो गाते हैं कि शक्ति तू जागृत हो। उनको यह नहीं पता कि वो क्यों गाते हैं। तो वैष्णव व अपना मार्ग बनाते हैं। रास्ता बनाते हैं, पथ बनाते हैं। और जब वो पथ बन जाता है तब उससे कुण्डलिनी का जागरण होता है। सहजयोग में हम लोग भी यही करते हैं। जब आप लोग मेरी ओर ऐसे हाथ करके बैठते हैं तो आपके सातों चक्र धीरे-धीरे ठीक होते हैं मानो आप वैष्णव बनते जा रहे हैं। आप चरम से मध्य में आ जाते हैं। और आपके चक्र ठीक से बैठने लग जाते हैं। जब चक्र आपके ठीक हो जाते हैं तभी कुण्डलिनी जागृत होती है। इसलिए पहले आप वैष्णव बनते हैं, उसके बाद आप शक्ति बनते हैं। इस प्रकार से दोनों चीजें एक ही हैं।

किन्तु दक्षिण में देवी के अनेक स्वरूप माने गये हैं और उसमें से राज राजेश्वरी को बहुत ज्यादा माना जाता है। अब देखा जाए तो लक्ष्मी जो है वो वैष्णव पथ पर है विष्णु के पथ पर। विष्णु की पत्नी है और इसलिए ये लक्ष्मी का एक स्वरूप बताया गया है जो कि शक्ति का ही स्वरूप है। राज राजेश्वरी का मतलब है कि जब कुण्डलिनी नाभि में आ जाती है जहां पर उसे लक्ष्मी का स्वरूप प्राप्त होता है। ऐसा कहें या लक्ष्मी का परिणाम उस पर आता है। या जब ये कुण्डलिनी नाभि चक्र में आती है। सो लक्ष्मी स्वरूप ये किस प्रकार की होती है? इस पर अनेक तरह की लक्ष्मियों का आरोपण है। गृह लक्ष्मी है, राज लक्ष्मी है। इस तरह से अनेक लक्ष्मियों हैं। पर ये लक्ष्मी तभी उन स्वरूपों को प्राप्त करती है जब इसमें कुण्डलिनी की शक्ति आ जाती है। कुण्डलिनी के शक्ति के मिलन से ही ये स्वरूप आता है। इसलिए राज राजेश्वरी, कुण्डलिनी की शक्ति नाभि पर आने पर जो स्वरूप धारण करती है उसी को लोग राज राजेश्वरी मानते हैं। या कहा जाए आदि शक्ति का स्वरूप नाभि चक्र में जो होता है उसे राज राजेश्वरी कहते हैं। अब जिस इन्सान के नाभि चक्र में राज राजेश्वरी की स्थापना हो गयी, माने गृहलक्ष्मी हो गयी बाईं ओर में तो दायी ओर में राज राजेश्वरी हो गई। राज्यलक्ष्मी की जो अन्तिम स्थिति है वो राज राजेश्वरी की है। अब ये राज राजेश्वरी की स्थिति में एक सहजयेगी को कैसे होना चाहिए। इसमें लक्ष्मी का तो आर्शीवाद आना ही है। जब ऐसे मनुष्य पर कुण्डलिनी जागरण के बाद लक्ष्मी का आर्शीवाद आ गया, और आना ही है, जितने भी सहजयोगी हैं उन पर लक्ष्मी का आर्शीवाद आ गया है। और कभी-कभी लक्ष्मी काफी बढ़ सकती है। अन अपेक्षित और नहीं भी बढ़ने पर ऐसे इन्सान की तबीयत एक राजाओं जैसी हो जाती है। जब तक आपकी तबीयत

वैसी होती नहीं तब तक समझना चाहिए कि कुण्डलिनी अभी नाभि में ही घूम रही है। तबीयत बदल जाती है। सहज योग में आने के बाद जो सबसे बड़ा चमत्कार होता है कि मनुष्य की तबीयत बदल जाती है। उसका स्वभाव बदल जाता है। जो आदमी अलक्ष्मी से भरा है, जिसके अन्दर लक्ष्मी दिखाई नहीं देती, माने ये के बहुत से रईस लोग भी होते हैं लेकिन वो कंजूस होते हैं तो उनको कोई लक्ष्मी पति नहीं कह सकता। उनमें लक्ष्मी का कोई स्वरूप भी दिखाई नहीं देता, भिखारी जैसे रहते हैं हर समय पैसे के लिए रोते हैं किसी के लिए दो पैसा निकालना उनके लिए मुश्किल है। ऐसे जो कंजूस लोग होते हैं उनको कहना चाहिए कि उनके अन्दर अभी कुण्डलिनी का जागरण ही नहीं हुआ। कंजूसी के मारे मरे जाते हैं। इतने कंजूस होते हैं इतना पैसे के बारे में सोचते हैं कि उनका जिगर भी खराब हा सकता है। उनकी शक्ल बिल्कुल भिखारियों जैसी लगेगी। लक्ष्मी को प्राप्त करना ही कार्य नहीं है कुण्डलिनी का। जो लक्ष्मी का स्वरूप है उसको अपने अन्दर उतारना ही कुण्डलिनी का कार्य है। तो राज राजेश्वरी जिसको मानते हैं, जो ये कुण्डलिनी की शक्ति है जो आपके अन्दर लक्ष्मी पति का स्वरूप उतारती है, वो राजेश्वरी है। इसका मतलब ये नहीं कि आपके पास खूब रुपया पैसा आ जाएगा, पर दानत्व, जैसे कि आप कोई राजा हैं। राज राजेश्वरी का मतलब है कि आप राजा तबियत हो गये। अपने तो राजा लोग भी महाभिखारी होते हैं। और कंजूस होते हैं झूठे होते हैं पैसा खाते हैं सब काम करते हैं। लेकिन यहां तो शुद्ध स्वरूप कि बात हो रही है। जो राज राजेश्वरी का पुजारी है, जिसने उसे प्राप्त कर लिया उसके इतने गुण होते हैं कि शायद आज मैं इस भाषण में न बता सकूं। लेकिन सबसे बड़ी वो चीज है कि ये होती है कि उसके अन्दर दानत्व, उदारता आ जाती है। उदार हो जाता है क्योंकि वो जानता है की मैं राज राजेश्वरी कि शक्ति से प्लावित हूं। मुझे पैसे कि या किसी चीज की दरकार ही नहीं रहने वाली तो क्यों न मजा उठा लूं। क्यों न लोगों को चीज देने से मजा उठा लूं। पहले जब कोई राजा लोग खुश होते थे तो अपने पास की सबसे कीमती चीज उठा कर दे देते थे। जिस आदमी में उदारता नहीं है, दानत्व नहीं है, उसका अर्थ अभी अधूरा ही पड़ा हुआ है। सबसे पहली चीज तो ये कि कोई राजा किसी से जाकर भीख नहीं मांगता। वो गरीब हो जाए और उसकी सारी सम्पति लुट जाए तो भी वो किसी से जाकर भीख नहीं मांगता। वो मर जाएगा पर भीख नहीं मांगेगा। तो राजा तबियत सहजयोगी हो जाते हैं। उसके रहन-सहन में भी एक राजा तबियत होती है। वो फटे कपड़े पहन कर के नहीं घूमते जैसे कि हरे रामा वाले लोग हैं। श्री राम का नाम लेते हैं श्री कृष्ण का नाम लेते हैं और कृष्ण स्वयं कुबेर हैं और उनकी प्रजा बनकर भिखारी बनकर घूमते हैं। किसी भी तरह से उनको तो कृष्ण का तत्व ही पता नहीं है। लेकिन सहजयोगियों को पता होना चाहिए कि आपकी तबियत के अनुसार परम चैतन्य आपकी स्थिति बनाएगा। जो आदमी हमेशा पैसे के लिए रोता रहेगा उसकी हालत हमेशा वैसी ही रहेगी। जो इन्सान हर समय पैसे को तोलता रहेगा और देखता रहेगा कि मैं किस तरह से पैसा बनाऊं, यहां तक सहजयोग में आकर लोग चाहते हैं कि सहजयोग में पैसा बनाएं ये तो बिल्कुल ही गये गुजरे लोग हैं।इनसे गए बीते तो कोई भी नहीं है। एक बार अकबर बादशाह ने बीरबल से पूछा कि सबसे गए बीते लोग कौन हैं तो उन्होंने कहा कि जो भगवान के मन्दिर में आकर लोगों से भीख मांगते हैं। जब भगवान बैठे हैं तो लोगो से भीख काहे को मांगते हैं। इसी प्रकार सहजयोग में भी ऐसे लोग हैं, बहुत ही कम हैं पर हैं, जो सोचते हैं कि सहजयोग में आकर हम किसी बात से पैसा बनाएं। हमें कुछ लोगों ने बताया कि गणपति पुणे में कुछ लोग सामान लेकर आए थे उसे बेच रहे थे। एक साहब जरूर हैं जो हमसे पूछ कर लाए और उन्होंने बेचा। और जो कुछ भी उनको मुनाफा हुआ वो उन्होंने सहजयोग को दे दिया। मैं ये कहती हूँ कि ये भी नहीं करना चाहिए। पर वो कहते हैं कि हमारी वजह से लोगों को सहूलियत होती है। उन्हें साड़ियां मिल जाती हैं। पर जो आदमी सहजयोग में आकर सिर्फ पैसा कमाना चाहता है वो तो ऐसा है कि उसको तो सहजयोगी कहना ही नहीं चाहिए। आप समझ ही नहीं सकते कि राज राजेश्वरी की शक्ति क्या है। उसकी शक्ति से मनुष्य पैसा हो या नहीं हो कोई आपके अन्दर डर, अभाव की भावना ही नहीं रहती कि मुझे कोई अभाव है। पूर्ण लोग होते हैं। मुझे क्या जरूरत है। मैं क्यों डरूं? मैं जहाँ रहूंगा मेरे लिए वहीं समृद्धि है। वही मैं सब कुछ चीज प्राप्त कर सकता हूँ। और वो एक बहुत ही आलीशान तरीके से अपना जीवन व्यतीत करते हैं। उसकी तबियत एक बहुत ही भव्य, महान इन्सान के जैसे होती है। उसको देने में ही मजा आता है लेने में नहीं। कोई आदमी रईस होगा तो अपने घर में कोई गरीब होगा तो अपने लिए। पर अगर वो सहजयोगी है चाहे वो अमीर है या गरीब उसके लिए वो सर आँखों पर। पूरी तरह से उसकी मदद करने को तैयार रहता

है। सहजयोग में ऐसे भी लोग हैं जो असहज लोगों के लिए बहुत करते हैं। पर अगर सहजयोगी कोई गरीब आ जाए तो उसको बैठने के लिए कुर्सी भी नहीं देते। वो बाह्य के आडम्बरों को देखकर के बहुत से लोग महत्व करते हैं। ये बड़े महान हैं। इनके पास इतनी मोटरें हैं। ये बड़े भारी यहां के मशहूर एक्टर हैं, डाक्टर हैं या आर्कीटेक्ट हैं। बहुत बड़े आदमी हैं। ये जो बाह्य कि उपाधियां हैं, उसका महत्व करते हैं। पर कोई अगर ये सोचता है कि ये जो शक्ति का संचय इसके अन्दर है। इतनी चैतन्य कि लहरें इसमें से बह रही हैं। ये कौन औलिया है? उसको राज तबियत कहते हैं। अपने देश में भी ऐसे बहुत से लोग हो गए हैं। शिवाजी महाराज का उदाहरण खासकर सोचने में आता है। स्वयं तो वो थे ही आत्मक्षात्कारी और आदर्श पुरुष पर उनका सन्तों के प्रति जो व्यवहार था वो अत्यन्त सुन्दर और नम्र थे। उनके पास उनके गुरू रामदास एक दिन आए और उन्हें बाहर से ललकारा। शिवाजी महाराज ने एक चिट्ठी लिखकर उनकी झोली में डाल दी। उस चिट्ठी में लिखा था कि गुरू जी मैंने अपना सारा साम्राज्य, सत्ता आपकी झोली में डाल दी। उस चिट्ठी को पढ़कर गुरू रामदास हंसे, हंसकर उन्होंने कहा बेटे हम तो सन्यासी हैं, हम क्या तुम्हारे साम्रज्य लेकर करेंगे? तुम तो राजा हो और तुम्हारा कर्तव्य है लेकिन हां अगर तुम सोचते हो कि इस साम्राज्य को भक्ति से चलाएं तो इसका झंडा जो है, जो हम छाती पहनते हैं, उस रंग का त्रिकोणी झंडा बना लो। उस झंडे से लोग जान जाएंगे कि तुम भी एक सन्यासी भाव से राज कर रहे हो। उसके प्रति कोई खिचाव लगाव तुमको नहीं है। तुम हो राजा लेकिन उसको तुम जानते नहीं हो कि तुम राजा हो। जो लोग अपने ही , मैं राजा हूं, पागल जैसे कहते फिरते हैं फलाना हूं वो होते नहीं हैं और जो होते हैं वो कभी कहते भी नहीं। ऐसे बहुत से लोग आपको दिखाई देंगे। एक बार हम लन्दन में सफर कर रहे थे। हमारे साथ एक साहब बुजुर्ग बैठे हुए थे बातें करने लग गये। वहां ज्यादातर औरतों से कोई बात नहीं करते। आपस में ऐसे ही बात करते हैं। लेकिन उन्होंने हिन्दुस्तान के बारे में बहुत कुछ पूछा, ये कैसे हैं, वो कैसे हैं, तो मैंने कहा आप हिन्दुस्तान में आओ। मैं ५। भारत में इतने साल था। ऐसी बात नहीं हैं और कुछ नहीं बताया अपने बारे में कौन थे क्या थे। उसके बाद वो उतर कर चले गये हम भी उतर कर चले गये। उसके बाद एक दिन हम और हमारे पति जा रहे थे तो उनसे मुलाकात हुई ट्रेन में। तो उन्होंने कहा हमारे घर आइये हम लोग बातें करेंगे हिन्दुस्तान के बारे में ये वो। तो जाकर देखा बडा भारी आलीशान मकान, बहुत शान से रह रहे हैं। पता हुआ कि वो अपने यहा वायसराय थे। लेकिन उन्होंने कहा नहीं अपनी जबान से और पता भी नहीं हुआ कि वह वायसराय थे। और कोई वायसराय से मिल भी नहीं सकता था पहले जमानें में और इतनी नम्रता से उन्होंने बात की, किसी चीज की जरूरत हो तो बताइए। और जो मुझे महत्व दिया मैंने सोचा कि मुझे इतना क्यों महत्व दे रहे हैं। कोई परेशानी तो नहीं हो रही? यहां के लोग अक्खड़ हैं ये वो सब बातें कहीं हिन्दुस्तान के जैसे नहीं है, धार्मिक नहीं है। इतनी सारी बातें करने के बाद भी उन्होंने ये नहीं बताया कि वो यहां वायसराय रह चुके हैं और इतनी उनको श्रद्धा है हिन्दुस्तान के बारे में है। और इतने प्रेम से हिन्दुस्तानियों की बातें बता रहे थे। अपने यहां तो अगर कोई मन्त्री का सचिव हो जाए तो उसकी खोपड़ी खराब हो जाती है। इस तरह लोगों के दिमागों में थोड़ा सा भी कुछ मिलने पर खोपड़ी खराब हो जाती है और ये लक्षण राजाओं का नहीं है।

राजाओं कि पहली चीज है कि अत्यन्त नम्रता होनी चाहिए। अक्खड़पना आता है किसलिए? अक्खड़पना आता है कि वो सोचता है कि इतना पैसे वाला हूं मैं सब को डांट सकता हूँ, झाड़ सकता हूं। और अगर वो कुछ पढ़ा लिखा है या कोई बड़ी नौकरी में हो, कुछ हो, बड़े बाप का बेटा है तो बहुत ही अक्खड़ता चढ़ जाती है। उससे तो आप बात ही नहीं कर सकते। अधजल गगरी छलकत जाए जो परिपूर्ण है इन्सान वो अत्यन्त नम्र होता है। सादगी होती है उसके अन्दर। आप समझ जाएंगे कि जब तक आप परिपूर्ण नहीं हैं आप झूठा घमंड झूठा गुस्सा और एक अजीब तरह का व्यक्तित्व आप प्राप्त करते हैं कि सब आपका नाम सुनते ही भाग खड़े होते हैं। एक तो भिखारी जैसे होते हैं। मेरे को ऐसा हो गया मेरे बाप को ऐसा हो गया, उनको ऐसा हो गया मेरे को ऐसा हो गया। मेरे पास पैसे नहीं है मेरे पास ये नहीं है। मुझे ये चाहिए। एक भिखारी जैसे और दूसरे आते हैं वो चिल्लाते हुए तो पहले वैष्णव बनना होगा, मध्य में आना होगा। मध्य में आए बगैर आप राज राजेश्वरी की शक्ति को प्राप्त नहीं कर सकते। आपके अन्दर की शक्ति चल ही नहीं सकती। जैसे कि प्लास्टिक के पेड़ को पानी डालने से फायदा क्या होगा। इसी तरह इन लोगों में एक तरह का आडम्बर एक तरह का झूठा तमाशा।

मनुष्य में लालच एक बहुत गंदी चीज है, अनहोनी चीज़ है। दूसरों की चीजों का लालच करने वाले बहुत ही

गए-गुज़रे लोग होते हैं। और सहजयोगियों के लिए तो बड़ी परेशानी की बात है। एक तरफ तो वो सहजयोगी हैं और दूसरी तरफ लालच।मगर के मुँह में उनका पैर है तो वे नाव में कैसे आएंगे? मजा उठाना जब आ जाए और उसका आनन्द लेना, उसका समाधान लेना, जैसे शबरी के बेर खाकर श्रीराम इतने सन्तुष्ट हो गये। उस चीज को जब आप समझने लग जाएंगे तब कहना है कि आप राज राजेश्वरी की शक्ति से प्लवित हैं। पोषित है। प्रेम से अगर कोई छोटी सी चीज, अब कोई छोटी सी चीज ही दे दे कोई सुपारी ही दे दे। और मैं सुपारी खाती नहीं हूं तो भी जरूर खाऊंगी। और खाना चाहिए। क्योंकि उससे दूसरा आदमी खुश हो जाएगा। उसे क्या पता कि मैं सुपारी नहीं खाती। माने ऐसा है कि कोई सी भी चीज वस्तु संसार की जो भी इसमें जैसे शीशे में आप पारा लगा दें, साधारण, सर्व साधारण शीशा, जो पारदर्शी है, उसमें अगर पारा लगा दें तो शीशा बन जाता है। इससे आप अपनी शक्ल देख सकते हैं। कोई सी भी वस्तु में आप प्रेम जड़ दे वो वस्तु इतनी सुन्दर हो जाती है फिर ये मन करता है ये किसे दें? जैसे बाजार जाएंगे तो मन करेगा हां ये उन के लिए ठीक है अपने लिए क्या ठीक है ये विचार ही नहीं आना चाहिए। इसका अगर विचार छूट जाए कि मैं क्या पसंद करती हूं मुझे क्यों चाहिए तो खो गये। इसका मतलब ये है कि वो सर्वव्यापी शक्ति आपके अन्दर आयी नहीं है अगर सर्वव्यापी शक्ति आपके अन्दर आ गयी तो आप बहुत सौम्य हो जाएंगे और जान लेंगे कि किसे किस चीज की जरूरत है। जैसे आप कहीं गये और देखा कि सुन्दर सा दीप है।उनके घर मैं गयी थी उनके पास दीप नहीं था।उनके लिए ये दीप ले लेना चाहिए। सबकी जरूरतें समझ में आने लग जाती हैं जब अपनी जरूरतें कुछ नहीं रहती। सबकी तकलीफें याद आ जाती हैं। कोई बीमार है, किसी चीज की जरूरत है, किसी के पास एक टेपरिकार्डर नहीं है वो मेरा भाषण सुनना चाहते हैं। सब पता हो जाता है और उसको वो चीज दे दें तो कहेगा मां ये आप को पता कैसे। पता नहीं कैसे लग जाता है। इसलिए प्यार को ज्ञान कहते हैं ज्ञान ही शुद्ध प्रेम है। क्योंकि आप किसी के साथ भी शुद्ध प्रेम करते हैं आपको उसके प्रति सारा ज्ञान आ जाता है। वो चाहे फिर महामाया हो आप जान सकते हैं।पर शुद्ध प्रेम होना चाहिए। शुद्ध प्रेम से सारा ज्ञान आपको मिल जाएगा। कोई सा ज्ञान हो किसी भी प्रकार का अगर आप शुद्ध प्रेम की दृष्टि से देखते हैं।

तो जब आपकी जागृति हो जाती है तो आप विश्व बन्धुत्व में आ जाते हैं अब कितनी बड़ा काम है ये राज राजेश्वरी का कि वो सबके बारे में विचार करती है जैसे एक राजा की रानी है तो वो प्रजा की तकलीफें है उन्हें देखेगी, उनकी परेशानियों को दूर करेगी। वो बैठ कर ये तो नहीं गिनेगी की जेवरात कितने हैं, हीरे कितने हैं। वो ये देखेगी कि मेरी प्रजा में कितने लोग परेशान हैं। छोटी से छोटी चीज उनको क्या चाहिए। इसी तरह आपकी भी तबीयत हो जानी चाहिए। जब तक हम अपने से उठकर विश्व में व्यापक नहीं होते हैं तब तक आप विश्व निर्मल धर्म के पुजारी कैसे हो सकते हैं और विश्व निर्मल धर्म कोई बाहर का तो है नहीं कि जैसे हम हिन्दू हैं, मुसलमान हैं, ईसाई हैं। ऐसे तो हैं नहीं। ये तो अन्दर का प्रकाश है और इस प्रकाश में मनुष्य भव्य व्यक्ति बन कर निकल आता है। वो ये नहीं सोचता कि मुझे क्या चाहिए क्या करना है। वो ये सोचता है मैं औरों के लिए क्या कर सकता हूँ। अभी तो मैं कम ही हूं। मां मैंने सौ आदमियों को आत्मसाक्षात्कार दिया और तो मैं कर ही नहीं पाया। ऐसा जब वो सोचने लग जाता है तब सोचना चाहिए कि उसके अन्दर राज राजेश्वरी की शक्ति कूद रही है। वो कौंध रही है, परेशान कर रही है कि तू करता क्या है? तेरे पास इतनी शक्ति है, तू देता क्यों नहीं इसको? पैसे से कोई तोल नहीं सकता। किसी भी चीज से नहीं। अब आज देखिये कि फोन आया रशिया से तो मुझे देर हो गयी।रास्ते में मैंने पूछा कि भई कहां बैठे हैं सब लोग तो कहने लगे खुले में।तो मैंने कहा अरे, भई कोई छत वत नहीं लगाया तमने। तो उनकको मालम नहीं था कहने लगा माँ ये ठंडी-ठंडी हवा तो बह रही है। तो मैंने कहा होना तो चाहिए। मुझे अपने सिर पर छत औरों पर नहीं तो मुझे अच्छा नहीं लगेगा। तो कहने लगे ऐसा ही है आपके ऊपर छत औरों पर नहीं तो मैंने कहा ये गलत बात है। जब देखा मैंने सबके सर पर छत है तो मुझे बड़ा अच्छा लगा। इसी प्रकार छिंदवाड़े में बड़ी गर्मी हो गयी थी और सब लोग खुले में बैठे थे। पूरे समय मुझे यही फिकर लगी रही कि ये क्या हो रहा है। सब लोग बता रहे थे मां हमको तो ठंड लग रही थी अन्दर से। इतने धूप में बैठे-बैठे लोगों को ठंड लग रही थी। वही राज राजेश्वरी की शक्ति सब जगह सबका हित करती है। हित से भी ज्यादा कहना चाहिए कि सबको आराम देती है। सुख, आनन्द प्रदान करती है। और वो शक्ति आपके अन्दर भी है। उसको आप चाहें तो कहां से कहां पहुंचा सकते हैं।एक पैसे से भी जो काम हो सकता है वो हजारों

रूपयो से नहीं हो सकता। लेकिन देने की शक्ति महान होनी चाहिए। फिर से कहूंगी कि विदुर के घर जाकर श्रीकृष्ण ने साग खाया लेकिन दुर्योधन का मेवा नहीं खाया। इन सब चीजों में बड़ा भारी संकेत है। वो ये कि प्रेम से भरी चीज उसका दाम किसी भी चीज से तोल नहीं सकते। सो वैष्णवों को चाहिए कि अपने लक्ष्मी तत्व को साफ करें और उसके लिए मेरी जरूरतें कुछ नहीं है सारी जरूरतें दूसरों कि हैं, इसलिए मैं सहजयोग में आया हूं, ऐसे विचार लाइये। कल आपको आश्चर्य होगाकि कार्यक्रम के बाद इतने लोग आए। मुझे बड़ा आनन्दआया। पर एकदम मेरा दायां हृदय पकड़ गया, बुरी तरह से। मेरी समझ में नहीं आया कि यहां दायां हृदय इतनी बुरी तरह से क्यों पकड़ रहा है। ऐसा तो कभी भी नहीं हुआ। ये वही शक्ति है जिसने संकेत दिया। फिर मैंने पूछा कि यहां गृहलक्ष्मियों का क्या हाल है। हैदराबाद में लोग गृहलक्ष्मी से किस तरह से व्यवहार करते हैं। तो पता हुआ कि बहुत ही बुरी तरह से व्यवहार करते हैं उनकी कोई इज्जत ही नहीं करते। और हर समय झाड़ते रहते हैं। माँ की इज्जत करते हैं पर बीबी की नहीं करते, कहते हैं मुस्लिम प्रभाव आया हुआ है। पता नहीं है औरत की इज्जत करने के लिए कितना बताया गया है कुरान में, वो नहीं करते। बेवकूफी है। उसमें जितनी इज्जत् औरत की है और कहीं है ही नहीं। तब मुझे समझ में आया कि जहां स्त्री की पूजा होती है, यत्र नार्या पूजयन्ते तन्त्र रमन्ते देवताः। जहां स्त्री की इज्जत नहीं होगी वहा पर कभी देवताओं का वास हो नहीं सकता। निःसन्देह कहना चाहिए कि अगर आपने अपनी पत्नी की पूर्णतः इज्जत की तो बच्चे भी आपकी इज्जत करेंगे और वो एक दूसरे की इज्जत करेंगे। ये निश्चित बात है। पर अगर स्त्री स्वयं ही पूजनीय न हो और वो इस तरह के कार्य करती है जो पूजनीय नहीं है तो फिर उसको ठीक करना चाहिए। लेकिन अगर वो अच्छी औरत है और वो बच्चों को संभालती है, घर को प्रेम से रखती है ऐसी औरत की इज्जत घर में ही नहीं समाज में भी होनी चाहिए। आप सोचिए कि मेरा दायां हृदय पकड़ गया और मैं आधे घंटे तक तड़पती रही। वो तड़पन जो आप अपनी पत्नियों को देते हो वो मेरे अन्दर आ गयी। अब हो सकता है कि स्त्री इतना ज्यादा सहजयोग नहीं समझती हो बुद्धि से, पर हृदय से समझती हैं। स्त्रियां हृदय से चीज को समझती हैं, और पुरूष मस्तिष्क से समझता है। लेकिन हृदय से समझना भी बहुत बड़ी चीज है। और स्त्री को हमेशा शक्ति स्वरूपा माना गया है। जिस घर में स्त्री का मान नहीं होगा। कोई कार्य वहां ठीक से हो ही नही सकता। कारण स्त्री जब शक्ति है। अगर समझ लीजिए इसमें (माइक) अगर बिजली नहीं होगी तो मेरा बोलना बेकार है। इतनी बड़ी भारी चीज यहां लाकर रख दी और ये किसी काम की नहीं इसमें अगर बिजली नहीं है तो। अगर घर की स्त्री को आप इस तरह से दबाएंगे और उसका मान नहीं रखेंगे तो शक्ति आपके अन्दर दौड़ नहीं सकती। सबसे बड़ा दोष है। कल क्या कभी भी नहीं हुआ मुझे ऐसे कार्यक्रम के बाद कि दायां हृदय इतने जोर से पकड़ गया। मैं तो सोचती थी ये चीजे उत्तरी भारत में ज्यादा हैं पर दक्षिण भारत में और भी ज्यादा हैं। हिन्दुस्तानियों में दोष है कि नारी की शक्ति का मान नहीं रखते। सबसे बड़ा दोष है।इधर देखें तो देवी की पूजा करेंगे। कन्या रूप में मानेंगे। सब रूप में मानेंगे पर गृहलक्ष्मी के रूप में नहीं मानेंगे। इसलिए आज साफ-साफ बता रहे हैं कि अगर आप सहजयोगी हैं तो अपनी स्त्री के प्रति आदर युक्त रहें। खुले आम मैंने सुना कि आप झाड़ते रहते हैं। पुरुष को कोई अधिकार नहीं है कि नारी का अपमान करे। किसी भी वजह से मेरे विचार से एक ये चीज ठीक हो जाए तो राज राजेश्वरी की शक्तियां जागृत हो जाएंगी। पूरी तरह से समझ लेना चाहिए कि पति पत्नियां एक ही रथ के दो चक्के हैं। एक बायां और एक दायां। बायां दायें में नहीं जा सकता, दायां बायें में नहीं जा सकता। पर दोनों का स्थान जरूरी है। दोनों एक जैसे ही हैं पर स्थान अलग-अलग हैं। इनका मतलब कोई ऊंचा नीचा नहीं हो सकता। अगर रथ ऊंचा नीचा हो जाए तो आगे जाएगा ही नहीं। गोल-गोल घूमता रहेगा। बच्चे भी आपसे यही सीखेंगे। जो बच्चे मां का आदर नहीं करते वो क्या सीखेंगे? दुनिया में वो मेरा क्या आदर करेंगे? इसलिए आप सबसे विनती है कि आप घर की नारी का अपमान नहीं करें। उसे किसी तरह से नीचा नहीं दिखाएं। उसकी शक्ति आपके लिए बहुत जरूरी है। उसी तरह स्त्री को भी सहज में उतर कर अपनी शक्ति को सम्हाल लेना चाहिए। और शक्ति में उतर जाना चाहिए।

आप इतने लोग पूजा में आए हैं और सारे भारतवर्ष से लोग आए हैं मुझे बिल्कुल उम्मीद नहीं थी। अब सहज वास्तव में ही समग्र हो रहा है और इतने प्यार से ये सब चीजें हो रही हैं, हर जगह जब भी देखती हूँ लगता है सहज जोरों में फैल रहा है। पर एक ही बात को जान लेना चाहिए कि हम कितने गहरे उतरें। ये जरूरी है। तादाद बहुत हो जाए गिनती बढ़ जाने से कुछ फायदा नहीं होगा। जब तक

आपके अन्दर सहजयोग के मूल्य नहीं उतरेंगे, श्रेष्ठता नहीं आएगी। आप अगर राज राजेश्वरी को मानते हैं तो उसकी शक्ति का प्रादुर्भाव, अभिव्यक्ति आपके अन्दर होनी चाहिए। गहनता के बिना तो ऐसा हुआ जैसे एक चोला बदलकर आपने दूसरा पहन लिया। अन्दर कुछ भी नहीं। ये अन्दरूनी शक्ति है, ये शक्ति आपके व्यवहार में, बातचीत में दिखनी चाहिए।

हमारा अनन्त आशीर्वाद

श्री गणेश पूजा
दिल्ली – 05.12.1993

इस यात्रा की शुरूआत हो रही है और इस मौके पर जरूरी है कि हम गणेश पूजा करें खासकर दिल्ली में गणेश पूजा की बहुत ज्यादा जरूरत है। हालांकि सभी लोग गणेश के बारे में बहुत कम जानते हैं। और क्योंकि महाराष्ट्र में अष्ट विनायक हैं और महा गणपति देव तो गणपति पूले में हैं। इसलिए लोग गणेश जी को बहुत ज्यादा मानते हैं। लेकिन उनकी वास्तविकता क्या है? गणेश जी हें क्या? इस बारे में बहुत कम लोग जानते हैं। अब जो भी बात हम आपको बता रहे हैं यह सहजयोगी होने के नाते आप लोग समझ सकते हैं। आम दुनिया इसे नहीं समझ सकती। एक हद तक आम दुनिया, विशेषकर बुद्धि परस्त लोग सहजयोग को देख सकते हैं। किन्तु इस योग को घटित होने में जो देवी देवता मदद करते हैं वो इसे नहीं मानते। और परमचैतन्य को भी अनेक तरह के नाम दे कर के वो समझाते हैं। कि ये अंतरिक्षीय (Cosmic) है पता नहीं वो भी समझते हैं कि नहीं। तो सबसे पहले इस पृथ्वी की रचना होने से पहले परमात्मा ने ही सोचा आदिशक्ति ने यही सोचा कि इस पृथ्वी पर सबसे पहले पावित्र्य आना चाहिए, पवित्रता आनी चाहिए। और पवित्रता जब वहां लाई जाएगी उसके बाद सृष्टि में चैतन्य चारों ओर कार्यान्वित होगा। लेकिन ये समझ लिजिए कि परम-चैतन्य चारों ओर फैला हुआ है। लेकिन उसका असर तभी आता है जब आपके अन्दर पवित्रता होगी। अगर आप पवित्र नहीं है, आपके विचार शुद्ध नहीं हैं या आप किसी और ही सतह पर रह रहे हैं, तो आप सहज कि गहराई में नहीं उतर सकते। ये सूक्ष्मता जो आपने सहज में प्राप्त की है। इसमें सबसे बड़ा काम श्रीगणेश ने किया है। तो श्री गणेश परम चैतन्य के चेतक है। यों कहना चाहिए कि श्री गणेश से ही ये परमचैतन्य आलोकित हुआ है। और हर एक चक्र पर ये कार्य करते हैं। हर चक्र में जब तक निर्मलता, पवित्रता न आ जाए तब तक कुण्डलिनी का चढ़ना असम्भव है। और चढ़ती भी है तो वो बार-बार गिर जाती है। कुण्डलिनी और गणेश जी का सम्बन्ध माँ और बेटा का है। इसकी बात को हम जानते हैं कि जब पार्वती जी नहा रही थी – तब उन्होंने अपना मल निकाल कर, उनके मल में तो चैतन्य भरी हुई है, उससे श्री गणेश बनाए और उनको बाहर बिठा दिया। उस वक्त एक बात समझनी चाहिए कि गणेश जो बनाया वो सिर्फ आदि शक्ति ने बनाया। उसमें सदाशिव का बड़ा भारी हाथ नहीं था। परमात्मा का इसमें हाथ नहीं था। सिर्फ आदिशक्ति ने श्री गणेश को बनाया। इसी तरह से आप समझ सकते हैं ईसा मसीह को ये जो कहते हैं कि गैबरील ने आकर जब मेरी को बताया कि तुम्हारे पेट से जग का उद्धारक पैदा होने वाला है तो वो कुंवारी थी। तो कुंवारेपन में किसी के यहां बच्चा हो तो अपने यहां उसे बड़ी शुभ बात नहीं समझते। पर अति शुभ कैसे श्री गणेश हैं? उनको पार्वती जी ने सदाशिव की गैरहाजिरी में बनाया। ये हिन्दुस्तानी बहुत आसानी से समझ सकते हैं। पर विदेशी लोग इसको नहीं समझ सकते क्योंकि वो ईसामसीह को मनुष्य ही समझते हैं, इससे ऊंचा नहीं उठ सकते। इसलिए उनको जो बौद्धिक परत है वो इतनी आमादा हैं कि किसी भी तरह से नहीं मान सकता कि कौमार्य अवस्था में इस तरह ईसा मसीह का जन्म हो सकता है। अब इसी बात की ओर गौर करें। अब आप लोग सहजयोगी हैं और आप लोगों ने चमत्कार देखे हैं। चैतन्य ने अनेक चमत्कार किए हैं। जिसका असर आप पर भी आ गया है और दुनिया कि तरफ आपकी नजर बदल गयी। ये जिन्होंने पाया है वो सोचने लगे हैं कि जो दुनिया में हम लोग देखते हैं वो माया उससे परे एक और दुनिया है ये सत्य है। ये सहजयोगी देखते हैं वो अपनी उंगलियों पर जान सकते हैं कि श्री गणेश की अभिव्यक्ति जो हुई वह सत्य है। जहां तक कि मैंने ग्रीस में देखा कि ग्रीस में अथेना (आदिशक्ति) का अवतरण हुआ।

और जब वहां गयी और उनको देखने गयी और पड़ोस में जो उनका मन्दिर बना हुआ है तो बाहर उन्होंने बताया कि यहां एक शिशु देव हैं। आश्चर्य की बात है। उनको मालूम नहीं है कि यह कौन शिशु देव हैं क्योंकि दूसरे लोगों ने आकर उनकी सारी परम्पराएं नष्ट कर दी हैं। हालांकि हिन्दुस्तान में अभी भी हमारी परम्पराएं जारी हैं। इसलिए उनको अविश्वास है। जब बातें मानते ही नहीं है। उसी

प्रकार अन्य एक जगह है, जहां हम गये थे, वहां पर उन्होंने कहा कि ये नाभि है और एक ऐसा गोल सा चट्टान जैसा पत्थर का टीला था। बहुत चैतन्य उसमें बह रहा था। पीछे से ऐसी लहरियां आने लग गई मैंने मुड़कर देखा तो वहां साक्षात गणेश खड़े हैं। उनको क्या मालूम कि गणेश क्या होते हैं? मैं देख कर हैरान हो गयी। स्वयम्भू और इतने चैतन्यपूर्ण। लेकिन बिना सहजयोग के गणेश के पास जाना बहुत मुश्किल है और उसके बाद भी जो धर्म के लोग आए, जिन्होंने वाकई धर्म जाना उनका चित्त धर्म पर था कि लोग स्वच्छ हो जाए, पवित्र हो जाए और लोग ऐसी दशा में चले जाएं कि सब उनका उद्धार होने का समय आएगा उस वक्त वो साफ हों इसलिए उन्होंने धर्म की ओर ज्यादा ध्यान दिया कि लोगों का धर्म कैसे ठीक किया जाए। जिससे कि लोगों में वो स्थिति आ जाए कि वो अपना आत्म साक्षात्कार आसानी से प्राप्त करें। हमारे यहां भी नानक आदि बड़े बड़े गुरू हो गए हैं उन्होंने यह मेहनत की कि मनुष्य कम से कम धर्म पर चलना सीखे। यानि कि वो सन्तुलित रहे माने उसके अन्दर के जो विचार हैं और वो पाप पुण्य में पुण्य ही देखता रहे।

श्री गणेश का कार्य और तरह का है। श्री गणेश अपनी शक्ति से ही दक्ष बन गए। उनकी शक्ति सबसे बड़ी है अबोधिता। उनके सिर पर हाथी का जो सिर है उसका मतलब यह है कि उनमें मनुष्य जैसे अहँ और प्रति अहँ नहीं है। और वो बच्चे हैं तो कहना चाहिये शाश्वत शिशु हैं। और उनका अवतरण इस संसार में ईसा मसीह के नाम पर हुआ। अब उसका हम लोग विज्ञान से हर प्रकार का अनुमान लगा लेते हैं। तो ऐसे कि मैंने कहा था कि श्री गणेश एक शक्ति है निराकार में और साकार में श्री गणेश जैसे हैं। इसका मतलब ये कि हमारे यहां अगर भोलापन, सादगी, सरलता, विश्वास हो, ऐसे निर्मल अन्तःकरण से श्री गणेश कि जागृति हो सकती है। श्री गणेश के बगैर तो कुण्डलिनी चढ़ नहीं सकती क्योंकि कुण्डलिनी गौरी है और उस गौरी को उत्थान करने में श्री गणेश उसके साथ हर समय उसे संरक्षित करते हैं। इतना ही नहीं हर चक्र पर जब कुण्डलिनी चढ़ जाती है तो उसके मुंह को बंद करके कुण्डलिनी को गिरने से रोकते हैं।

अब ये श्री गणेश हमारे अन्दर मूलाधार पर बैठे हैं। इसी में बहुत लोगों ने गलती कर दी मूलाधार चक्र जो है वो तिकोनाकार अस्थि में है। यह बहुत बड़ी गलती है। मूलाधार में सिर्फ कुण्डलिनी है और मूलाधार से नीचे मूलाधार चक्र में, मूलाधार में श्री गणेश विराजे हैं। और उसके कार्य क्या हैं, ये तो आप लोग सब जानते हैं। आपने हमारे फोटो देखे हैं कि हमारे पीछे श्री गणेश खड़े हैं हमारे ऊपर भी श्री गणेश हैं। इसी प्रकार आपके साथ भी होता है कि नहीं होता। लेकिन श्रीगणेश की शक्ति जो पवित्रता की है मैं जरूर कहूंगी कि हिन्दुस्तान में इसके मामले में सब लोग जानते हैं कि हमको पवित्र रहना है। परदेस में नहीं। परदेसियों को तो पहले से मलेच्छ कहते हैं माने इनको मल की ही इच्छा है और श्री गणेश निर्मल हैं। हिन्दुस्तानियों में निर्मलता की इच्छा है, बहुत है और अगर नहीं भी है तो कम से कम इसका ढोंग तो करते ही हैं। इसी ढोंगीपन से कम से कम ये फायदा है कि एक मनुष्य में जो भी खराबियों हैं। वो समाज में नहीं फैलती। लेकिन विदेशों में तो वो सोचते हैं कि ये जो खराबियां है इनको कोई बड़ा भारी हम आहवान दिए हुए हैं, बड़ा भारी कोई कार्य कर रहे हैं। तो खराबियों को अच्छा मान लेना क्या उसमें कोई हम बड़ा भारी साहसकर है ऐसे समझ करके। उसमें रत रहना हम लोगों के हिसाब से तो बेवकूफी है। लेकिन अगर आप अमेरिका जाए तो आपको पता हो जाएगा कि वहां गणेश जी हैं ही नहीं। माने ये कि वो विचार ही नहीं रहे हैं। अब जब उसके कुछ परिणाम दिखाने लग गए जब नुकसान दिखाने लग गए तब वो सोचते हैं कि हमें तो विश्वास होना चाहिए और हमें सफाई रखनी चाहिए। आधी बातें कट गई और उसका असर अब हमारे यहां है। सहजयोग के सिवा वो लोग नहीं बच सकते। लेकिन आप लोगों के पास तो ये सम्पति है। अगर वहां के लोगों को देखा जाए तो उनके मुकाबले में यहां भी बहुत से लोग हैं गंदे रास्ते पर चलते हैं, गंदे काम करते हैं, पर छुपा कर करते हैं। खुले आम नहीं। मतलब वो जानते हैं कि इस चीज से समाज में प्रशंसा नहीं होगी। विशेषकर जो लोग बाहर हो कर आए हैं उनमें ये दोष पाया जाता है। बड़े चरित्रहीन होते हैं और चरित्रहीनता को वो बड़ा भारी कमाल समझते हैं और सोचते हैं इसमें तो खास बात है। हम कोई विशेष सुन्दर हैं, हमारे अन्दर यह विशेषता है। इस प्रकार का आरोप करते हुए अपने पर बहुत गर्व करने लग जाते हैं। अबोधिता की जो शक्ति है वो ये कि येअबोध हैं। माने ये कि उसके अन्दर किसी तरह की खराबी नहीं है। कोई खराबी दिमाग के अन्दर नहीं है। वो बिल्कुल साफ सुथरा इन्सान है। ईसा मसीह ने कहा था कि जब तुम्हारे उत्थान का समय आए तब तुम बच्चों जैसे हो

जाओगे। उस वक्त और भी शक्तियां जो गणेश जी की हैं। वो छोड़ के वो आपमें सिर्फ अबोधिता भर देते हैं। जिसके सहारे आप अपना आत्म साक्षात्कार प्राप्त करते हैं। अब किसी बुद्धिमान से बात करें जो बुद्धि पुरस्तर है, वो यह नहीं समझ पाता कि गणेश जी ही कैसे हमारे देवता हैं? वो समझाने कि बात ऐसी है कि जब तक आप सूक्ष्म नहीं होते हैं आप समझ नहीं पाएंगे कि आपके अन्दर ये सब देवता हैं। श्री गणेश के चार हाथ हैं। मैंने बताया था कि कार्बन कण की चार संयोजकताएं (बैलेन्सीज) होती हैं। निराकार में सब आप उनको बाईं ओर से देखते हैं तो वो स्वास्तिक रूप में दिखाई देते हैं। फिर आप दाईं ओर से उनको देखते हैं तो वो ओंकार दिखाई देते हैं बहुत से ओंकार। जितने कार्बन एटम हैं वो ओंकार से दिखाई देते हैं। और नीचे से ऊपर को अगर आप देखें तो बीच में अल्फा और ओमेगा दिखाई देते हैं। ईसा मसीह ने कहा था मैं अल्फा और ओमेगा हूँ। अल्फा माने शुरूआत और ओमेगा माने अन्त। और उसके जो प्रतीक बने हुए हैं वही प्रतीक बिल्कुल आपको दिखाई देंगे। इन्होंने उन पर काम किया। मैं जो भी कहती हूँ ये विदेशी लोग एकदम से बड़े जोर से उसका पता लगाते हैं। तो उन्होंनें देखा कि जब इन्होंने कार्बन एटम का फोटो लिया तीन दिशाओं से तो बराबर तीनों प्रतीक नजर आए। सिद्ध हो गया कि ईसा मसीह जो थे अल्फा और ओमेगा बन गए वहीं उसकी जड़ें थी। वही ओंकार थे और वही स्वास्तिक। स्वास्तिक अगर ठीक से बनाया हो, उसकी गति दायीं ओर को होती है वो स्वास्तिक प्रगतिशील होता है। और उसकी गति यदि बायीं ओर हो गयी, चक्र उल्टे हो गए तो मनुष्य का सर्वनाश हो जाता है। उसे हर तरह कि बिमारियां हो जाती हैं। और फिर ऐसी बिमारियां हो सकती हैं जो आप बिल्कुल भी किसी भी तरह से ठीक नहीं कर सकते। जैसे कि आप जानते हैं कि हमारे जो स्नायु है वो एक बार शिथिल होने लग जाते हैं। उसे आर्थराइटिस की बीमारी हो जाती है। उसमें आदमी हिलने लग जाता है और उसकी बिमारी ठीक नहीं होती। धीरे-धीरे उसके स्नायु जो हैं कमजोर होने लग जाते हैं। ये श्री गणेश की उल्टी दशा में घूमने की वजह से होता है। वही हाल हिटलर का हुआ था। हिटलर ने श्री गणेश की शक्ति इस्तेमाल करने के लिए स्वास्तिक बनाया। जब तक वह सीधी तरह से बना था। तब तक वो काफी बचे रहे। फिर ये स्टेंसिल उन्होंने दूसरी तरफ से इस्तेमाल करना शुरू किया तो उल्ट गया। उसके उल्टे हो जाने से ही हिटलर हारा। स्वास्तिक का इलम बहुत से लोग समझते नहीं कि स्वास्तिक को इस्तेमाल कैसे किया जाय। कोई भी इस्तेमाल कर सकता है। वो तो अबोध हैं न। लेकिन वो अपना असर दिखाते हैं। जैसे हमने कहा था कि श्री गणेश को किसी तरह की अभद्रता पसंद नहीं है, गलत काम उन्हें पसंद नहीं है। और महाराष्ट्र में श्री गणेश के उत्सव होते हैं। पूना में मुझे देखते-देखते इतनी हैरानी हुई कि वहां के लोग गणेश के सामने जो अराधना करते हैं बाद में और पहले बहुत गंदे गीत गाते हैं। डिस्को डांस करते हैं और इतने गंदे कपड़े पहनते हैं। औरतें भी कम नहीं। तो मैंने उनको बताया था कि श्री गणेश से डरना चाहिए और अपने भाषण में मैंने कहा था कि ये भू: तत्व के बने हैं। और ज्यादा हुआ तो भूकंप आ जाएगा और वही बात हुई। जिस दिन गणेश जी का विसर्जन हुआ उसके बाद घर पर आकर सब लोग शराब पीकर नाच रहे थे। तभी भूकम्प ने सब नाश कर दिया। हम लोग सोचते हैं, ऐसा परदेश में ये सब हो रहा है। तो यहाँ पर भी क्यों न हो? अब वहां पर बीमारियां आ गयी। एड्स आ गए और दुनियाा भर की गंदगी आ गयी। हजारों लोग इनसे खत्म हुए चले जा रहे हैं। वहां कि जो नाश शक्ति है, विनाश शक्ति है वो अन्दर से चालित है। हम लोग यहां बैठे-बैठे समझ ही नहीं पा रहे हैं। 65% लोग अमेरिका में एकदम जर्जर हो जाएंगे। अनेक तरह की बीमारियां है जो हम लोग यहां सुनते भी नहीं है वहां हो रही हैं। यहां कीड़े-मकोड़े, मच्छर आदि इतने हैं, सब तरह की गरीबी है पर मनुष्य साफ हैं। अब ये कह नहीं सकती कि आगे मनुष्य की क्या स्थिति होने वाली है। पावित्र्य के विरोध जाना माँ के खिलाफ अपराध करना है। एक पुण्य शक्ति के खिलाफ जाना है। फ्रायड जैसे कुछ गंदे लोग आए और उन्होंने ये सब कहा कि यह सब गलत है इससे कोई फायदा नहीं होगा और मां के साथ यह पवित्रता बनाई ही नहीं जा सकती। वो मरे हैं कैंसर की बीमारी से, बहुत परेशानी भुगत कर।

श्री गणेश जी को ठीक करने से मनो दैहिक बीमारियां जो हैं जिन का इलाज डाक्टर लोग नहीं कर सकते हैं, क्योंकि वो डाक्टर सिर्फ दैहिक रोगों को ठीक करते हैं, श्री गणेश उन को भी ठीक करते है।अब ये बात जो सहजयोगी नहीं हैं उसको बताने कि नहीं है। वो कहेंगे कि ये क्या है कि हाथी को पूज रहे हैं। और ये गलत काम कर रहे हैं। पर वो एक प्रतीक है। और ये जो प्रतीक होते हैं ये सब बनाए जाते हैं जब शब्दों में बताया नहीं जा सकता न समाया जा सकता है। इसलिए प्रतीक बनाए जाते हैं। और ये प्रतीक हम लोग जानते थे।आज लोग कहते हैं कि ये कल्पनाए हैं और इस

तरह से आप कल्पना में गहरे उतर गए। लेकिन सहजयोग में आज यही प्रतीक सिद्ध हो गए हैं। ये वास्तविक है ये प्रतीक रूप से जो आपके सामने सत्य में आ गया कि ये सच्चाई है। लेकिन मनुष्य कि बुद्धि कहां तक जा सकती है? उसके सिवाए वो ऐसी चीजों को मान ही नहीं सकता जो दिखती नहीं है उसके लिए आँखें मूंद कर वो कभी सोचे कि ये जो प्रान्त है, क्षेत्र है जिसे मैंने जाना नहीं है, इसको अगर जानना है तो मेरी अन्दरूनी दशा समझनी होगी। क्योंकि मानव स्थिति में मैं इसे नहीं जान सकता।

मैं दिल्ली के लिए इसलिए कह रही थी कि श्री गणेश कि पूजा आवश्यक है क्योंकि श्री गणेश और गौरी का सम्बन्ध है नितान्त है, शाश्वत और जब तक यहां श्री गणेश की स्थापना नहीं होगी, तब तक यहां जो समस्याएं हैं, खासकर राजनैतिक समस्याएं वो ठीक नहीं होंगी। उसके लिए ऐसे लोग चाहिए जो पवित्र हैं और जो बच्चों जैसे भोले हैं। तो लोग कहेंगे कि बच्चे जैसे लोग शासन नहीं कर सकते लेकिन ऐसे लोग हैं कहां ऐसे लोग जब प्रशासन में आएंगे तो आपको पता होगा।श्री गणेश जो हैं वो बुद्धिमान हैं ही लेकिन बुद्धि में जो विवेक है, सत्य, असत्य क्या है, ये उनको पता है और उसके कारण मनुष्य जो सत्य है उसी को प्राप्त करता है। और पूरी उसमें अपनी जान लगा देता है। ये जो पाप कर्म हैं इसी के लिए तो लोग पैसा इकट्ठा करते हैं। जैसे आप लोग किसी को पैसा दे दीजिए तो फौरन वो किसी गलत चीज के पीछे दौड़ेगा या शराब पीना शुरू कर देगा। लेकिन अगर आप गणेश के पुजारी हैं तो आप ये सब कभी नहीं करेंगे। क्योंकि ईसा मसीह ने जब उनका अवतरण लिया तो हमारे सर में, आप जानते हैं, कि आज्ञा चक्र की दो खिड़कियां हैं, एक आगे एक पीछे। आगे वाली जो हैं उससे हम देखते हैं, उससे आँखों की चालना होती है। इसलिए जिस आदमी के गणेश गड़बड़ हो जाते हैं उनकी आँख स्थिर नहीं हो सकती, घूमती रहती है। और ईसा मसीह ने तो एक कहीं अधिक सूक्ष्म बात कहीं। Though shall not have adultrous eyes, 'आपकी दृष्टि अपवित्र नहीं होनी चाहिए' माने आंख में किसी भी तरह का लोभ या मोह या अपवित्रता नहीं होना चाहिए। ऐसी शुद्ध आँखें होनी चाहिए बताईये कि ईसाई लोगों में, अगर आप लोग परदेस में जाएं, तो आपको बहुत कम लोग मिलेंगे, जो आंखें नहीं घुमाएंगे। नहीं तो सारे आंखे घूमाते हैं। उसका असर चित्त पर आता है।

इस तरह से अपना चित जो गणेश की तरह बड़ा सुन्दर है वो श्री गणेश की ही शक्ति है क्योंकि वो सत्य असत्य विवेक बुद्धि हैं। नीर क्षीर विवेक बुद्धि। संस्कृत में एक श्लोक है कि हँस भी सफेद है और बगुला भी। तो दोनों में क्या अन्तर है? अन्तर ये है कि हँस दूध में से पानी अलग कर देता है पर बगुला ऐसा नहीं कर सकता। इस प्रकार ये जो देवी विवेक बुद्धि जो है, देखा जाए तो श्री गणेश की शक्ति है। सहज योग में आपको इतनी शक्ति आ जाती है, क्योंकि आत्मा स्वरूप श्री गणेश का प्रकाश जब हमारे अन्दर आ जाता है और फिर हम इस प्रकार से सोचते हैं कि अरे ये तो बेकार है। अब श्री गणेश की पूजा हो रही है, ये हैं तो हैं, घंटे बज रहे हैं। पर उनसे कुछ फायदा नहीं है। उसका कारण ये है कि अपने अन्दर बसे श्री गणेश की पूजा करनी चाहिए, मतलब कि अपने अन्दर वो पवित्रता जो श्री गणेश का आशीर्वाद है वो आना चाहिए अब लोग कहेंगे कि मां वो कैसे आएगा। आपको सिर्फ इस पर ध्यान करना है। ध्यान धारणा से अन्दर से सारी सफाई हो जाएगी। बाईं ओर की सफाई श्री गणेश को पाने से होती है। आपको चाहिए कि एक बार आप माँ की ओर नज़र करें और एक बार पिता की ओर नजर करें। इसमें हिन्दुस्तानी बहुत मार खा रहे हैं। वो हर समय ये सोचते हैं कि पैसा बहुत बड़ी चीज है। सोचते हैं इसका पैसा खाओ, उसका पैसा खाओ। ये नहीं सोचते कि आपके पिता परमात्मा से धनवान कौन है। आपको क्या जरूरत है किसी से पैसे लेने की और उन्हें ठगने की? ये इसलिए होता है जब आप अपने को असुरक्षित महसूस करते हैं। पर गणेश जी के आशीर्वाद से उधर चित्त ही नहीं जाता। ये जो मां के विरोध में पाप हो गए वो ज्यादा गहन हैं। अब ये बात समझ लीजिए कि ये पाप जो हैं ये अन्दर ही अन्दर आपको खाते हैं। सारी बाईं ओर की बिमारियां आप लगा लेते हैं। फिर मनो दैहिक बीमारियाँ भी हैं। ऐसे अनेक तरह की बीमारियाँ जो आज कल हैं वे अधिकतर आपका गणेश तत्व खराब होने के कारण है। अगर आप सहजयोगी हैं तो आपको रोज ध्यान करना होगा। बाईं ओर से ध्यान कीजिए फिर दायीं ओर से फिर दोनों तरफ से। और बाईं तरफ की बिमारीयां हैं तो प्रकाश या दीप जलाने से निकल सकती है। लेकिन दीप जो है श्री गणेश का दीप है। अन्धकार को दूर करना वो जानते हैं। जिससे कि हमारा खान पान ठीक तरह से पचता है और उसका विसर्जन भी ठीक से होता है ये काम भी उनका है। इस प्रकार हम अपने में शरीर का इतना विचार करते हैं कि

रोज शरीर को धोएंगे ये करेंगे वो करेंगे, उससे ज्यादा हमें अन्दर की नवीनता की ओर नजर करनी चाहिए। शीशे में अपनी तरफ देखकर कि मैं ये क्या कर रहा हूँ? और श्री गणेश का आह्वान करना चाहिये। उनसे कहना चाहिए कि आप आइए विराजिए। और सिर्फ मूलाधार पर ही नहीं पूरे सारे चक्रों में आप आइये। आज्ञाचक्र पर ईसा मसीह ने कहा है कि "मैं ही मार्ग हूँ, मैं ही द्वार हूँ। अलग-अलग तरीकों से उसका अनुवाद हुआ है पर उन्होंने ये नहीं कहा है कि मैं लक्ष्य हूँ। ये उन्होंने कभी नहीं कहा है। ठीक है अगर वो आत्मा हैं तो आत्मास्वरूप भी हैं। पर फिर उन्होंने आदि शक्ति पर छोड़ दिया।

अब अगर आप किसी भी धर्म को पढ़ें तो आपको आश्चर्य होगा कि हर ग्रन्थ में पवित्रता पर ही जोर दिया है। ये पवित्रता जो की श्री गणेश की शक्ति है और जब मनुष्य उस पवित्रता का और अपना मान नहीं रखता उसकी मर्यादाएं नहीं रखता तब उसको ये तकलीफ देने लग जाते हैं श्री गणेश मतलब ये कि श्री गणेश हट जाते हैं। और वो अगर हट गए तो उनकी शक्तियां भी हट गयी। और वो फिर कोई भी बीमारियां हो सकती है। सहजयोगियों को चाहिए कि वो श्री गणेश को नमन करें जब भी कोई गलत विचार दिमाग में आए तो उनकी शुद्धता से वो सफाई करें। उनकी सफाई और मेहनत से मनुष्य शुद्ध हो जाता है। कुछ लोगों ने श्री गणेश को सिम्पैथैटिक पर घूमते देखा और समझ नहीं पाये। वे उसी को कुण्डलिनी समझ बैठे। इसी से बहुत गड़बड़ बात हो गयी। अपने अन्दर की धरोहर जो हमारी विरासत है ये पवित्रता को समझना चाहिए। विवाह भी उसी पवित्रता का बन्धन है। तो जिन लोगों ने धर्म को संभालने की कोशिश की, हम दस गुरूओं को मानते हैं, उन्होंने विवाह के प्रति बहुत जागरूकता प्रकट की। जैसे नानक साहब ने कहा। मोहम्मद साहब ने इतनी शादियां क्यों की? उस समय इतने लोग मारे गये थे, इतने पुरूष लोग मारे गये थे कि आदमी ही नहीं बचे थे। और औरतों के पास कोई व्यवस्था ही नहीं थी कि वो कुछ न कुछ ऐसे कामों में लग जाएं जिससे कि वो अपना धन उपार्जन कर सकें। उस वक्त तो कोई व्यवस्था ही नहीं थी। लोग करते क्या? और विवाह एक बन्धन है। जिससे कि मनुष्य पवित्र रहें। इसलिए मोहम्मद साहब ने इतनी शादियां करके और उन लोगों को बचाने की कोशश की, उन औरतों को, जो कि गलत रास्ते पर जा सकती थी इसको समझने के लिए आप श्री कृष्ण को भी देखिये। उनकी सोलह हजार पत्नियां थी और पाँच और पत्नियां थीं। अब वो पुरूष थे और पुरूषों पर लाँछन लग सकते हैं। किसी भी उम्र में लग सकते हैं। पर हम तो माँ हैं न। हमारे ऊपर कोई लांछन नहीं लग सकता। और वो तो पुरूष थे। और वो अगर अपनी सोलह हजार शक्तियों को अपने साथ रखते तो लांछित हो जाते। ये उनकी 16,000 शक्तियाँ और पाँच-पंच महाभूत थे। इन सब शक्तियों से उन्होंने सोचा शादी कर लेते हैं। तो ये उनकी शक्तियां थी जिनसे उन्होंने शादी की, इस प्रकार हमारे यहां भी समझने की जरूरत है। कि ये जो परमात्मा के अवतरण हैं इन्होंने ऐसे काम क्यों किये जो कि समाज रीतियों से अलग हैं। देखने में ये सब गलत हैं।क्योंकि ये अवतरण परमात्मा का अंश है, यानी परमात्मा का स्वरूप ही है। वो जो भी करेंगे अच्छा ही करेंगे। उनके अन्दर श्री गणेश पूरी तरह जागरूक हैं। इस प्रकार हमने सोचा की सिर्फ श्री गणेश पूजा करने से ठीक ही होगा। और उनके भाषण देने से भी नहीं होगा। उनको अपने अन्दर जागरूक करना होगा। ये जागृति, आप सब को मिल गई। लेकिन कभी-कभी मैं देखती हूँ कि यह डावां डोल है। जैसे ही ये डावां डोल होती है चित्त भी डावां डोल हो जाता है। फिर ऐसे जो सहजयोगी हैं हम उनको कहते हैं कि ये आधे अधूरे हैं। अभी अन्दर उतरे नहीं है। अपने चरित्र का मान रखना, या अपनी आत्मिक जो चीजें हैं उनका ध्यान रखना, उनको खुले आम रास्ते पर देखना या उनका प्रदर्शन करना या उनको नष्ट करना ये सब बातें सब बहुत गलत हैं। और कोई समझ नहीं सकता कि चित्त कितना बावला हो जाता है। और इसी वजह से जब चित्त बावला हो जाता है तो चित्त आपका कहीं भी जा सकता है और फिर आपको कोई भी बीमारी लग सकती है। कोई सी भी पीड़ा लग सकती है, कुछ भी हो सकता है। एक सहजयोगी को श्री गणेश को पूरी तरह हृदय से मानना पड़ेगा। उनकी स्तुति सबने की है, अलग-अलग तरह से। मोहम्मद साहब ने भी ईसा मसीह की स्तुति की क्योंकि वे जानते थे कि ये कृष्ण का ही स्वरूप है। पूरी तरह से ये निष्कलंक है। और यही बात अपने बारे में सोचना है कि हम अपने को निष्कलंक करें। ये कार्य बुद्धि परस्तर होने से नहीं होगा। आप अपने चित्त को ही समझाएं की भई गलत काम मत कर। अगर आप इस बात पर पूरी तरह से जम जाएं कि हमें ये सब गंदे काम नहीं करने हैं। ये सब गंदगी है तो कोई दुनिया की कोई शक्ति आपको उसमें फंसा नहीं सकती। इसलिए मैं कहती हूं कि बच्चों जैसे बनें। उनका सहज-स्वभाव, उनका भोलापन। पर आज मैं देखती हूं कि परदेश में इसका बड़ा जबरदस्त अभाव आ रहा है। न जाने कैसे गंदे काम करके बच्चों को

नष्ट कर देते हैं। शायद कोई बड़ी भारी नकारात्मक शक्ति चल रही इनका सर्वनाश करने के लिए। हिन्दुस्तान में यह बात बिल्कुल भी नहीं है। बच्चों को बताया जाए कि तुम ये काम मत करो, वो काम मत करो। पर परदेश में तो बच्चों को जैसा चाहो वैसा कर लो। बच्चों को कहना होगा कि ये गलत काम है और हम ये नहीं चाहते। उसके लिए हम आपको पैसा नहीं देंगे। आप समझ जाइये। नहीं तो हमारा समाज भी उसी तरह से हो जाएगा। उसकी अच्छाई तो आई नहीं उसकी बुराई आ गयी। आशा है आप लोग समझगए हैं कि गणेश जी का कार्य महत्वपूर्ण है क्योंकि वही आपकी जागृति करते हैं। आपके चक्रों को शुद्ध करते हैं। उनमें प्रकाश डाल देते हैं और आपको हमेशा प्रकाश की ओर अग्रसर करते हैं। आपकी नजर हमेशा प्रकाश की ओर रहती है। ये चीज आपको आत्मसात करनी होगी कि हम श्री गणेश को कभी भी अपमानित नहीं करेंगे, कभी भी। आप लोगों में, जो दिल्ली के हैं, आशा है आज की पूजा के बाद एक नया धर्म प्रस्थापित होगा। दो तरह के लोग होते हैं शुभ और अशुभ। ऐसे जो शुभ लोग हो जाते हैं उनकी एक नजर काफी है दूसरे आदमी को ठीक करने के लिए। एक नजर काफी है। वो नज़र जिसे कहते हैं कटाक्ष कटाक्ष निरीक्षण। बाईं ओर की सारी समस्यायें ठीक हो सकती हैं। अगर आप अपने गणेश को जागृत करें। बाह्य में नहीं। बाहय में बिल्कुल नहीं। अन्दर की चीज है। जिसे आप लोग प्राप्त करें। उसके प्रकाश से आप प्रकाशित हों और सारे ब्रह्मांड परउनकी शक्ति का प्रादुर्भाव हो, चेतना आ जाए और लोग उसको मानें। यही हमारा आशीर्वाद है।

जन्म दिवस पूजा
दिल्ली 30.03.90

आज नवरात्रि की चतुर्थी है और नवरात्रि को आप जानते हैं रात्रि को पूजा होनी चाहिए। अन्धकार को दूर करने के लिए अत्यावश्यक है कि प्रकाश को हम रात्रि में ही ले आए। आज के दिन का एक और संयोग है। कि आप लोग हमारा जन्म दिन मना रहे हैं। आज के दिन गौरी जी ने अपने विवाह के उपरान्त श्री गणेश की स्थापना की। श्री गणेश पवित्रता का स्रोत है। सबसे पहले इस संसार में पवित्रता फैलाई गई जिससे कि संसार में आए मनुष्य पावित्र्य से सुरक्षित रहें। और अपवित्र चीज़ों से दूर रहें। इसलिए सारी सृष्टि को गौरी जी ने पवित्रता से नहला दिया। और उसके बाद ही सारी सृष्टि की रचना हुई। सो जीवन में सबसे महत्वपूर्ण कार्य यह है कि हम अपने अन्दर पावित्र्य को सबसे ऊँची चीज समझें। लेकिन पावित्र्य का मतलब यह नहीं कि हम नहाएँ, धोएं, सफाई करें, अपने शरीर को ठीक करें किन्तु अपने हृदय को स्वच्छ न कर सकें।

हृदय का सबसे बड़ा विकार है क्रोध। क्रोध आ जाता है तो जो पावित्र्य है वो नष्ट हो जाता है क्योंकि पावित्र्य का दूसरा नाम निर्वाज्य प्रेम है। वो प्रेम जो सतत बहता है और कुछ भी नहीं चाहता। उसकी तृप्ति उसी में है कि वो बह रहा है और जब नहीं बह पाता तो वह परेशान होता है। सो पावित्रय का मतलब यह है कि आप अपने हृदय में प्रेम को भरें, क्रोध को नहीं। क्रोध हमारा तो शत्रु है ही लेकिन वो सारे संसार का शत्रु है। दुनिया में जितने युद्ध हुए, जो भी हानियां हुई हैं ये सामूहिक क्रोध के कारण हुई। क्रोध के लिए बहाने बहुत होते हैं। मैं इसलिए नाराज हो गया क्योंकि ऐसा था मैं उस लिए नाराज हो गया क्योंकि वैसा था। हर क्रोध का कोई न कोई बहाना मनुष्य ढूंढ सकता है लेकिन युद्ध जैसी भयंकर चीजें भी इसी क्रोध से ही आती हैं। उसके मूल में क्रोध ही होता है। अगर हृदय में प्रेम हो तो क्रोध नहीं आ सकता और अगर क्रोध का दिखावा भी होगा तो भी वो प्रेम के लिए। किसी दुष्ट राक्षस को जब संहार किया जाता है तो वो भी उस पर प्रेम करने से ही होता है क्योंकि वो इसी योग्य है कि उसका संहार हो जाए जिससे वो और पाप कर्म न करे। लेकिन ये मनुष्य का कार्य नहीं। ये तो देवी का कार्य है जो इन्होंने नवरात्रि में किया। सो हृदय को विशाल करके हृदय में ये सोचें कि हम किससे ऐसा प्रेम करते हैं जो निर्वाज्य, निर्मम है जिसके प्रति हमें ये नहीं कि ये मेरा बेटा है ये मेरी बहन है मेरा घर है। ऐसा प्रेम हम किससे करते हैं? किसके प्रति हमें ऐसा प्रेम है। मनुष्य की जो स्थिति है उससे बहुत ऊंची स्थिति में आप आ गये हैं क्योंकि आप सहजयोगी हैं। आपका योग परमेश्वर की इस सूक्ष्म शक्ति से हो गया है। वो शक्ति आपके अन्दर बह रही है। आपको प्लावित कर रही है, आपको संभाल रही है, आपको उठा रही है। बार-२ आपको प्रेरित करती है आपका संरक्षण करती है और आपको अह्लाद, मधुमय प्रेम से भर देती है। ऐसी सुन्दर शक्ति से आपका योग हो गया किन्तु अभी भी हमारे हृदय में उसके लिए, कितना स्थान है? ये देखना होगा। हमारे हृदय में माँ के प्रति तो प्रेम है ये तो बात सही है। माँ से तो सबको प्यार है और उस प्यार के कारण आप लोग आनन्दित हैं, बहुत आनन्द में हैं। किन्तु दो प्रकार का प्रेम और होना चाहिए। तभी माँ का प्रेम हो सकता है। एक तो प्यार कि अपने से हो कि हम सहजयोगी हैं, हमने सहज में शक्ति प्राप्त की लेकिन अब हमें किस तरह से बढ़ना चाहिए। बहुत से लोग सहज योग के प्रसार के लिए बहुत कार्य करते हैं जिसे हम कहें क्षितिजीय प्रसार। पृथ्वी से समानान्तर चारों तरफ फैलता हुआ। वो लोग अपनी तरफ नजर नहीं करते तो उत्थान की गति को नहीं प्राप्त होते। बाह्य में बहुत कुछ कर सकते हैं। बाह्य में दौड़ेंगे, बाह्य में काम करेंगे कार्यान्वित होंगे। सबसे मिलेंगे, जुलेंगे। लेकिन अन्दर की शक्ति को नहीं बढ़ाते। बहुत से लोग हैं अन्दर की शक्ति की ओर ज्यादा ध्यान देते हैं और बाह्य की शक्ति की तरफ नहीं। तो उनमें सन्तुलन नहीं आ पाता और जब लोग सिर्फ बाह्य की ओर बढ़ने लग जाते हैं तो उनकी अन्दर की शक्ति क्षीण होने लग जाती है, और क्षीण होते-होते ऐसे कगार पर पहुंच जाते हैं कि फौरन अहंकार में ही डूबने लगते हैं। सोचते हैं कि देखिये हमने कितना सहज

योग का कार्य किया। हम सहजयोग के लिए कितनी मेहनत कर रहे हैं और फिर ऐसे लोगों का नया जीवन शुरू हो जाता है जो कि सहजयोग के लिए बिल्कुल उपयुक्त नहीं। और वो अपने को सोचने लगते हैं कि हम बहुत भारी एक अगुआ हैं और हमारा बहुत महत्व होना चाहिए। जैसे कि जिसे स्व-महत्व कहते हैं। सो हर जगह देखते हैं कि हमारा महत्व होना चाहिए हर चीज़ में वो कोशिश करेंगे कि अपना महत्व दिखाएं, अपनी विशेषता दिखाएं, अपने को सामने करें लेकिन अन्दर से खोखलापन आता है। उसके बाद हठात देखते हैं कि उनको कोई बिमारी हो गयी, पगला गये वो। कुछ बड़ी भारी आफत आ गयी तो फिर कहते हैं कि माँ हमने तो आपको पूरी तरह समर्पित किया हुआ है तो फिर ये कैसे हो गया, ये हमने कैसे पाया, ये गड़बड़ कैसे हो गयी। इसकी जिम्मेदारी आप ही के ऊपर है कि आप बहकते चले गये। फिर ऐसे आदमी एक तरफा हो जाते हैं वो दूसरों से सम्बन्ध नहीं कर पाते। उनका सम्बन्ध इतना ही होता है कि हम किस तरह से रौब झाड़ें लोगों पर और किस तरह से दिखाएं कि हम कितने ऊँचे इन्सान हैं। और वो दिखाने में ही उनको महत्व लगता है। सबसे आगे उनको आना चाहिए। सबमें उनका महत्व होना चाहिए। अगर किसी ने उनका थोड़ा महत्व नहीं किया तो गलती हो गयी। यहां तक हो जाएगा कि उसमें ये भूल ही जाएंगे कि माँ का भी कुछ करने का है। माँ के लिए भी कुछ दान देना है। इसी प्रकार मैं देखती हूँ कि राहोरी जैसी जगह, बम्बई में हर जगह इस तरह के कुछ लोग एक दम से उभर कर ऊपर आ गये और वो अपने को बहुत महत्वपूर्ण समझने लगे। फिर वहां न तो आरती होती थी और नसीब हमारा, वहाँ फोटो तो रहता था लेकिन फोटो पोंछने की भी किसी को इच्छा नहीं थी। नसीब अपने कि फोटो अपना नहीं लगाया। अपना ही महत्व, अपनी ही डींग मारना और वो डींग मार-मार के अपने को बहुत ऊँचा समझने लगे दूसरों से। अलग किसी से कुछ पूछना नहीं। कुछ नहीं हम ही करेंगे। फिर झगड़े शुरू हो गये। झगड़े शुरू होने पर ग्रुप बन गये। क्योंकि जिस सूत्र में आप बंधे हुए हैं वो आपके माँ का सूत्र है और उसी सूत्र में अगर आप बंधे रहे और पूरे समय ये जानते रहे कि हम एक ही माँ के बच्चे हैं, न हममें कोई ऊँचा है न कोई नीचा, न ही हम कोई कार्य को करते हैं। ये चैतन्य ही सारा कार्य करता है हम कुछ करते ही नहीं है। ये भावना ही जब छूट गयी और ये कि हम इतने बड़े हैं हम ने ये किया हम ये करेंगे वो करेंगे। तब फिर चैतन्य कहता है कि तुझे जो कुछ करना है वो कर, जहां जाना है जा। जाना है तूने नर्क में नर्क में जा। तुझे अपने को मिटा लेना है मिटा ले। अपना सर्वनाश करना है वो भी कर ले। जो तुझे करना है वो तू कर। वो फिर आपको रोकेगा नहीं क्योंकि आपकी स्वतन्त्रता वो मानता है। आप नर्क में जाना चाहें तो उसकी भी व्यवस्था है और स्वर्ग में जाना चाहें तो उसकी भी व्यवस्था है। पर सहजयोग में एक और बड़ा दोष है। एक बहुत बड़ा दोष है कि हम एक सामूहिक, विराट शक्ति हैं। हम अकेले अकेले नहीं है। सब एक ही शरीर के अंग प्रत्यंग है। उसमें अगर एक इन्सान ऐसा हो जाए या दो चार ऐसे हो जाएं जो अपना-अपना समूह बना लें तो जैसे कैंसर के जहर का एक कीटाणु ही बढ़ने लग जाता है वैसे ही एक आदमी बढ़कर के और सारे सहज योग को ग्रस्त कर सकता है। और हमारी सारी मेहनत व्यर्थ जा सकती है। हमको तो चाहिए कि समुद्र से सीखें कि जो सबसे नीचे रहकर के ही सब चीज को, सब नदियों को अपने अन्दर समाता है और बगैर समुद्र के तो ये सृष्टि चल नहीं सकती। अपने को तपा कर के वाष्प बना कर के दुनियां में बरसात की सौगात भेजता है। उसकी जो नम्रता है, वही उसकी गहराई का लक्षण है और उस नम्रता में कोई ऊपरी नम्रता नहीं की नमस्ते भाई साहब। नमस्ते कुछ नहीं सबसे नीचे, सबको ग्रहण करके सबको अपने अन्दर लेकर सबको शुद्ध करके और फिर भाप बना कर बरसात करना। और फिर वही बरसात नदियों में पड़कर दौड़ती हुई समुद्र की ओर दौड़ेगी और इस समुद्र की पहचान, अगर आप किसी समुद्र के किनारे गए हों, तो देखिए कि वहां जितने भी नारियल के पेड़ हैं वो सब समुद्र की ओर ही झुके हुए हैं। इतनी जोर की आंधी चलती है, कुछ भी हो जाए लेकिन वो कभी भी समुद्र से दूसरी ओर मुड़ते नहीं क्योंकि वो जानते हैं कि ये समुद्र है। इस समुद्र के समान ही अपना हृदय विशाल तब होगा जब हमारे अन्दर अत्यन्त नम्रता और प्रेम आ जाएगा। लेकिन अपना ही महत्व करना, अपने को ही विशेष समझना। ये जो चीज है इसमें सबसे बड़ी खराबी यह है कि परम चैतन्य आपको काट देगा। तुमको तुम्हारा महत्व है तुम जाओ। और फिर जैसे कोई नाखून काट कर फैंक देता है इस तरह से आप एक तरफ फिक जाएंगे। जो मेरे लिए तो बड़ी दुख दायी बात होगी। और दो चार लोग और ऐसे निकल आए जो सोचें कि हम बहुत काम करते हैं, हमने ये कार्य किया हमने वो कार्य किया, उनको फौरन ठंडा हो जाना चाहिए। पीछे हटकर देखना चाहिए कि हम ध्यान करते हैं? हमारा ध्यान लगता है? हम कितने गहरे हैं? और फिर हम किसको प्यार करते

हैं? किस-२ को प्यार करते हैं? कितनो को प्यार करते हैं? कितनों से दुश्मनी लेते हैं। सहज योग में कुछ लोग बड़े गहरे बैठ गये हैं, बहुत गहरे आ गये हैं इसमें कोई शंका नहीं। और बहुत से अभी भी किनारे पर डोल रहे हैं। और फिर वो कब फिंक जाएंगे कह नहीं सकते क्योंकि मैंने आपसे पहले ही बताया है कि १९९० साल के बाद एक नया आयाम खुलने वाला है। और एक छलांग आपको मारनी होगी जो आप इस स्थिति से निकल कर उस नयी चीज को पकड़ लेंगे। जैसे कि चक्का है जब घूमता है तो एक बिन्दु पर आकर आगे सरक जाता है इसी प्रकार सहज योग की प्रगति भी सामूहिक होने वाली है और इसमें टिकने के लिए पहली चीज हमारे अन्दर पावित्र्य होना चाहिए जो नम्रता से भरा हो। वैसे तो आपने दुनिया में बहुत से लोग देखे हैं जो अपने को बड़ा पवित्र समझते हैं। सुबह शाम सन्धया करते हैं और किसी को छूने नहीं देते। ये खाना नहीं खाएंगे, वो आएगा तो कहेंगे कि तुम दूर बैठो, उनको छू लिया तो उनकी हालत खराब। ये पागलपन है अगर आप एकदम स्वच्छ हैं, पवित्र हैं तो आपको किसी को छूने में बात करने में, अपवित्रता आनी ही नहीं चाहिए क्योंकि आपका स्वभाव ही शुद्ध करने का है। आप हर चीज को ही शुद्ध करते हैं तो आप जिससे मिलेंगे आप उसी को शुद्ध करते जाएंगे। उसमें डरने की कौन सी बात है? उसमें किसी को ताड़ने की कौन सी बात है? उसमें काना फूंसी करने की कौन सी बात है? तो ये तो लक्षण एक ही है कि आपकी स्वयं की पवित्रता कम है। अगर आपकी पवित्रता सम्पूर्ण है तो उस पवित्रता में भी शक्ति और तप है और वो इतना शक्तिशाली है कि वो कोई सी अपवित्रता को भी खींच सकता है। जैसे मैंने कहा कि हर तरह की चीज समुद्र में एकाकार हो जाती है। अब दूसरे लोग है जो सिर्फ अपनी ही प्रगति को सोचते हैं। वो ये सोचते हैं कि हमें दूसरे से क्या मतलब? हम अपने कमरे में बैठ कर माँ की पूजा करते हैं, उनकी आरती करते हैं, उनको मानते हैं और चाहते हैं कि हमारी उन्नति हो जाए। हमें दुनिया से कोई मतलब नहीं और दूसरों से कटे रहते हैं। ऐसे लोग भी बढ़ नहीं सकते क्योंकि आप एक ही शरीर के अंग प्रत्यंग हैं। समझ लीजिए कि एक अंगुली ने अपने को बांध लिया और कहेगी कि मुझे किसी और से कोई मतलब नहीं। अलग से रहूँगी। ये तो अंगुली मर जाएगी। क्योंकि इसमें रक्त कहाँ से आएगा? इसमें नस कैसे चलेगी? इसमें चेतना का संचार कैसे होगा? ये तो कटी हुई रहेगी। आप एक बार इसे बाँध कर देखिए और पाँच दिन बाँधे रखिये। आप पाएंगे कि अंगुली काम ही नहीं करेगी। किसी काम की नहीं रह जाएगी। फिर आप कहेंगे कि माँ मैं तो इतनी पूजा करता हूँ इतने मन्त्र बोलता हूँ। मैं तो इतना कार्य करता हूँ। फिर मेरा हाल ऐसा क्यों है। क्योंकि आप विचलित हैं।

आप हट गए हैं, उस सामूहिक शक्ति से आप हट गए हैं। सहज योग सामूहिक शक्ति है। इस सामूहिकता से जहाँ आप हट गए वहीं पर आप अलग हो गए उस सामूहिक शक्ति से। सो दोनों ही चीज की तरफ आपको ध्यान देना है। कि हम अपनी शक्ति को भी संभालें और सामूहिकता में रचते जाएं। तभी आपके अन्दर पूरा सन्तुलन आ जाएगा। लेकिन बाह्य में आप बहुत कार्य करते हैं। मैंने ऐसे लोग देखे हैं जो सहज योग के लिए बहुत कार्य करते हैं और काफी अच्छे भाषण देते थे। उनके भाषणों की उन्होंने फिर टेप बना ली। फिर लोगों से कहने लगे कि आप हमारे टेप सुनो। तो लोग हमारे टेप छोड़कर उन्हीं की टेप सुनते थे। और उनका यह हाल था कि जैसे दिन हम यहाँ बैठे हैं हमारे फोटों को तो नमस्कार करते थे हमें नहीं करेंगे। क्योंकि उनको फोटो की आदत पड़ी हुई है। हमसे उन्हें कोई मतलब नहीं। उन्हें फोटो से मतलब है। ऐसे-२ विक्षिप्त लोग हमने देखे हैं। फिर उन्होंने अपने फोटो छपवाए और फोटो सबको दिखा रहे हैं कि हम वैसे हैं, कैसे हैं। इस तरह वे अनेक तरीकों से अपने ही महत्व को बढ़ाते हैं। करते-२ ऐसे खड्ड में गिर गए। अनायास उनके समझ में नहीं आया और एकदम पता हुआ कि सहज योग से छूट गये। कहीं भी नहीं है। लोग मुझे कहते हैं कि माँ वो तो बड़े अगुआ थे। ये थे। हाँ थे तो सही लेकिन वे गये कहां सहज योग से। क्या करें। एकदम काफूर हो गए। कहाँ? पता ही नहीं। तो ऐसे लोग क्यों निकल गए। क्योंकि सन्तुलन नहीं और जब सन्तुलन नहीं रहता है तो आदमी या तो बायें में चला जाएगा या दायें में चला जाएगा। और जैसा मैंने कहा कि दो तरह की शक्तियां हमारे अन्दर हैं जिससे हम सहज योग की ओर खिचते भी हैं और फैंक भी दिए जाते हैं। एक रस्सी में अगर आप पत्थर बांध कर घुमाएं तो पत्थर घूमता रहेगा। जब तक रस्सी से बंधा है। जैसे ही रस्सी से छूट जाएगा, दूर फैंका जाएगा। इसी प्रकार बहुत से लोग सहज योग से निकल गए। और फिर लोग कहते हैं देखिए माँ सहज योग में बहुत से लोग कम हो गए हैं। मैं क्या करूं? और अगर कम हो गए हैं तो उसमें सहज योग का कोई नुकसान नहीं हुआ है। इसमें उनका ही नुकसान हुआ है। सहज योग का बिल्कुल भी नुकसान नहीं हुआ है। क्योंकि जिसको नुकसान

या फायदे से कोई मतलब ही नहीं, ऐसी जो चीज है उसका क्या नुकसान हो सकता है? हाँ अगर आपको अपना फायदा करा लेना है तो आप इस चीज को जान लीजिए की सहज योग को आपकी जरूरत नहीं है आपको सहजयोग की जरूरत है।

सो ये योग का दूसरा अर्थ होता है युक्ति एक तो है कि सम्बन्ध जुड़ जाना, दूसरा है युक्ति। ये युक्ति समझ लेनी चाहिए। ये युक्ति क्या है? इसमें तीन तरह से समझाया जा सकता है। पहली तो ये है कि हमें इसका ज्ञान आ जाना चाहिए, ज्ञान का मतलब बुद्धि से नहीं। किन्तु हमें अंगुलियों में हाथ में अन्दर कुण्डलिनी का पूरी तरह जागरण होना ये ज्ञान है और जब ये ज्ञान हो जाता है तब और भी ज्ञान होने लग जाता है। बहुत सी बातें जो आप नही समझ पाते थे वह आप समझ पा रहे हैं। और आप समझने लग जाते हैं कि कौन सत्य है कौन असत्य। इस ज्ञान के द्वारा आप लोगों की कुंडिलिनी भी जागृत कर सकते हैं और उनको समझा सकते हैं। उनसे आप पूरी तरह से एकाग्र हो सकते हैं। उनके साथ आप वार्तालाप कर सकते हैं इस ज्ञान के कारण। तो आपको बौद्धिक ज्ञान भी आ जाता है। आप सहज योग समझते हैं। कोई समझता था पहले – ईड़ा, पिंगला, सुखमन नाड़ी रे, एक ही डोर उडाऊ रे पहले नानक की कोई बात समझता था? या ज्ञानेश्वर की कोई बात समझता था पहले? कोई रहस्यमय चीज या गोपनीय बात कह रहे हैं ऐसे समझ कर लोग रख देते थे। लेकिन सहज योग के बाद आप सब समझने लगे। तो आपका बुद्धि चातुर्य भी बढ़ गया। उसकी भी चतुरता आ गयी। आप उसको समझने लग गए। ये तोखात ठीक है कि आप उसे समझने लग गए। और ऐसी बातें जो अगम्य थी गम्य हो गईं और सब बातों को आप जानने लग गए। सो तो एक युक्ति हो गयी कि आपने अपना ज्ञान बढ़ा लिया।

अब दूसरी युक्ति क्या है वो है जो कि आप हमारे प्रति भक्ति करें। उस भक्ति को भी जब आप करते हैं तब आपको अनन्य भक्ति करनी चाहिए आप हमसे तदाकारिता प्राप्त करें। जैसे हम सोचते हैं वैसा ही आप सोचने लग जाएं। आज देर हो गयी समझ लीजिए तो हम कह सकते थे कि आज बहुत देर हो गयी थी हम थक गए हैं। लेकिन हमने ये सोचा कि नवरात्रि है रात में ही करना है और यही मूहूर्त हमें मिलना था यही मूहूर्त है इसी वक्त ये पूजा होनी चाहिए। और ये होना ही चाहिए, होना ही है और बड़े आनन्द से हम कर रहे हैं। क्योंकि शुभ मूहूर्त यही है। और हमें सहज होना चाहिए। उसके बारे में सोचते भी नहीं। थक गए या आराम भी नहीं किया, कुछ भी नहीं यही मूहूर्त है जैसे एक योद्धा अगर लड़ाई में गया है और देखा कि दुश्मन खड़ा है, यही समय उसको मारने का है, उसी वक्त उसे मारना चाहिए। उसी प्रकार यही समय है जब हमें यह पूजा करनी चाहिए। तो हम बैठे हैं और आपको भी यही सोचना चाहिए कि यही समय माँ ने बांधा है। यही समय हमारे लिए उचित है, दूसरा नहीं। इसी वक्त पूजा करनी चाहिए। लेकिन जो आधे अधूरे लोग हैं वो सोचते हैं कि हम सवेरे से आकर बैठे हैं, हमने ये किया, हमें भूख लग गयी खाना नहीं खाया, बच्चे रो रहे होंगे। तो वो अनन्य भक्ति नहीं हुई क्योंकि मेरा जो सोच विचार है आपके सोच विचार में नहीं आया। मैं जैसे सोचती हूँ वैसा वो नहीं सोचते। किसी के लिए भी मैं सोचती हूँ। कभी-२ माँ ये आदमी इतना खराब है। मैं कहती हूँ कि नहीं बिल्कुल अच्छा है, बढ़िया आदमी है। कैसे कहा आपने? सोचती हूँ कि जो मैं देख रही हूँ ये क्यों नहीं देखते? अगर ये वैसे ही हो जाते हैं तो इन्हें वो ही देखना चाहिए जो मैं देखती हूं। वैसी तो बात नहीं, ये तो कुछ और ही देख रहे हैं। तो अनन्य नहीं हुए, अन्य हो गए। उसी प्रकार हमारा प्यार आपके प्रति है। और एक ही चीज से हम तृप्त होते हैं कि आप सबके प्रति एक जैसा प्यार रखें। अगर वो बात आपके अन्दर नहीं है तो फिर लगता है अन्य है अनन्य नहीं। अगर हमारे ही शरीर के ये अंग प्रत्यंग हैं तो जो हम हैं वैसे ही इनको होना चाहिए, जैसे हम सोचते हैं वैसा ही उनको सोचना चाहिए, जैसा हम करते हैं वैसा ही उनको करना चाहिए। तो ये दूसरा क्यों करते हैं? ये उल्टी बात क्यों सोचते हैं? इनके दिमाग में ये सब अजीब-अजीब बातें कहां से आती हैं? सो अनन्य भक्ति नहीं हुई ये अन्य हुई। तो आपका सोच विचार और कार्य और आपका प्रेम वैसा ही होना चाहिए जैसा आप मुझसे प्रेम करते हैं। यही अगर प्रेम का स्रोत है तो जो कुएं में है वही घट में आना चाहिए। दूसरे चीज कैसे आ सकती है और जब कोई दूसरी चीज आती है तब मैं सोचती हूं कि इन्होंने किसी दूसरे घट कुएं से पानी भरा है। ये घट मेरा नहीं है।

अब तीसरी बात जो युक्ति है कि जब मैंने दूसरी बात आपको बताई कि आप अपने अन्दर एक अनन्य भक्ति रखें। माँ हम आपकी शरणागत हैं और जब शरणागत है तो जब हम कोई बात कह भी दें, या हम आपको कोई चीज समझा दें या कोई आपके सामने प्रस्ताव रखें, कुछ रखें तो उसका मना करने का सवाल ही कैसे उठेगा? अगर आप

और हम एक हो गए तो उसका सवाल ही कैसे उठना चाहिए माँ ने कह दिया तो ठीक है। हम तो माँ ही हो गए हैं तो हम नहीं कैसे कर दें। जैसे कि मेरी आँख आपको देख रही है तो मेरी आँख जाने की आप लोग बैठे हैं सामने क्योंकि मेरी आँख मेरी अपनी है। तो मैं जो जान रही हूं उसमें और मेरी आंख के जानने में कोई भी अन्तर नहीं। एक ही चीज है। जो मैं बुद्धि से जान रही हूँ वही मैं अपनी आँख से भी जान रही हूँ। तब फिर आपमें तदाकारिता नहीं आती सो ये दूसरी युक्ति है कि **माँ मेरे हृदय में आप आओ मेरे दिमाग, विचार जीवन के हर कण में आप आओ।** आप जहाँ भी कहोगे हम हाजिर हैं, हाथ जोड़कर। पर आपको कहना तो पड़ेगा न, और पूर्ण हृदय से कहना होगा। किसी मतलब से अगर आप मुझसे सम्बन्ध जोड़ें तो भी वो ठीक नहीं। लेकिन अगर सम्बन्ध जुड़ गया तो सारे मतलब अपने आप ही पूरे हो जाएंगे। आपको कुछ करना ही नहीं पड़ेगा। अपने आप ही जब आपके सारे मतलब पूरे हो गए तो आपका चित्त उसी में लग जाएगा। अब तीसरी जो बात है कि हम ये काम कर रहे हैं। हमने सहज योग का ये काम किया, हमने ये सजावट की, ये ठीक ठाक किया मैंने किया तो सहज योगी आप नहीं है। **सहजयोग में आपके सारे कर्म अकर्म हो जाने चाहिए।** मैं कुछ कर रहा हूँ मैंने ये कविता लिखी, मैंने ये किया। ये जहाँ तक बारीक, सूक्ष्म में देखते जाए कि मैं सच में ऐसा सोचता हूँ क्या मैं ऐसा सोचती हूँ क्या इसका मतलब कि मेरा योग पूरा नहीं हुआ। जब योग पूरा हो जाता है तो फिर आप ऐसा नहीं सोचते। सोच ही नहीं सकते। अर्कमय हो जाते हैं आप। ये हो रहा है वो हो रहा है, ये घटित हो रहा है। वो सब हो रहा है ऐसा बोलने लग जाते हैं और तब कहना चाहिए कि पूरी तरह से तदाकारिता आ गयी। अब मेरा हाथ है वो कुछ कार्य कर रहा है, वो थोड़े ही कहता है कि मैं कर रहा हूँ उसको तो पता भी नहीं वो कर रहा है। वो तो हो ही रहा है। उसकी जितनी भी गति है। सो हम ही तो कर रहे हैं तो समझ लें कि ये हाथ कट गया, इससे जुड़ा नहीं। अगर जुड़ा है तो उसे कभी लगेगा नहीं कि मैं कर रहा हूँ, पकड़ रहा हूं कभी भी नहीं लगता। और जब आप ऐसा सोचते हैं मैं कर रहा हूं तभी चैतन्य कहता है 'तू कर' और तब सबसे ज्यादा गड़बड़ी शुरू होती है। ये तीसरी युक्ति है उस युक्ति को सीखना चाहिए कि क्या मैं कुछ कर रहा हूँ? एक क्षण विचार करें कि मैं कर रहा हूँ? मैं क्या कर रहा हूँ? जब तक आप प्रकाश ढूंढ रहे थे तब तक आप कुछ कर रहे थे क्योंकि आपके अन्दर अहम् भाव था आप अकेले एक व्यक्ति थे, एक व्यष्टि में थे, अब आप समष्टि में, सामूहिकता में आ गए हैं। तब आप कुछ भी नहीं कर रहे आप अंग प्रत्यंग है और वह कार्य हो रहा है। ये तीसरी युक्ति है इसे समझें। मैं इसलिए यह युक्तियां बता रही हूँ कि अब छलांगे जो लगानी है। इस तरह से आप अपना विवेचन हमेशा करते रहें। और अपनी ओर नजर रखें। इस वक्त सबसे भलाई इसमें है कि हम अपनी ओर नजर करें और अपनी ओर देखें कि क्या मैं ये सोचता हूँ कि वो मुझसे काफी श्रेष्ठ है और मुझे उनसे कुछ सीखना चाहिए। उसके कुछ अच्छे गुण मुझे दिखाई देते हैं कि बुरे गुण ही मुझे दिखाई देते हैं? दूसरों के अगर अच्छे गुण दिखाई दें और अपने बुरे गुण तो बहुत अच्छी बात है क्योंकि दूसरों के तो दुर्गुण आप हटा नहीं सकते। तो दूसरों ने क्या किया? दूसरे ऐसे हैं ऐसे सोचने वाले पूरी तरह योग में उतरे नहीं है। मेरे में क्या त्रुटि है? यह देखने से ही आप ठीक हो सकते हैं। दूसरों को कहें कि तुम्हें अपना दोष ऐसा ठीक करना चाहिए और वहां के प्रधान मंत्री को जाकर कुछ अक्ल सिखाएं तो वो हमें बन्दी कर लेंगे। क्योंकि हमारे देश में तो हम कह सकते हैं क्योंकि ये हमारा देश है। इसी प्रकार हमें जानना चाहिए। इस युक्ति को समझ लेना चाहिए कि इसमें जो हम डावां डोल हैं वो हम अपनी ही वजह से हैं। सहज योग तो एक बहुत बड़ी चीज़ है, बड़ी अभिन्न चीज है। लेकिन इसका जो हम पूरी तरह मजा नहीं ले पा रहे इसका मतलब हममें कोई खराबी है। और इस सबको इस युक्ति को अगर आपमें सीख लिया तो मिलेगा क्या? सिर्फ आनन्द, निरानन्द। और कुछ नहीं। और फिर चाहिए क्या आपकी शक्ल ही बदल जाएगी। आप आनन्द में ही बहने लग जाएंगे। हमारे जन्म दिवस पर मैं चाहूँगी कि आज आपका भी जन्म दिवस मनाया जाए। कि आज से हम इस युक्ति को समझें और अपने को इस पवित्रता से भर दें जैसे श्री गणेश। और पवित्रता से ही मनुष्य में सुबुद्धि आती है। क्योंकि पवित्रता प्रेम ही का नाम है। उसी से, सुबुद्धि का मतलब भी प्रेम ही है। सब चीज का मतलब प्रेम है। और अगर आप सुबुद्धि को प्राप्त नहीं कर सकते, अगर आप प्रेम को अपना नहीं सकते तो सहज योग में आने से आपका समय बर्बाद हो रहा है। इस वक्त ऐसा कुछ समां बंध रहा है कि सबको इसमें एकदम से एकाकार हो जाना चाहिए। अपने को परिवर्तन में डालना है, परिवर्तित हमें होना ही है। हममें खराबियां हैं, हमें अपने को पवित्र बना देना है। ये आप अपने साथ कितना प्रेम कर रहे हैं। आपका बच्चा जरा

सा गन्दा हो जाता है तो आप दौड़ कर उसे साफ कर देते हैं। क्योंकि आपको उससे प्रेम हैं। उसी प्रकार जब आपको अपने से प्रेम हो जाएगा तो आप भी अपने को परिवर्तन की ओर लगाएंगे कि मेरा परिवर्तन कहां तक है। मेरे अन्दर अब भी यही खराबी रह गयी अब भी मैं ऐसा हूँ। और इस परिवर्तन के फलस्वरूप जो आर्शीवाद हैं, उस जीवन का वर्णन नहीं किया जा सकता। जो कबीर ने कहा कि अब मस्त हुए फिर क्या बोलें। तो आप सब उस मस्ती में आ जाइये उस मस्ती को प्राप्त करें और उस आनन्द में आप आनन्दित हो जाएं। ये हमारा आर्शिवाद है।

हमारे जीवन का लक्ष्य
नवरात्रि पूजा-पुणे 16.10.88

आज हम लोग यहाँ शक्ति की पूजा करने के लिए एकत्रित हुए हैं। अभी तक अनेक संत साधुओं ने ऋषि मुनियों ने शक्ति के बारे में बहुत कुछ लिखा और बताया। और जो शक्ति का वर्णन वह अपने गद्य में नहीं कर पाये उसे उन्होंने पद्य में किया। और उस पर भी इसके बहुत से अर्थ भी जाने। लेकिन एक बात शायद हम लोग नहीं जानते कि हर मनुष्य के अन्दर ये सारी शक्तियाँ सुप्तावस्था में हैं। और ये सारी शक्तियाँ मनुष्य अपने अन्दर जागृत कर सकता है। ये सुप्तावस्था की जो शक्तियाँ हैं उनका कोई अन्त नहीं, न ही उन का कोई अनुमान कोई दे सकता है क्योंकि ऐसे ही पैंतीस कोटी तो देवता आपके अन्दर विराजमान हैं। उस के अलावा न जाने कितनी शक्तियाँ उनको चला रही हैं। लेकिन इतना हम लोग समझ सकते हैं। कि जो हमनें आज आत्मसाक्षात्कार को प्राप्त किया है तो उसमें जरूर कोई न कोई शक्तियों का कार्य हुआ।उस कार्य के बगैर आप आत्मसाक्षात्कार को नहीं प्राप्त कर सकते। ये आत्मसाक्षात्कार को प्राप्त करते वक्त हम लोग सोचते हैं सहज में हो गया।

सहज के दो अर्थ हैं। एक तो सहज का अर्थ ये भी है कि आसानी से हो गया, सरलता से हो गया और दूसरा अर्थ ये होता है कि जिस तरह से एक जीवन्त क्रिया अपने आप हो जाती है उसी प्रकार आपने आत्मसाक्षात्कार को प्राप्त किया। लेकिन ये जीवन्त क्रिया जो है इसके बारे में अगर आप सोचने लग जाए तो आप की बुद्धि कुण्ठित हो जाएगी। समझ लीजिए ये आपने एक पेड़ देखा। इस पेड़ की ओर आप नजर करिए तो आप ये सोचेंगे कि भई ये फलाना पेड़ है। लेकिन इस पेड़ को इसी रूप में, ऐसा ही, इतना ही ऊंचाई पर लाने वाली कौन सी शक्तियाँ हैं? किस शक्ति ने इस को यहाँ पर इस तरह से बनाया है कि जो वो अपनी सीमा में रहकर के और अपने स्वरूप, रूप, उसी के साथ चढ़ता है। फिर सबसे जो कमाल की चीज है वो मानव, मनुष्य जो बनाया गया है वो भी एक विशेष रूप से, एक विशेष विचार, से बनाया गया है। और वो मनुष्य का जो भविष्य है वो उसे प्राप्त हो सकता है। उस को मिल सकता है पर उसकी पहली सीढ़ी है आत्मसाक्षात्कार। जैसे कि कोई दीप जलाना होतो सबसे पहले है कि उस के अन्दर ज्योती आनी पड़ती है। उसी प्रकार एक बार आपके अन्दर ज्योति जागृत हो गई तो आप उस को फिर से प्रज्जवलित कर सकते हैं या उस को आप बढ़ा सकते हैं। पर प्रथम कार्य है कि ज्योति प्रज्जवलित हो। और उस के लिए आत्मसाक्षात्कार नितांत आवश्यक है। किन्तु आत्म-साक्षात्कार पाते ही सारी ही शक्तियाँ जागृत नहीं हो सकती। इसी लिए ये साधु संतों ने और ऋषि मुनियों ने व्यवस्था की है कि आप देवी की उपासना करे। लेकिन जो आदमी आत्मसाक्षात्कार को प्राप्त नहीं है, उस को अधिकार नहीं है कि वो देवी की पूजा करे। बहुत से लोगों ने मुझे बताया कि वो सप्तशति का कभी गर पाठ करे और उनका हवन करते हैं तो उनपे बड़ी आफते आ जाती हैं और उन को बड़ी तकलीफ हो जाती है और वो बहुत कष्ट उठाते हैं। तो उनसे ये पूछना चाहिए कि आपने किस से करवाया? तो कहेंगे कि हमने सात ब्राह्मणों को बुलाया था। पर वो ब्राह्मण नहीं। जिन्होंने ब्रह्मा को जाना नहीं वो ब्राह्मण नहीं और ऐसे ब्राह्मणों से कराने से ही देवी रूष्ट हो गई और आपको तकलीफ हुई। तो आपके अन्दर एक बड़ा अधिकार है कि आप देवी की पूजा कर सकते हैं और साक्षात में भी पूजा कर सकते हैं। ये अधिकार सबको नहीं है। अगर कोई कोशिश करे तो उसका उल्टा परिणाम हो सकता है। सबसे बड़ी चीज है कि शक्ति जो है वो जितनी ही आपको आरामदेही है, जितनी वो आपके सृजन की व्यवस्था करती है, जितनी वो आपके प्रति उदार और प्रेममयी है, उतनी ही वो क्रूर और क्रोधमयी है। कोई बीच का मामला नहीं है या तो अति उदार है और या तो अति क्रोधित है। बीच में कोई मामला चलता नहीं। वजह यह है कि जो लोग महा दुष्ट हैं, राक्षस है और जो संसार को नष्ट करने पे आमादा है, जो लोगों को भुलभुलैया में लगाये हुए हैं और कलियुग में अपने को अलग-अलग बता कर के कोई साधु बना है तो कोई

पंडित बना हुआ है, कोई मन्दिरों में बैठा है तो कोई मस्जिदों में बैठा है, कोई मुल्ला बना हुआ है, कोई पोप बना हुआ है तो कहीं कोई पोलिटिशियन बना हुआ है, ऐसे अनेक-अनेक कपड़े परिधान कर के जो अपने को छिपा रहा है। जो कि राक्षसी वृत्ति का मनुष्य है उसका नाश होना आवश्यक है। लेकिन ये जो नाश की शक्तियाँ हैं इसकी तरफ आपको नहीं जाना चाहिए। आप सिर्फ इच्छा मात्र करे और ये शक्तियाँ अपने ही आप कार्य कर लेगी। तो सारे संसार में जो ये चैतन्य बह रहा है ये उसी महा माया की शक्ति है। और इस महामाया की शक्ति से ही सारे कार्य होते हैं और ये शक्ति सब चीज सोचती है, जानती है, सब को पूरी तरह से व्यवस्थित रूप से लाती है जिसे कहते हैं आयोजित कर लेती है। और सबसे बड़ी चीज है कि ये आप पर प्रेम करती है। और इस का प्रेम निर्वाज्य है। इस प्रेम में कोई भी मांग नहीं सिर्फ देने की इच्छा है। आपको पनपाने की इच्छा है, आपको बढ़ाने की इच्छा है। आपकी भलाई की इच्छा है लेकिन इसी के साथ साथ जो चीजें कांटे बन कर के आपके मार्ग में रूकावट डालेंगे, आपके धर्म में खलल डालेंगे, या किसी भी तरह से आप को तंग करेंगे ऐसे लोगों का नाश करना अत्यावश्यक है। लेकिन उस के लिए आप अपनी शक्ति न लगाएं। आप को सिर्फ चाहिए कि आप उस शक्ति के लिए सिर्फ आह्वान करे देवी का और उनसे कहिए कि ये जो अमानुष लोग हैं इनका आप नाश कर दीजिए। ये तो पहली चीज हो गई। सो आप को छुट्टी मिल गई कि आप कोई भी आप पर अगर अत्याचार करे, कोई भी आप से बुराई से बोले, कोई आप को सताये तो आप में एक और विशेष रूप से एक स्थिति है जिसमें आप निर्विचार हो जायें। तो सारी चीज को आप साक्षी रूप से देखना शुरू कर दें। एक नाटक के रूप में। जैसे अजीब पागल आदमी है मेरे पीछे पड़ा हुआ है इसको क्या करने का है। उसका पागलपन देखिए उसका मनस्ताप देखिए उसकी तकलीफें देखिए और आप उस पर हँसिए कि अजीब बेवकूफ है। उस के लिए आप को कोई तकलीफ उठाने की जरूरत नहीं। उस के लिए सिर्फ आप को आपका जो किला है वो निर्विचारिता उसमें जाना चाहिए। और निर्विचारिता में जाते ही आपकी जो कुछ भी संजोने वाली शक्तियाँ हैं, आनंद देने वाली शक्तियाँ हैं, प्रेम देने वाली शक्तियाँ हैं, वो सब की सब समेट कर के आपके अन्दर आ जाएंगी। लेकिन जब तक आप इन चीजों में उलझे रहेंगे और जब तक आप ये सोचते रहेंगे कि मैं कैसे इसका सर्वनाश कर दूं, इसको मैं किस तरह से खत्म कर दूं, इसमें मैं क्या इलाज कर लूं? और इस तरह से आप षड़यन्त्र बनाते रहेंगे तब तक, आप सच्ची मानिए कि उसका असर आप पे होगा उस पर नहीं।

रामदास स्वामी ने कहा है कि 'अल्प धारिष्ट पाये' माने आप का थोड़ा सा जो धीरज है उसको परमात्मा देखता हैलेकिन आप के अन्दर इतनी ज्यादा शक्तियाँ हैं, इतनी ज्यादा शक्तियाँ हैं कि उनको पहले आप पूरी तरह से प्रफुल्लित करना चाहिए। अपने प्रति एक तरह का बड़ा आदर रखना चाहिए उनको जानना चाहिए। अपने प्रति एक तरह का बड़ा आदर रखना चाहिए। अब ये शक्तियाँ नष्ट होती हैं सहजयोगियों में भी जागती है फिर नष्ट हो जाती हैं, जागती हैं फिर नष्ट हो जाती है। उस की क्या वजह है? एक बार जगी हुई शक्ति क्यों नष्ट होती है? जैसे कि एक मनुष्य में आज शक्ति है कि वो बड़ी भारी कला में निपुण हो गया। सहजयोग में अपने से बहुत लोग कला में निपुण हो गये, कला के बारे में जान गये, उनमें एक तरह की बड़ी चेतना आ गई, उनका सृजन बहुत बढ़ गया। लोग देख के कहते हैं कि वह एक कलाकार ऐसा है कि समझ में ही नहीं आता। पर फिर वो उसी कला में उलझ जाता है। फिर उस की शोहरत हो गई, नाम हो गया, उसी में उलझता जाता है। जब वो उलझ जाता है इस चीज में तब फिर उस की शक्तियाँ नष्ट हो जाती हैं। क्योंकि उस की शक्तियाँ भी उस में उलझ जाती हैं। जैसे कि मैंने पहले भी बताया था कि किसी पेड़ के अन्दर बहता हुआ उसका जो प्राण रस है वो हर चीज में, हर पत्ते में, हर डाली पर, हर फूल में, हर शै में घूम घाम कर के वापस लौट जाता है। उसी प्रकार जो भी आप के अन्दर शक्तियाँ आज प्रवाहित हैं और जिन शक्तियों के कारण आप आज कार्यान्वित हैं वो सारी ही चीजें, आप को जानना चाहिए, कि इस शक्ति का ही प्रादुर्भाव है और उस में आप को, उलझने की कोई जरूरत नहीं। आप उस में एक निमित्त मात्र, बीच में हैं। जब आप यह समझ जाएंगे कि हम निमित्त मात्र हैं तो यह आपकी शक्तियाँ कभी भी दुर्बल नहीं होंगी और कभी भी नष्ट नहीं होंगी। उसी प्रकार अनेक बार मैंने देखा है कि सहजयोगियों का चित् जो है वो ऐसी चीजों में उलझते जाता है। किसी चीज से भी वो बड़प्पन में आ गए किसी भी चीज से उन्होंने बहुत प्रगति पा ली। आप जानते हैं कि बहुत से विद्यार्थी जो कि कक्षा में कुछ नहीं कर पाते थे प्रथम दर्जे में आने लग गए। सब कुछ बहुत अच्छा हो गया। तो फिर वो कभी सोचने लग जाएँ वाह हम तो कितने बड़े हो गए। जैसे ही ये

सोचना शुरू हो गया वैसे ही ये शक्तियाँ आपकी खत्म हो जाएंगी और गिरती जाएंगी। अब सोचना यह है कि हमें क्या करना है? जैसा समझ लिजिए किसी आदमी का एकदम बिजनैस बढ़ गया या उस को खूब रूपया मिलने लग गया या उस के पास कोई विशेष चीज आ गई तो उसे क्या करना चाहिए? उसे हर समय सतर्क रहना चाहिए और यही कहना चाहिए कि माँ ये आप ही कर रहे हैं। हम कुछ नहीं कर रहे हैं। ये आप ही की शक्ति कार्यान्वित है। हम कुछ नहीं कर रहे हैं। बहुत जरूरी है कि आप सतर्क रहें क्योंकि उस के बाद जब आपकी शक्तियाँ खत्म हो जाएगी तो आप खुद ही कहेंगे कि माँ सब चीज डूब गई, सब खत्म हो गया। ये कैसे? जो भी शक्ति कार्य कर रही है उस को कार्यान्वित होने दें। जैसे एक पेड़ है समझ लीजिए उस पेड़ के पत्ते कैसे गिरते हैं। आपने सोचा है? उस में बीच में एक बुच के जैसी जिसे कोर्क कहते हैं, बीच में आ जाती है। पत्ते और पेड़ के बीच में एक कोर्क आ जाती है। उस के बाद फिर शक्ति आती ही नहीं। तो वो गिर जाता है पत्ता। इसी प्रकार मनुष्य का भी होता है। आज इस की शक्ति एक महान शक्ति से जुड़ी है और वहाँ से वो उसे प्राप्त कर रहा है। लेकिन जैसे ही वो अपने को कुछ समझने लग जाए या उसके अहंकार में बैठ जाए या उसकी जो अनेक तरह की गतिविधियां हैं, जिस तरह की स्पर्धा आदि में उलझता जाए तो उसके बीच में एक दरार पड़ जाएगी और उस दरार के कारण वो मनुष्य फिर उसे प्राप्त नहीं कर सकता। जो उसने प्राप्त किया हुआ है। क्योंकि वो तो एक निमित्त मात्र था। लेकिन जो शक्ति अन्दर उसके अन्दर बह रही थी वो शक्ति ही बीच में से कट गई। जैसे के अभी इसकी (माइक) शक्ति कट जाए, तो शायद मेरा लेक्चर न बंद हो, पर ऐसे हो सकता है। हमको एक बात को खूब अच्छे से जान लेना चाहिए कि हमारे अन्दर जो शक्तियाँ जागृत हुई हैं और जो कुछ भी हमारे अन्दर की विशेष स्वरूप के व्यक्तित्व को प्रकट करने वाली जो नई आभा हमें दिखाई दे रही है इस शक्ति को हमें रोकना नहीं चाहिए। इस के ऊपर हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि हम कुछ बहुत बड़े हो गए, या हमने कुछ बहुत बड़ा पा लिया। दूसरी तरफ से ऐसा भी होता है कि जब यह शक्ति आपके अन्दर जागृत हो जाती है उस वक्त आप में एक तरह का उदासीपन भी आ सकता है। इस तरह का कि अभी दूसरे साहब तो इतने पहुँच गए, हम तो वहाँ पहुँचे नहीं। उन्होंने ये कर लिया, हमने ये किया नहीं। और हर तरह से आदमी उलझते जाता है। और उस में कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो छोटी छोटी बातों पर ही अपने को दुखी मानते हैं, बहुत छोटी बातों पर, जैसे आप सब को बैग मिला मुझ को बैग नहीं मिला। गणपति पुणे में हमें बड़े अजीब अजीब अनुभव आये कि लोग आये कहने लगे कि माता जी हमको इस चीज का डिब्बा दे दो। मैंने कहा भई ये भी कोई तरीका हुआ? दूसरे ने कहा कि आपने मुझे इतना दिया लेकिन उस को नहीं दिया। ये कोई बात हुई? उस मौज में और आनन्द में ये सब सोचने की बात ही नहीं है। छोटी छोटी बात में वो दुखी हो जाते हैं। फिर ऐसी जिस को बहुत बड़ी बात समझते हैं कि किसी की समझ लीजिए पति ने विद्रोह कर दिया या किसी पति का रास्ता ठीक नहीं रहा तो उसकी पत्नी रोते बैठेगी। या किसी की पत्नी ठीक नहीं तो पति रोते बैठेगा। अरे भई आपकी कितनी बार शादियाँ हो चुकी पहले जन्म में। और अब इस जन्म में एक शादी हुई चलो इस को किसी तरह से खत्म करो। उसी के पीछे में आप लोग रात दिन परेशान रहो कि मुझ को ये दुख आ गया, मेरे बच्चे का ऐसा हो गया, मेरी बच्ची का ऐसा हो गया। उस का ऐसा हो गया, उस का ऐसा हो गया। इस का कोई अन्त है? इस को कोई पार कर सकता है? क्योंकि इतनी छोटी सी चीज है कि वो तो पकड़ में ही नहीं आती। इतनी क्षुद्र बात है कि वो मेरी पकड़ ही में नहीं आती। कोई भी आयेगा तो ऐसी छोटी छोटी बातें मुझे बताते हैं, मुझे बड़ी हंसी आती है। पर मैं चुपचाप सुनती रहती हूँ। देखिए मैं कहती हूँ कि आप सहजयोगी हैं? **सागर के जैसे तो आपका हृदय मैंने बना दिया और हिमालय के जैसा आपका मैंने मस्तिष्क बना दिया और आप ये क्या छुटर-पुटर बातें कर रहे हो कि जिसका कोई मतलब ही नहीं रहता।** इसकी बात, उसकी बात, दुनिया भर की फालतू की बातें करना और जो सहज की बात है वो बहुत कम होती है। उस में मौन लगता है। क्यों सहज में तो कुछ हमने ध्यान ही नहीं दिया। सहज में तो मौन हो जाता है।

अभी मैंने सुना कि पूना में लोग जरा कम आने लग गए हैं, ध्यान में, क्योंकि महाभारत शुरू हो गया है। वैसे मैंने तो अभी तक देखा ही नहीं है महाभारत। जो एक देखा है वो ही काफी है। अब देखने की क्या जरूरत है? अब अपने को दूसरा महाभारत करने का है? और वो महाभारत देख के बैठे हुए हैं। अब ऐसा हो आपको महाभारत देखने का शौक है तो उसकी वीडियो फिल्म मंगा लेना देख लेना लेकिन पूजा छोड़ कर के और आपका सेन्टर छोड़ कर के आप महाभारत देखते हैं तो आपकी वो शक्ति कहां दिखेगी? वो

महाभारत में चली गई। महाभारत हुए तो हजारों वर्ष हो गए उसी के साथ वो भी खत्म हो गई। तो ये जो मनोरंजन पर भी लोगों का बड़ा ध्यान रहता है। किसी चीज से हमारा मनोरंजन हो। ऐसा ही हर एक चीज में मनुष्य उलझते जाता है। तो कोई भी चीज में अति में जाना ही सहज के विरोध में पड़ती है। जैसे अब संगीत का शौक है तो संगीत ही संगीत है। फिर ध्यान भी नहीं करने का। बस संगीत में पड़े हैं। मनोरंजन है। फिर कविता में पड़ गए तो कविता में ही उलझ गए। **कोई भी चीज में अतिशयता में जाना ही सहज के विरोध में जाता है।** ये इस बात को आप गाँठ बांध कर रख लें। और दूसरी चीज जो हमारी शक्तियाँ उन को सम्यक होना चाहिए तभी हमें सम्यक् ज्ञान मिलेगा, माने संघटित ज्ञान। गर एक ही चीज के पीछे में आप पड़े रहे और एक ही चीज को आप देखते रहे तो आपको सम्यक ज्ञान नहीं हो सकता है। आपको एक चीज का ज्ञान होगा। अब जैसे मैंने देखा है कि बहुत सी स्त्रियां होती हैं, बड़ी पढ़ी लिखी होती हैं पर कभी अखबार नहीं पढ़ती उनको दुनिया में पता ही नहीं क्या हो रहा है। रहे आदमी लोग तो उनका ऐसा है कि उनको सिर्फ ये मालूम है कि कौन सा खाना अच्छा बनता है किस के घर में अच्छा खाना बनता है। किसके घर जाना चाहिए अच्छा खाने के लिए। एक खाने के मामले में तो हिन्दुस्तानी बहुत ही ज्यादा उलझे हुए लोग हैं। बहुत ज्यादा। और औरतें भी ऐसी हैं कि बेवकूफ बनाने के लिए अच्छे अच्छे खाने खिलाकर के उनको ठिकाने लगाती हैं। इसमें दोनों की शक्तियाँ उलझ जाती हैं, दोनों की। रात-दिन ये खाने के बारे में, मुझे आज ये खाने को चाहिए, मुझे आज ये खाने को चाहिए, मैं ये टाइम को खाऊंगा, मैं वो टाइम से खाऊंगा। ये करूंगा। उधर औरतें आदमियों को खुश करने के लिए वोही धन्धे करती रहती हैं। उसमें औरतों की शक्ति भी नष्ट होती है। और आदमियों की भी शक्ति नष्ट होती है। इसलिए, मैंने यह तरीका निकाला है कि सहजयोगियों को सबको खुद खाना बनाना आना चाहिए। अगर किसी ने कहा मुझे ये खाने को चाहिए तो आप ही बनाये। हालांकि उस के बाद सबको भूखा ही रहना पड़ेगा। पर कोई हर्ज नहीं। आप को कहना चाहिए अच्छा आपको ये चीज खानी है तो आप ही इसको बना दीजिए। तो बड़ा अच्छा रहेगा। जब आप बनाना शुरू करेंगे तब आप समझेंगे कि ये चीज क्या है। क्योंकि किसी भी चीज को टीका टिप्पणी करनी तो बहुत आसान चीज है। किसी चीज को अच्छा कहना, बुरा कहना बहुत ही आसान चीज है। लेकिन वो खुद जब आप करने लगते हैं तो पता चलता है कि ये टीका-टिप्पणी हम जो कर रहे हैं ये बिल्कुल बेवकूफी है। क्योंकि हमें कोई अधिकार ही नहीं। तो इस कदर की छोटी छोटी चीजों में भी लोग मुझे आ कर बताते हैं। मुझे बड़ा आश्चर्य होता है। आप अब साधु हो गए हैं। आप के अन्दर सबसे बड़ी जो शक्ति आई है वो ये, आप कोशिश करके देखिए, और मैं बात कहती हूँ उसकी प्रचीति आएगी। कोशिश कर के देखिए आप जमीन पे सो सकते हैं आप रास्ते पर सो सकते हैं। आप दस दस दिन भी भूखे रह जाए आप को भूख नहीं लगेगी। आप कैसा भी खाना है, उसे खा लेंगे आप कुछ नहीं कहेंगे। इस में आप हमारे परदेस के सहजयोगियों को देखिए, किस हालत में रहते हैं, किस परेशानी में रहते हैं। हाँलाकि वहाँ पर हिन्दुस्तानी सहजयोगियों ने बताया कि ब्रह्मपुरी में इन्तजाम सब ठीक नहीं रहा। लोगों का दिमाग ही खराब हो गया था। क्योंकि आप नहीं गए। तो बहुत तकलीफ हुई उनको खाने पीने की और कुछ अच्छा नहीं लगा। ऐसा बताया। तो मैंने उन लोगों से जा कर पूछा कि भई सबसे ज्यादा तुम को कहां मजा आया तो उन्होंने कहा ब्रह्मपुरी में सबसे ज्यादा आया तो मेरी कुछ समझ म नहीं आया कि इतना शिकायतें हुई, क्यों ब्रह्मपुरी में क्या बात? तो कहने लगे कि वहाँ कृष्णा बहती है उसके किनारे में बैठो तो लगता है कि माँ जैसे आप की धारा बह रही हो। वो सब यही बातें करते रहे। यहाँ ये लोग खाने पीने की सोचते हैं। इसी लिए जब कभी कभी लोग कहते हैं कि हम लोगों का समर्पण कम है तो उस की वजह यह है कि हम लोग काफी उलझे हुए लोग हैं। हमारे अन्दर बहुत पुरानी परंपरा है। यहाँ अनेक साधु संत हो गए, बड़े बड़े लोग हो गए, बड़े बड़े आदर्श हो गए और उन आदर्शों की वजह से हमें मालूम है कि अच्छाई क्या है। लेकिन उस के साथ ही साथ हमारे अन्दर एक तरह की ढोंगी वृत्ति आ गई। हम ढोंग भी कर सकते हैं। कोई भी आदमी अपने को राम कह सकता है। कोई भी आदमी अपने को भगवान कह सकता है, कोई भी आदमी अपने को सीता जी कह सकता है। ये ढोंगीपनें की हमारे यहाँ बड़ी भारी शक्ति है। एक साहब ने मुझे कहा कि देखिए वो तो भगवान हैं। मैंने कहा कैसे? वो कहते हैं वो भगवान है। मैंने कहा उस को कहने में क्यों लगता है? ऐसे कैसे कहेगा कोई कि मैं भगवान हूँ? मैंने कहा कह रहे हैं वो भगवान है लेकिन उस के कुछ तरीके होते हैं। जो आदमी फूल को नहीं सूंघ सकता वो भगवान कैसे हो सकता है? हाँ ये तो बात है पर वो ऐसा क्यों कह रहे थे? वो

ऐसा क्यों कह रहे हैं? मैंने कहा क्योंकि वो आप नहीं। वो ये ही नहीं समझ सकते कि लोग इतना सफेद झूठ इतने जोर से कह सकते हैं या किसी के लिए कहते हैं।पर वो उस को रूपया ही चाहिए न, ठीक है वो रूपया लेता है लेकिन हम को तो वो आध्यात्मिकता देगा। तो क्या हर्ज है। हमें तो अध्यात्म लेना है, लेने दो रुपया, रुपये में क्या रखा है? रुपया दे दो उस को। रुपयों में क्या रखा हुआ है। अध्यात्म के पाने की बात है। अध्यात्म अगर वो हम को दे रहा है तो हम उस को रुपया दे रहे हैं रुपये में तो कोई खास चीज होती नहीं। ये जो उन की तैयारी आज हो गई है। वो हमारे अन्दर तैयारी अभी तक हो नहीं पाई। इस के लिए क्योंकि हमारे सामने आदर्श बहुत अच्छे हैं। महाभारत है, राम हैं, ये है, वो हैं। और हम उसी कीचड़ में बैठे हुए हैं।अगर कोई कीड़ा कहे कि मैं कमल हो गया तो हो नहीं सकता और अगर उस को कमल बना भी दिया तो भी ढंग वही चलेगा। इस लिए समझ लेना चाहिए कि हमारे अन्दर ये जो इतनी ऊंची ऊंची बातें हो गई और जिस से हम सारी तरफ से पूरी तरह से हम ढके हुए हैं और जिस के कारण हम लोग बहुत ऊंचे भी हैं, समझे कि हमें वो ही होना है जो हम देख रहे हैं, इस मामले में हमारे अन्दर आन्तरिक इच्छा हो, ऊपरी नहीं। अन्दर से लगना चाहिए। क्या हमने इसे प्राप्त किया? क्या हमने अपने ध्येय को प्राप्त किया? क्या हमने इसे पाया है? उसे हमें पाना है **इस मामले में ईमानदारी अपने साथ रखनी है। और जब तक ईमानदारी नहीं होगी तब तक शक्ति आपके साथ ईमानदारी नहीं कर सकती।** ये आप का और अपना निजी सम्बन्ध है। अनेक तरह से आप अपने को पड़तालिये और देखिए हमारे अन्दर ये शक्तियाँ क्यों नहीं जागृत हो रहीं। क्यों नहीं हम इसे पा सकते। कारण हम अपने को, खुद ही अपने को एक तरह से काटे चले जा रहे हैं।

तो किसी भी तरह की ढोंगी वृत्ति का सहजयोग में स्थान ही नहीं है। हृदय से आपको महसूस होना चाहिए। हर एक चीज को हृदय से पाना चाहिए। अपने अंतर आत्मा से उसे को जानना चाहिए। उस के लिए कोई भी ऊपरी चीज आवश्यक नहीं। कोई हैं कि मुस्करा कर बैठे रहेंगे, कोई जरूरत है मुस्कुराने की? कोई है कि बड़े गम्भीर हो के बैठे रहेंगे, ये सब नाटक करने की कोई जरूरत नहीं। जो आप के अन्दर भाव है वो बाहर आ रहा है उस में कौन सा नाटक करने की जरूरत है? उस में कौन सी आफत करने की है? जो हमारे अन्दर भाव है वही हम प्रकटित कर रहे हैं। क्योंकि हमारे अन्दर जो भाव हैं वो इस शक्ति से बहता हुआ बाहर चला आ रहा है और उस को हम प्रकटित कर रहे हैं और जो लोग इस तरह से एक बात समझ लें कि हमें पूरी तरह से ईमानदारी से सहजयोग करना है तो धीरे-धीरे इसमें खिसकते जाएंगे।

जिस तरह से वहाँ पर मैं लोगों में देखती हूँ आत्म समर्पण है उनमें। मैं यह जरूर कहूँगी कि उस आत्मसमर्पण के पीछे में एक बड़ी भारी कमाल है। और वो कमाल ये है कि वो सोचते हैं कि हमारा कल्याण सिर्फ आत्मिक ही होना चाहिए। हमारा आत्मिक कल्याण होना चाहिए। और कोई भी बात वो नहीं सोचते। सहजयोग के लाभ अनेक हैं। आप जानते हैं इस से तन्दरूस्ती अच्छी हो जाएगी, आप को पैसे अच्छे मिल जाएंगे, आप की नौकरी अच्छी हो जाएगी, आप का दिमाग ठीक हो जाएगा, और दुनिया भर की चीजें जिन्हें कि आप संसारी कहते हैं, हो जाएंगी। और उसपे भी आप का नाम हो जाएगा, शोहरत हो जाएगी। जिनको कोई भी नहीं जानता है उनका भी नाम हो जाएगा। उन्हें लोग जानेंगे, सब कुछ होगा। लेकिन हमें क्या चाहिए? हमें तो अपनी आत्मिक उन्नति के सिवाए और कुछ नहीं चाहिए। हम सिर्फ आत्मिक उन्नति पा लें। जब वो आत्मिक उन्नति मनुष्य में हो जाती है तब मनुष्य सोचता ही नहीं इन सब चीजों को उस के लिए सब व्यर्थ पदार्थ है। सारी लक्ष्मी उसके पैर धोए, उस के लिए वो व्यर्थ पदार्थ है। कोई भी उसके लिए चीज ऐसी नहीं है कि जिसके लिए वो लालायित हो या परेशान हो। इस कदर वो समर्थ हो जाता है। अगर है तो है नहीं है तो नहीं है। मिले तो मिले नहीं है तो नहीं। ये जब अपने अन्दर ये स्थिति आ जाए, मनुष्य इस स्थिति पे आ जाए, तब सोचना चाहिए कि सहजयोगियों ने अपने जीवन में कुछ प्राप्त किया। जब तक ये स्थिति प्राप्त नहीं होती तो आपकी नाव डांवाडोल चलती रहेगी। और आप हमेशा ही कभी इधर तो कभी उधर घूमते रहेंगे।

पहली अपने को स्थापित करने की जो महान शक्ति आपके अन्दर है वो है श्रद्धा। उस श्रद्धा को हृदय से जानना चाहिए और उसकी मस्ती में रहना चाहिए उस के मजे में आना चाहिए, उसके आनंद में आना चाहिए तो जो ये श्रद्धा की आह्लाद दायिनी शक्ति है उस आह्लाद को लेते रहना चाहिए,उस खुमारी में रहना चाहिए। उस सुख में रहना चाहिए। और जब तक मनुष्य उस आह्लाद में पूरी तरह से घुल नहीं जाएगा उसके सारे जो कुछ भी प्रश्न हैं समस्याएं हैं वो बने ही रहेंगे, बने ही रहेंगे। क्योंकि समस्याएं वगैरा

सब माया है। ये सब चक्कर है। अगर किसी से पूछो कि भई तुम्हें क्या समस्या है? तो मुझे सौ रुपया मिलना चाहिए, मुझे पचास रुपये मिलते हैं। जब सौ रुपय मिले तो फिर क्या समस्या है? मुझे दो सौ रुपये मिलने चाहिए तो मुझे सौ ही रुपये मिले। वो तो खत्म ही नहीं हो रहा। फिर दूसरी क्या समस्या है कि मेरी बीबी ऐसी है। फिर तुम दूसरी बीबी कर लो, वो भी ऐसी है, तीसरी आई वो भी ऐसी है तो आपकी समस्या नहीं खत्म हो रही क्योंकि आप स्वय इनको खत्म नहीं कर रहे। ये यब को खत्म करने का तरीका यही है कि अपनी श्रद्धा से आप अपने आत्मा में जो आनंद है उस का रस लें और उसी रस के आनन्द में रहे आखिर सारी चीज है ही हमारे आनन्द के लिए, लेकिन जब तक हम उस रस को लेने की शक्ति ही को नहीं प्राप्त करते हैं तो क्या फायदा होगा? ये तो ऐसा ही हुआ कि एक मक्खी जा कर के बैठ गई फूल पर और कहेगी कि साहब मुझे तो कुछ मधु नहीं मिला। उस के लिए तो मधुकर होना चाहिए। जब तक आप मधुकर नहीं होंगे तो आपको मधु कैसे मिलेगा? गर आप मक्खी ही बने रहे तो आप इधर उधर ही भिनकते रहेंगे। लेकिन जब आप स्वयं मधुकर बन जाएंगे तो आप कायदे की जगह जा करके जो आप को रस लेना है रस ले कर के मजे में पेट भर कर के और आराम से आनद से रहेंगे। यही सबसे बड़ी चीज सहजयोग में सीखने की है। कि हमारा चित् पूरी तरह से एक चीज में डूबा रहना चाहिए। और वो है आत्मिक हमारी उन्नति होनी चाहिए। पर उस का मतलब यह नहीं कि पूरा समय अपने को बन्धन देते रहो या पूरा समय आँखें बंद कर के और जिसे मराठी में कहते हैं शिरडी बाँधू उस की कोई जरूरत नहीं। सर्वसाधारण तरीके से रोजमर्रा के जीवन को कुछ भी न बदलते हुए जैसे आप हैं वैसे ही उसी दशा में आप को चाहिए कि आप अपने अन्दर जो हृदय में आत्मा है उस के रस को प्राप्त करें। जब उस का रस झरना शुरू हो जाता है तो आप ही में कबीर बैठे हैं और आप ही में नानक बैठे हैं, और आप ही में सारे बड़े-बड़े संत साधु हो गए तुकाराम, नामदेव, एकनाथ, सब आप ही लोगों में बैठे हैं। और उनको विचारों को, कोई बताने वाला भी नहीं था, उनके संरक्षण के लिए कोई नहीं था। ये सब आप को प्राप्त है आप तो अच्छी छत्रछाया में बैठे हुए हैं। तो भी आप उस छत्रछाया में बैठ कर के एक अपनी भी छतरी खोल लेते हैं और उसके बारे में फिर चर्चा करते हैं। तो इस से तो आपकी शक्तियां कम हो ही जाएंगी। इस बार हमें गौर करना चाहिए कि हमारी कितनी शक्तियाँ हैं और हमारे अन्दर कितनी शक्तियाँ हमने देखी और वो कैसे कार्यान्वित हो रही हैं।

आप जो चाहे सो करें। जो आप इच्छा करेंगे वो आप को मिलेगा लेकिन आप की इच्छा ही बदल जाएगी। आप के तौर तरीके ही बदल जाएंगे जैसे आज अब कोई महाभारत नहीं देखने को रूकेगा। क्या सोचेगा? अरे बाप रे, आज माँ का इतना अच्छा समय बंधा हुआ है, माँ स्वयं आ रही है, पूजा का मौका है, सारी दुनिया से लोग दौड़े आएंगे। अब बाहर अमेरिका से, अभी मैं जा रही हूँ उन्होंने कहा एक दिवाली पूजा जरूर करना। उस के लिए मेरे ख्याल से सारे ब्रह्माण्ड से लोग वहाँ पहुँच जाएंगे। लेकिन यहाँ कलकत्ते से भी लोगों को आने में मुश्किल हो जाती है। कलकत्ते से भी। और साक्षात् हम बैठे हुए हैं। ऐसे ऐसे लोग हैं कि जो बिल्कुल आसानी से आ सकते हैं। अपने काम के लिए दस मर्तबा दौड़ेंगे। लेकिन इस को नहीं समझते कि कितनी महत्वपूर्ण चीज है? उस का महत्व नहीं समझ पाते क्योंकि श्रद्धा कम है। वो कहते हैं जब हम रिटायर हो जाएंगे तब आएंगे। सुविधा के साथ। रविवार के दिन करिए पर एक दिन उससे पहले छुट्टी होनी चाहिए नहीं तो बाद में छुट्टी होनी चाहिए। अब ऐसे रोनी सूरत लोगों के लिए क्या सहजयोग है? ये घोड़े कहाँ तक जाएंगे? ये तो खच्चर भी नहीं। जो लोग इस तरह की बातें सोचते हैं वो सहजयोग में कहाँ तक पहुँचेंगे ये मेरी समझ में नहीं आता। सब सुविधा होनी चाहिए, शनिवार, इतवार होना चाहिए और उस में से भी हम जैसे ही प्रोग्राम खत्म होगा भाग जाएंगे क्योंकि हम को कल दफ्तर में जाना है। तुम जाओगे कल भी सब ठीक हो जाएगा। लेकिन गर आप ऐसी जल्दबाजी करोगे तो खंडाला के घाट में आप को रोक लेंगे हम। लेकिन ये सब चूहल, ये सब शैतानियाँ हम कितनी भी करें लेकिन आप के अक्ल में जब तक ये चीज घुसेगी नहीं क्या फायदा?

तो चाह रहे हैं कि किसी तरह से आपको रास्ते पर ले आएं। अब रास्ते पे लाने पर गर बार बार आप लोग फिसल पड़े तो कितनी हमें मेहनत करनी पड़ेगी। और आप की जो शक्तियाँ जागृत हो सकती हैं, जो अपने आप पनप सकती हैं, बढ़ सकती हैं वो सारी शक्तियाँ कहाँ से कहाँ नष्ट हो जाएँगी? तो अपने को पहले आप को संवारना है। अपनी शक्तियों के गौरव में उतरना है और ये जानना है कि हमारे अन्दर कितनी शक्तियाँ हैं और हम कितनी शक्तियों को प्राप्त कर सकते

हैं? हम कितने ऊंचे उठ सकते हैं। हम कया-क्या लाभ दूसरों को दे सकते हैं। इतना भंडारा हमारे अन्दर पड़ा हुआ है। सारा कुछ खुल गया चाबी मिल गई अब खुल जाने पर सिर्फ उसमें से निकाल के लोगों को बांटना है और उस का मजा उठाना है। आज ये जो शक्ति की पूजा हो रही है वो असल में, मैं चाहती हूँ कि आप जानिए कि आप की ही शक्ति की पूजा होनी चाहिए। जिस से आप एक बड़े ईमानदार और एक सच्चे तरीके से श्रद्धामय हो जाए। साधु संतों को कुछ कहना नहीं पड़ता था। वो मार खाएंगे, पीटे जाएंगे, उन को जहर देंगे, चाहे कुछ करिए उन की लगन नहीं छुटती। अब आप लोगों को तो कनेक्शन लगा दिया लेकिन वो इतना ढीला कनेक्शन है कि बार-बार, लगाना पड़ता है। फिर से किसी बात से छूट जाता है। फिर से किसी बात से लगाना पड़ता है सो अब सोचना यह है आप को के अपने अन्दर की सारी ही शक्तियाँ हमें जागृत करनी है तो फिर कोई कमी नहीं रह जाएगी। कोई आप के सामने प्रश्न ही नहीं रह जाऐंगे। इन शक्तियों का जागृत करना बहुत आसान है। एक ही बात है कि आप की लगन होनी चाहिए। जिसको लगन हो जाएगी, जो पूरी तरह से लगन से सहज योग में उतरेगा और जिसका हमेशा जी सहजयोग में ही खिचा रहेगा, उधर ही ध्यान रहेगा उसका तो क्षेम हो ही जाएगा। पर पहले योग घटित होना चाहिए और आधा अधूरा योग किसी काम का नहीं। न इधर के रहे न उधर के रहे। ऐसी हालत हो जाएगी। एक छोटे से बीज में हजारों वृक्ष निर्माण करने की शक्ति है। तो आप तो ऐसे हजारों वृक्षों के मालिक मनुष्य हैं। और उन में से हजारों लोगों को शक्तिशाली बनाने की शक्ति आप के अन्दर है लेकिन गर इस बीज का अंकुर निकालने के बाद गर आप रास्ते पे फेंक दीजिए और इसकी परवाह न करें, और इसका गर पेड़ नहीं हुआ तो इसकी शक्ति कुंठित हो जाएगी। तो अपने लिए पूरी तरह से आप इसका अंदाज करे कि हम क्या हैं और हम क्या कर रहे हैं? और कहाँ तक हम पहुँच सकते हैं? इससे आपस के झगड़े छोटी छोटी क्षुद्र बातें ऐसी चीजे जो कि रास्ते पर के भी लोग न करे, असभ्यता ये तो अपने आप से ही ढह जाएगी। वो तो बचने ही नहीं वाली। लेकिन आप का जो स्वयं सुन्दर स्वरूप है वो निखर आएगा। और लोग कहेंगे कि ये एक शक्तिशाली मनुष्य खड़ा हुआ है। एक विशेष स्वरूप का आदमी खड़ा हुआ है। एक महान कोई व्यक्ति है। ऐसा अनूठा उसका सारा व्यवहार है। वो किसी से डरता नहीं, निर्भय है। जहाँ कहना है कहता है, जहाँ नहीं कहना नहीं कहता। ये आ जाए बाबा भी आ जाए फिर बाबा के नाना भी आ जाए सो नहीं हो सकता। जो आप हैं उस लायक वो लोग नहीं। वो नालायक हैं। जो नालायक हैं उन को छोड़ देना चाहिए। उसे क्यों झगड़ा करना? नालायक लोगों से झगड़ा करने की कोई जरूरत नहीं। नसीब आप के फूटे जो नालायक से शादी कर ली। ऐसा सोचना चाहिए। और नसीब आप के फूटे जो नालायक आप के माँ बाप हैं। जो नालायक हैं उनको काहे को जबरदस्ती सहजयोग में लाना और मेरी खोपड़ी पर लादना। कि माँ इसको ठीक करो। क्योंकि वो मेरी बीबी है, क्योंकि वो मेरा बाप है, क्योंकि मेरा बाबा मेरा दादा। मेरा उनसे कोई रिश्ता नहीं बनता। गर वो सहजयोग में नहीं हैं। तो उनको आप नालायकों को बाहर ही रखिए। जो लायक लोग हैं उन से रोज दोस्ती करिए उन के मजे में रहिए। आप को जरूरत क्या है। पर यही बात हम लोग नहीं समझ पाते कि दुनियादारी ये रिश्ते ऐसे चलते रहते हैं। इसमें कुछ रखा नहीं, हाँ गर आपकी जिनके साथ में संगति है वो आप के साथ उठ सकते हैं, आप के साथ चल सकते हैं, आप के साथ बन सके तो ठीक है। और नहीं तो ऐसे नालायक लोगों को कोई जरूरत नहीं सहजयोग में लाने की। मैं देखती हूँ कि बहुत ही नालायक लोग सहजयोग में कभी कभी इस रिश्ते से आ जाते हैं और मेरा बड़ा सिर दर्द हो जाता है। आप की लियाकत थी इस लिए आप आए और आप सहजयोग को प्राप्त हुए। आप को आर्शीवाद मिला। आप ने बहुत कुछ पा लिया और आगे आप पा सकते हैं। और जो भिखारी भी हैं और उस की झोली में छेद भी है उन को और देने से कया फायदा? लो करेला नीम चढ़ा। ऐसे लोगों से रिश्ता रखने की आप को कोई जरूरत नहीं है। उन से कोई बात करने की जरूरत नहीं। मतलब रखने की जरूरत नहीं है। उनको बकने दीजिए। गर उनका दिमाग ठीक हुआ तो वो आयेंगे और सहजयोग में उतरेंगे। और नहीं हुए तो आप अपना दिमाग क्यों खराब करते हैं? उस से कोई फायदा नहीं है। ऐसे लोगों के पत्थर के जैसे सर होते हैं। उस से कोई फायदा नहीं होता, वो देख ही नहीं सकते।

तो आज से हम लोगों को सोचना है कि हम एक व्यक्ति हैं, स्वयं। और इसे हमने प्राप्त किया है अपने अपने पूर्वजन्म के कर्मों से। क्योंकि हमने बहुत पुण्य किये थे। इस लिए हम आज इस स्थान पर बैठे हुए हैं, और इससे भी ऊँचे स्थान पर हम बैठा सकते हैं और जा सकते हैं। तो अपने पीछे में बड़े बड़े इस तरह के पत्थर लगा कर के आप समुद्र में मत कूदिए। आप को गर तैरना आता है तो मुक्त हो कर के तैरिए। उसका आनंद उठाईए। और अपनी सारी शक्तियों से आप प्लावित

होईए। आज मेरा अनन्त आशीर्वाद है कि आप के अन्दर की सुप्त सारी ही शक्तियाँ जागृत हों और धीरे धीरे आप इस को महसूस करें। और उस की जो अन्दर से प्रवाह की विशेष धाराऐं बहें उस के अन्दर आप आनन्द लूटें। यही मेरा आप को सब को अनन्त आशीर्वाद है।